बी०टी०सी० प्रथम सेमेस्टर

सामान्य विषय –edu 02

शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त

राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

बी0टी0सी0 प्रथम सेमेस्टर

मुख्य संरक्षक : **सचिव श्री नीतीश्वर कुमार** बेसिक शिक्षा परिषद, उ0प्र0, लखनऊ

संरक्षक : **राज्य परियोजना निदेशक,** उ0प्र0, सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद, लखनऊ

निर्देशन : **श्री सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0

समन्वयन : **श्री राम नारायण विश्वकर्मा प्राचार्य,** राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद

परामर्श : : **श्री अजय कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक** (एस0एस0ए0) राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0, लखनऊ

श्रीमती ललिता प्रदीप, प्राचार्य, डायट, लखनऊ

श्रीमती दीपा तिवारी, वरिष्ठ प्रवक्ता, डायट, लखनऊ

श्री रमेश तिवारी, सहायक उप निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद

लेखक : श्रीमती सुषमा यादव, श्रीमती नीलम मिश्रा, श्रीमती मंजुलेश विश्वकर्मा शोध प्राध्यापक, डॉ0 संध्या सिंह, श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह, श्रीमती परमजीत गौतम, श्रीमती अस्मत नीलो अन्सारी, श्रीमती रत्ना यादव, श्रीमती रश्मि चौरसिया, डॉ0 श्रीमती चन्दना मुखर्जी, श्रीमती मीरा अस्थाना, श्री संजय यादव, श्री नितिन अरोरा, प्रिया अरोरा, मनोज गोयल, श्रीमती अर्चना मिश्रा, श्री पंकज त्रिपाठी, श्रीमती श्वेता श्रीवास्तव

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : मनोज कुमार गोयल, राजेश कुमार यादव

Downloaded From www.dietmathura.org

कक्षा शिक्षण : विषयवस्तु

1. शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य
2. सम्प्रेषण
3. शिक्षण के सिद्धान्त
4. शिक्षण के सूत्र
5. शिक्षण प्रविधियाँ
6. शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम)
7. सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल
8. अपेक्षित अधिगम स्तर
9. शिक्षण अधिगम सामग्री, प्रकार, विशेषताएं, निर्माण, प्रयोग तथा रखरखाव में सावधानियाँ

❖ प्रोजेक्ट/सत्रीय कार्य

❖ सन्दर्भ सूची

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य (Meaning and Aims of Teaching)

शिक्षा व शिक्षण विश्व में पवित्रतम, परमावश्यक, परहिताय व सर्वश्रेष्ठ कार्य है।

प्रमुख शिक्षण बिन्दु

- शिक्षण का अर्थ
- शिक्षण का व्यापक व संकुचित अर्थ
- शिक्षण की परिभाषाएं
- उत्तम शिक्षण की विशेषताएं
- शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य
- शिक्षण में प्रयुक्त प्रमुख क्रियाकलाप

यह हम सभी जानते हैं कि शिक्षा राष्ट्रीय विकास की आधारशिला है। शिक्षा के माध्यम से ही हम अपने देश के भावी कर्णधारों को उनकी महत्वपूर्ण भूमिका से परिचित कराते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावी रूप से संचालित करने वाले केन्द्र के रूप में विद्यालय की भूमिका अति महत्वपूर्ण है।

शिक्षण का अर्थ (Meaning of Teaching)

विद्यालयों में सीखने–सिखाने व पढ़ने–पढाने की प्रक्रिया सामान्यतः शिक्षक द्वारा ही सम्पन्न की जाती है और इसे ही शिक्षण कहा जाता है। शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक सामाजिक परिवेश में पारस्परिक सहभागिता से अपने छात्रों तक अपने ज्ञान, कौशल, व्यवहार व दक्षताओं को पहुंचाने का कार्य करता है।

चर्चा के बिन्दु

- शिक्षा व शिक्षण का क्या अभिप्राय है?
- शिक्षा प्रक्रिया के कितने केन्द्र हैं ?
- इन केन्द्रों में आपसी सामंजस्य कैसे होता है ?

चर्चा से प्राप्त बिन्दुओं के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षा एक त्रिध्रुवीय, गत्यात्मक, अन्तः क्रियात्मक (दो या अधिक लोगों के मध्य) व सोद्देश्य प्रक्रिया है जिसके तीन प्रमुख ध्रुव हैं–

- शिक्षक
- शिक्षार्थी
- पाठ्यक्रम / पाठ्यवस्तु

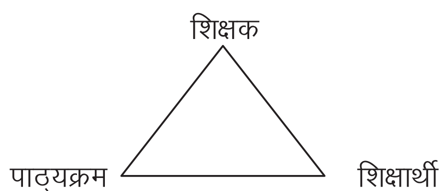

Downloaded From www.dietmathura.org

उपरोक्त तीनों ध्रुवों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया ही शिक्षण है। तीनों पक्षों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने का कार्य शिक्षक अपने शिक्षण के माध्यम से करता है। शिक्षण में इन तीनों पक्षों का होना आवश्यक है।

शिक्षण का सामान्य अर्थ है– ज्ञान प्रदान करना या तथ्यों का बोध कराना। विद्यालय में छात्र अकेले ही ज्ञान प्राप्त नहीं करता है, बल्कि शिक्षक अपने ज्ञान को छात्रों तक पहुंचाने के लिए कक्षा में विभिन्न क्रियाकलापों/ शिक्षण अधिगम सामग्रियों/शिक्षण विधाओं जैसे– खेल, वार्तालाप, प्रश्न, वर्णन, कहानी, कविता, टी0एल0एम0 पाठ्यपुस्तकों का सहारा लेता है। वह अपने शिक्षण द्वारा ही छात्रों को विषय वस्तु सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

प्रशिक्षु–
*विचार करें और बताएं– शिक्षण और अधिगम में क्या सम्बन्**ध है ?***

शिक्षण और अधिगम एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। शिक्षण तब तक अधूरा है जब तक सीखने वाले में अपने प्राप्त ज्ञान को जीवन में प्रयोग करने की क्षमता न उत्पन्न हो। शिक्षण शब्द का प्रयोग प्राचीनकाल से होता रहा है और इसकी सफलता सीखने वाले द्वारा प्राप्त/अर्जित ज्ञान पर निर्भर है। शिक्षण उस समय ही होता है जब कुछ सीखा जाता है।

शिक्षण का व्यापक व संकुचित अर्थ–

शिक्षण का सर्वमान्य अर्थ बताना अत्यन्त कठिन है। शिक्षा की भाँति शिक्षण के भी दो अर्थ हैं– व्यापक अर्थ व संकुचित अर्थ।

शिक्षण का व्यापक अर्थ (Wider Meaning of Teaching)

व्यापक अर्थ में 'शिक्षण' मनुष्य के जीवन में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत सभी व्यक्ति, वस्तुएं, वातावरण, साधन, माध्यम व घटनाएं व्यक्ति को जन्म से मृत्यु तक कुछ न कुछ सिखाती हैं। परिवार, विद्यालय, समाज, वातावरण, उद्योग, सिनेमा, राजनीति, कला व साहित्य प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य को कुछ न कुछ शिक्षण प्रदान करते हैं। इस प्रकार के शिक्षण में औपचारिक व अनौपचारिक दोनों प्रकार के साधनों से व्यक्ति जीवन भर सीखता रहता है।

शिक्षण का संकुचित अर्थ– (Narrower Meaning of Teaching)

संकुचित अर्थ में बालकों को ज्ञान, सूचना, जानकारी व परामर्श देना ही शिक्षण है। यह शिक्षण पूर्व नियोजित व नियन्त्रित होता है तथा बालक को कुछ निश्चित वर्षों तक ही दिया जाता है और इसमें केवल औपचारिक साधनों का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ– विद्यालय व कक्षा–कक्ष में शिक्षार्थियों को प्रदान किया जाने वाला शिक्षण।

निश्चित उद्देश्यों को लेकर निश्चित समय में, निश्चित स्थान पर, निश्चित व अनुभवी व्यक्तियों द्वारा दी जाने वाली प्रक्रिया ही शिक्षण है।

Downloaded From www.dietmathura.org

प्रशिक्षु परस्पर विचार करें कि– शिक्षण के दोनों स्वरूपों में कौन सा अधिक महत्वपूर्ण है और क्यों ?

शिक्षण की परिभाषाएँ (Definition of Teaching)

डॉ0 माथुर के अनुसार– ''शिक्षण का अर्थ शिक्षार्थी को ऐसे अवसर प्रदान करना है जिनसे शिक्षार्थी अपनी अवस्था एवं प्रकृति के अनुरूप समस्याओं को हल करने की क्षमता प्राप्त कर सकें। वह स्वयं योजना बना सकें, शैक्षिक सामग्री इकट्ठी कर उसे सुसंगठित रूप में प्रयोग कर सकें तथा लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।''

रायन्स के अनुसार– ''दूसरों को सीखने के लिए दिशा निर्देश देने तथा अन्य प्रकार से उन्हें निर्देशित करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहते हैं।''

योकम व सिम्पसन– ''शिक्षण वह साधन है जिसके द्वारा समूह के अनुभवी सदस्य अपरिपक्व व छोटे सदस्य का जीवन से अनुकूलन करने में पथ प्रदर्शन करते हैं।''

जेम्स एम0 थाइन– ''समस्त शिक्षण का अर्थ सीखने में वृद्धि करना है।''

प्रशिक्षुओं हेतु– *शिक्षण का वास्तविक व व्यावहारिक अर्थ क्या है ?*

शिक्षण के अर्थ व परिभाषाओं के आधार पर शिक्षण के स्वरूप को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–

- शिक्षण का अर्थ शिक्षक, विद्यार्थी व पाठ्यक्रम के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना है।
- शिक्षण का अर्थ सूचना, ज्ञान व जानकारी देना है।
- शिक्षण का अर्थ सिखाना व बालकों को अपने वातावरण के अनुकूल बनने में सहायता करना है।
- शिक्षण शिक्षार्थी को उत्प्रेरित करने, मार्गदर्शन प्रदान करने व क्रियाशील रखने की प्रक्रिया है।
- शिक्षण तैयारी का एक साधन व सीखने का संगठन है।
- शिक्षण शिक्षक का स्वमूल्यांकन है।

स्वयं करने के लिए– *अच्छा शिक्षण कैसा होना चाहिए ?*
• ....।
• ....।
• ....।

उत्तम शिक्षण की विशेषताएं (Characteristics of Good Teaching)

उत्तम शिक्षण छात्रों में सीखने की तीव्र इच्छा जाग्रत कर उन्हें विकास की ओर बढ़ाता है। **योकम व सिम्पसन** ने अच्छे शिक्षण की निम्नलिखित विशेषताएं बताई हैं–

- अच्छे शिक्षण में वांछित सूचनाएं प्रदान की जाती हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

- यह आदेशात्मक न होकर निर्देशात्मक व जनतंत्रीय आदर्शों पर आधारित होता है अर्थात् हर छात्र महत्वपूर्ण होता है।
- इसमें सीखने वाला स्वयं सीखने के लिए प्रेरित होता है।
- अच्छा शिक्षण शिक्षक व छात्रों के सहयोग पर आधारित व प्रगतिशील होता है।
- उत्तम शिक्षण में छात्रों की कठिनाइयों को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है।
- इसमें छात्र सदैव क्रियाशील रहते हैं तथा उनकी अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास होता है।
- यह प्रेरणात्मक व सृजनात्मक होता है।
- उत्तम शिक्षण में छात्रों की वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रखा जाता है।

यदि प्रशिक्षु और कुछ बिन्दु भी जोड़ना चाहें तो जोड़ें।

शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य (Main objectives of Teaching)

तीव्र गति से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा प्रक्रिया पर भी पड़ा है, जिससे शिक्षा व शिक्षण के उद्देश्यों, विधियों/प्रविधियों, पाठ्यक्रम व शिक्षक की भूमिका में व्यापक बदलाव आया है। आज शिक्षण का मुख्य व महत्वपूर्ण उद्देश्य सीखने की प्रक्रिया को बालोपयोगी, रुचिकर, आनन्ददायी, प्रभावी, व्यावहारिक व बोधगम्य बनाना है जिससे बच्चे अपनी क्षमता के अनुसार विषय वस्तु को अच्छी तरह से समझ सकें व उसका यथा समय प्रयोग कर सकें।

ध्यान रखें–

- शिक्षण का उद्देश्य मात्र तथ्यों का स्मरणीकरण न होकर दक्षता की प्राप्ति तथा ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक योग्यताओं का विकास है।
- रायबर्न के अनुसार– ''शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को इस योग्य बनाना है कि वह सफल जीवन जी सके।''

शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं– (प्रशिक्षुओं से शिक्षण के उद्देश्यों को सूचीबद्ध कराएं। तत्पश्चात उन्हें स्पष्ट करें)

- शिक्षण का उद्देश्य शिक्षार्थियों को जीवनोपयोगी ज्ञान प्रदान करके उनके व्यक्तित्व/क्षमताओं/योग्यताओं व कुशलताओं का अधिकतम विकास करना है।
- शिक्षार्थियों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करना जिससे वे पढ़ने व अन्य कार्यों में रुचि ले सकें।
- छात्रों में आत्मविश्वास की भावना जाग्रत करना।
- छात्रों की मूल प्रवृत्तियों को सही दिशा देना व उनमें स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास करना जिससे वे समाज, देश व विश्वकल्याण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।
- जीविकोपार्जन करना प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण होता है। अतः छात्रों को स्वावलंबी बनाना व उनमें व्यावसायिक दक्षता उत्पन्न करना भी शिक्षण का उद्देश्य है।
- छात्रों में नेतृत्व क्षमता तथा नैतिक व सामाजिक मूल्यों का विकास करना।
- छात्रों को स्वास्थ्य, स्वच्छता व अपने परिवेश के प्रति जागरुक बनाना।
- छात्रों का मार्गदर्शन करना क्योंकि उचित समय पर प्राप्त मार्गदर्शन सफलता दिलाने में सहायक होता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

- छात्र–छात्राओं को सक्रिय रखना व उनमें रचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।
- छात्रों की कठिनाइयों को दूर करना व अशुद्धियों का निवारण करना।
- छात्रों को अपने वातावरण से समायोजन करना सिखाना ताकि वह समाज व लोकतन्त्रिक राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

ध्यान दें–

- बदलते समय के साथ–साथ बच्चों के स्वभाव, रुचियों, सोचने, समझने व सीखने की गति में भी आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तन हुआ है जिसके कारण आज शिक्षण कार्य को अधिक व्यावहारिक बनाने की जरूरत है ताकि विद्यालय का हर बच्चा अपनी रुचि, क्षमता, स्तर व गति के अनुरूप सीख सके।

शिक्षण कार्य करना शिक्षक का प्रमुख दायित्व है। अपने दायित्व के बेहतर निर्वहन, शिक्षण को सफल बनाने व छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिए वह कक्षा शिक्षण में विभिन्न तरीकों/विधाओं/क्रियाकलापों का प्रयोग करता है। शिक्षक द्वारा अपनाये गये जिस तरीके से छात्र अच्छी तरह सीख जायें वही शिक्षण का सबसे उत्तम तरीका होता है।

प्रशिक्षुओं से चर्चा करें कि–*शिक्षक अपने शिक्षण में छात्रों की सहभागिता कैसे प्राप्त कर सकता है?*

शिक्षण में प्रयुक्त प्रमुख क्रियाकलाप

कक्षा–कक्ष में छात्रों के मध्य शिक्षण करते समय शिक्षक निम्नलिखित क्रियाकलाप करा सकते हैं–

- विषय व पाठ्यवस्तु आधारित गतिविधियों/क्रियाकलापों को कराना।
- छोटे व बड़े समूह में कार्य कराना जिससे बच्चे स्वयं कार्य करते हुए सीख सकें, समझ सकें।
- ऐसे प्रोजेक्ट कार्य कराना जिन्हें बच्चे स्वयं व साथियों के सहयोग से कर सकें।
- विविध प्रकार के अभ्यास कार्य कराना व उनकी जाँच करना।
- शैक्षिक व मनोरंजनात्मक खेल खिलवाना।
- वर्णन, व्याख्यान व कथन कहना।
- प्रश्नोत्तर व प्राप्त उत्तरों को सभी बच्चों के सामने स्पष्ट करना।
- लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति क्षमता के विकास हेतु प्रत्येक बच्चे से वार्तालाप करना, कविता, कहानी, दृश्य/चित्र आधारित लेख लिखवाना।
- सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग करना।
- प्रायोगिक कार्य कराना।
- चर्चा– परिचर्चा करवाना।
- महत्वपूर्ण बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखना।
- प्रेरणा व आवश्यक सुझाव प्रदान करना।
- मूल्यांकन करना।
- स्वाध्याय व विचार–विमर्श के अवसर प्रदान करना।

प्रशिक्षु विचार करें और कुछ क्रियाकलाप स्वयं भी जोड़ें।

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

वर्तमान सन्दर्भों में शिक्षण केवल ज्ञान, सूचना व जानकारी प्रदान करना ही नहीं है। शिक्षण तथा सीखना दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शिक्षण का कार्य अधिगम में प्रभावशीलता लाना है। शिक्षण एक कार्य है जबकि अधिगम एक उपलब्धि है। शिक्षण तभी सार्थक व प्रभावी होगा जब छात्र सीखे गये विषय व ज्ञान के आधार पर अपने व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों व परिस्थितियों में उसका समुचित उपयोग कर सकें।

मूल्यांकन अभ्यास

1. त्रिमुखी प्रक्रिया के रूप में शिक्षा के तीन केन्द्र कौन–कौन से हैं ?
2. शिक्षण क्या है ? स्पष्ट कीजिए।
3. अपने व्यापक व संकुचित अर्थ में शिक्षण किसे कहते हैं ?
4. शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट करते हुए अच्छे शिक्षण की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. शिक्षक अपने शिक्षण को अधिक क्रियाशील, प्रभावी व अन्तः क्रियात्मक कैसे बना सकता है ?

प्रशिक्षुओं हेतु स्वयं करने के लिए

- ऐसे कौन–कौन से उपाय हैं जिनका प्रयोग करके शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकता है ?

  ....

  ....

  ....।

- एक शिक्षक को अपने शिक्षण से पूर्व क्या–क्या तैयारी करनी चाहिए ?..

  ....

  ....

  ....।

Downloaded From www.dietmathura.org

सम्प्रेषण

सम्प्रेषण Communication

शिक्षण बिन्दु

- सम्प्रेषण का अर्थ
- आवश्यकता एवं महत्व
- सम्प्रेषण के घटक या कारक
- सम्प्रेषण के प्रकार
- प्रभावी सम्प्रेषण के तरीके

शिक्षक कक्षा में प्रशिक्षुओं से चर्चा करें

- आपका क्या नाम है ?
- आपका घर कहाँ है ?
- आपके घर में और कौन–कौन सदस्य हैं ?
- आपके कितने भाई–बहन हैं ?
- क्या आप अपने भाई–बहन को पढ़ाते हैं ?
- आप पढ़ाते समय जो उन्हें संदेश व सूचनाएँ देते हैं उन्हें क्या कहते हैं ?

शिक्षक प्रशिक्षुओं से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के द्वारा ही उन्हें सम्प्रेषण का अर्थ समझाने का प्रयास करेंगे तथा प्रशिक्षुओं से मिले उत्तरों को और अधिक परिष्कृत करके सम्प्रेषण का अर्थ समझाएंगे।

सम्प्रेषण का अर्थ Meaning of Communication

सामान्यतः सन्देशों एवं विचारों के आदान–प्रदान को हम पारस्परिक सम्प्रेषण कहते हैं। सम्प्रेषण का वास्तविक अर्थ होता है– एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को सूचनाओं एवं संदेशों को भेजना तथा प्राप्तकर्ता द्वारा उन्हें ठीक और सही अर्थ में समझना, जिस रूप और अर्थ में संप्रेषक चाहता है। सम्प्रेषण को आंग्ल भाषा में 'कम्यूनिकेशन' कहा जाता है। इस आंग्ल भाषीय शब्द का निर्माण लैटिन शब्द 'कम्यूनी' (Commune) से हुआ है। इसका आशय सामान्य विचारों, भावनाओं, सूचनाओं के आदान–प्रदान से होता है।

इस प्रकार सम्प्रेषण शब्द सम् और प्रेषण दो शब्दों में मिलकर बना है। सम् का अर्थ है–भली प्रकार और प्रेषण का अर्थ है भेजना। अर्थात् संदेश व सूचनाओं को भली प्रकार प्रेषित करना, जिससे सामने वाला उस संदेश को यथावत् भली प्रकार ग्रहण कर सके।

Downloaded From www.dietmathura.org

प्रभावी सम्प्रेषण हेतु ध्यातव्य बिन्दु

- संदेश की स्पष्टता तथा भाषा की सरलता एवं शुद्धता
- संदेश को सावधानीपूर्वक समझना
- संदेश में विश्वसनीयता
- सम्प्रेषण प्रक्रिया की सरलता
- सम्प्रेषण में समयबद्धता
- सम्प्रेषण विधा में लचीलापन
- पश्चपोषण की व्यवस्था

परिभाषाएं

पॉललीगन्स के अनुसार– ''संचार (सम्प्रेषण) वह क्रिया है, जिसके द्वारा दो या अधिक लोग विचारों, तथ्यों, भावनाओं एवं प्रभावों आदि का इस प्रकार विनियम करते हैं कि संचार प्राप्त करने वाला व्यक्ति सन्देश के अर्थ, उद्देश्य तथा उपयोग को भली–भाँति समझ लेता है।''

"Communication is the process by which two or more people exchange facts, ideas, feelings, impressions and the like in a manner that the receiver gains a clear understanding of the meaning interact and use of the message."

सम्प्रेषण या संचार एक प्रक्रिया है, जो कि दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य घटित होती है तथा इसके माध्यम से अभिवृत्तियों, इच्छाओं, आदर्शों एवं सूचनाओं इत्यादि का आदान–प्रदान होता है। शिक्षण प्रक्रिया में 'संचार' शब्द के लिए उपयुक्त शब्द सम्प्रेषण ही है।

क्रय के अनुसार– ''किसी वस्तु के विषय में समान या सहभागी ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रतीकों का उपयोग ही सम्प्रेषण है। यद्यपि मनुष्यों में सम्प्रेषण का महत्वपूर्ण माध्यम भाषा ही है, फिर भी अन्य प्रतीकों का प्रयोग किया जा सकता है।''

डॉ0 आई0पी0 तिवारी– ''सम्प्रेषण जीवन की एक क्रिया है। इसके अभाव में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। सम्प्रेषण जीवन के साथ शुरू होता है और जीवन के अन्त के साथ खत्म हो जाता है। सामाजिक व्यवस्था में सम्प्रेषण की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

आवश्यकता एवं महत्त्व Needs and importance

शिक्षण की समस्त प्रक्रिया विभिन्न प्रकार से ज्ञान, बोध एवं समझ विकसित करने के लिए की जाती है। अतः ज्ञान की संरचना शिक्षण के स्रोत में एक महत्त्वपूर्ण संरचना है। इस प्रकार के शिक्षा प्रणाली में शिक्षक तथा छात्र दोनों ही सक्रिय रहकर अन्तः प्रक्रिया करते हैं। इस प्रक्रिया में संचार माध्यमों की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षक के द्वारा पाठ की प्रस्तुतीकरण के समय प्रशिक्षुओं/बालकों के समक्ष पाठगत

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

विषय उपस्थित किया जाता है। उद्देश्य कथन के समाप्त हो जाने के पश्चात् बालक का ध्यान नये पाठ पर किस प्रकार केन्द्रित हो ? नये ज्ञान से किस प्रकार परिचित कराया जाए ? यह समस्या शिक्षक के सम्मुख आती है। वास्तव में यह उत्सुकता बढ़ाने का काम शिक्षक ही भली प्रकार से करता है इसलिए इसे 'सम्प्रेषण कौशल' कहा जाता है।

पाठ्यवस्तु को स्वाभाविक तथा तार्किक रूप में व्यवस्थित करना शिक्षक का ही कर्तव्य है। पाठ्यवस्तु के विभिन्न सोपान इस प्रकार बनाने चाहिए कि उनकी तारतम्यता पर कोई प्रभाव न पड़े। आगे आने वाले सोपानों का आभास पहले सोपान से ही मिले। विभिन्न सोपानों के स्पष्टीकरण के पश्चात् पुनः समवेत कर दिया जाता है। ताकि पाठ को सम्पूर्ण रूप से ग्रहण करने में विद्यार्थियों को सहायता मिले। पाठ के विभाजन के विषय में किसी विद्वान ने कहा है कि ***"यह विभाजन इस ढंग से होना चाहिए कि प्रत्येक सोपान स्वयं में पूर्ण इकाई और साथ–साथ आगे आने वाले सोपान से सम्बन्धित हों अर्थात् प्रत्येक सोपान अपने पूर्व के सोपान से उत्पन्न हुआ प्रतीत हो।"*** एक अच्छे सम्प्रेषण से श्रेष्ठ शिक्षण की अपेक्षा की जाती है। अधिगम से इसका सीधा सम्बन्ध है।

चर्चा करें– *एक अच्छे सम्प्रेषण में कौन–कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए ?*

....

....

.... ।

प्रशिक्षणार्थियों से पूछे गए प्रश्न के द्वारा एक अच्छे सम्प्रेषण को विशेषताओं से सम्बन्धित निम्न बिन्दु उभर कर आते हैं–

छात्रों के पूर्व अनुभवों का ध्यान

शिक्षण से पूर्व शिक्षक को छात्रों के पूर्वानुभवों को जानकारी लेनी चाहिए। पूर्व ज्ञान के आधार पर उन्हें नवीन ज्ञान देना ही शिक्षण की सफलता का प्रतीक है।

निर्देशात्मकता

अच्छे शिक्षण में सम्प्रेषण आदेशात्मक न होकर निर्देशात्मक होना चाहिए। शिक्षक को अपने कौशल से ही ऐसी परिस्थिति या वातावरण का निर्माण करना चाहिए, जिसके अनुसार छात्र सहज ही गुण ग्रहण की ओर झुकता है।

अच्छी योजना

सम्प्रेषण का विषय, समय, शिक्षोपकरण तथा इनमें प्रयोग की जाने वाली शिक्षण पद्धति आदि मिलकर एक अच्छे सम्प्रेषण की योजना बनाती है। उसका शिक्षण कौशल उसकी श्रेष्ठ पाठयोजना पर निर्भर करता है। शिक्षण में सम्प्रेषण प्रणालीबद्ध या सुव्यवस्थित होना चाहिए।

Downloaded From www.dietmathura.org

उचित पथ–प्रदर्शन

सम्प्रेषण शिक्षण का वह भाग है, जिसमें शिक्षक के निर्देश शिक्षार्थी के लिए पथ–प्रदर्शन का कार्य करते हैं। प्रशिक्षुओं को यह दिशा–निर्देश देकर समझाने का प्रयास किया जाता है कि वह अपनी कक्षा में बच्चों को किस प्रकार रोचक तरीके से पढ़ायेंगे।

जनतन्त्रात्मकता

कक्षा का वातावरण सामाजिक एवं जनतन्त्रात्मक होना चाहिए, ऊँच–नीच की भावना से परे समता भाव से शिक्षण कराना चाहिए।

बालकों की कठिनाइयों का निदान

यह स्वाभाविक है कि बालक प्रत्येक विषयों में पारंगत नहीं होता है कोई विषय उसे सरल लगता है तो कोई विषय कठिन। शिक्षक का दायित्व है कि वह कठिन लगने वाले विषय को रोचक व सरल बनाते हुए उसकी कठिनाइयों का निदान करें।

उपचारपूर्ण होना– अच्छा शिक्षण उपचारपूर्ण होता है। अध्यापक उनकी भूलों को सहज तरीके से बताते हुए उन्हीं की सहायता से उनमें सुधार कर प्रोत्साहन प्रदान करता है। यह तभी सम्भव है जब शिक्षक स्वयं रुचि लेकर उसे नवीनतम सरल प्रक्रियाओं की जानकारी देते हुए बालकों को व्यक्तिगत एवं सामूहिक कठिनाइयों का उत्तम उपचार करें।

अधिगम से सम्प्रेषण का सम्बन्ध

किसी वातावरण के सीधे सम्पर्क से प्राणी अपने व्यवहारों में जो परिवर्तन लाता है, वही सीखना है। सीखना एक क्रियाशील प्रक्रिया है, उस पर चारों ओर के वातावरण का प्रभाव पड़ता रहता है। उसकी रुचि, झुकाव, निपुणता, योग्यता एवं शक्ति उचित सीखने की प्रक्रिया की उपज है। अच्छे सम्प्रेषण में अच्छे प्रश्नों का चयन कर उनसे पूछना चाहिए। शिक्षण की निपुणता किसी हद (सीमा) तक प्रश्नोत्तर पर आधारित होती है। प्रश्नों की सहायता से पाठ आगे बढ़ता है तथा बालकों को प्रेरित करके उनका ध्यान उनकी सहभागिता के कारण विषय वस्तु पर केन्द्रित करता है। प्रश्नों के द्वारा विषयवस्तु के प्रति बालकों की जिज्ञासा तथा रुचि जाग्रत होती है जिससे कि उसकी रुचि पाठ के प्रति बनी रहे।

सम्प्रेषण का महत्त्व

सम्प्रेषण जीवनपर्यन्त सीखने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें हमारी समस्त इन्द्रियाँ आँख, कान, हाथ और शरीर के समस्त अंग क्रियाशील रहते हैं। सम्प्रेषण शिक्षण का वह भाग है, जिसमें शिक्षक के निर्देश प्रशिक्षुओं/शिक्षार्थी के लिए पथ प्रदर्शन का कार्य करते हैं। बालकों की रुचियों, प्रवृत्तियों तथा भावनाओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षक प्रश्नों के माध्यम से संप्रेषित विषय के प्रति उनकी रुचि, जिज्ञासा व ध्यान केन्द्रित करता है। सम्प्रेषण के द्वारा शिक्षण को रोचक एवं सरल बनाकर शिक्षा की गुणवत्ता में

Downloaded From www.dietmathura.org

बढ़ोत्तरी, नामांकन की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि एवं विद्यालय में बच्चों के ठहराव की स्थिति को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सकता है। यह तभी सम्भव है जब सम्प्रेषण की भाषा शुद्ध एवं स्पष्ट हो, स्वर स्थिर हों, प्रश्न सरल एवं स्पष्ट हों, सार्थक हों, सामायिक एवं कक्षा वातावरण के अनुकूल हो, अन्य आवश्यक परिस्थितियों को स्थान दिया गया हो तथा छात्र ध्यान केन्द्रित कर पाते हों क्योंकि एक सफल शिक्षण श्रेष्ठ सम्प्रेषण पर आधारित है, जिससे न केवल पाठ की रोचकता बढ़ेगी अपितु अधिगम का अनुपात भी बढ़ेगा।

बोध प्रश्न

- *आप कक्षा में बच्चों को अपनी विषय सामग्री का सम्प्रेषण किस प्रकार करेंगे ?* ....।
- *एक सफल शिक्षण श्रेष्ठ (प्रभावी) सम्प्रेषण पर आधारित है कैसे ?*..।

सम्प्रेषण के घटक या कारक Factors of Communication

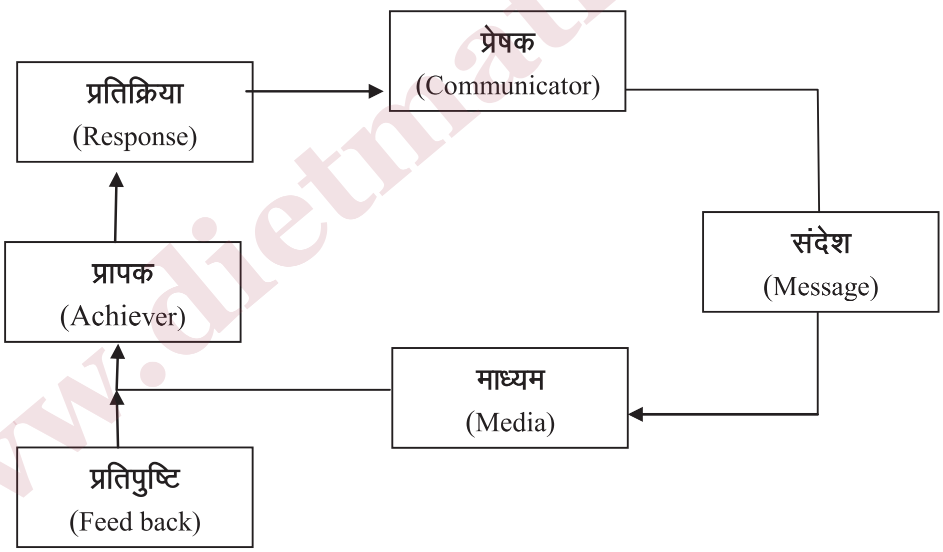

1. प्रेषक (Sender or Communicator)

प्रेषक एवं माध्यम की सफलता का मूलाधार संदेश होता है। संदेश को सामाजिक विषमता, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद एवं अन्य बुराइयों से आच्छादित नहीं होना चाहिए बल्कि इसके स्थान पर लोगों में प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, सह–अस्तित्व, शान्ति एवं आपसी सौहार्द को बढ़ाने वाला होना चाहिए।

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण सम्प्रेषण को प्रभावी बनाने में प्रेषक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यदि सम्प्रेषण भावी शिक्षकों को सही दिशा–निर्देश देने से सम्बन्धित है तो प्रेषक को इस बात का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए कि वह प्रशिक्षुओं को इस प्रकार संप्रेषित करें, जिससे लाभान्वित होकर वह शिक्षक बनने के उपरान्त कक्षा में बच्चों को किस प्रकार उनकी रुचियों, आदतों, अभिवृत्तियों, आकांक्षाओं, वातावरण एवं सामाजिक परिवेश का ध्यान रखते हुए पढ़ायेंगे, इसकी जानकारी हो सके।

आज के बाल केन्द्रित शिक्षण में प्रमुख तत्व छात्र स्वयं है। अतः छात्र/छात्राओं की आयु, मूल आकांक्षाएँ, बौद्धिक स्तर तथा आदतें या मनोभावनाएं शिक्षण–सम्प्रेषण को प्रभावित करते हैं। इसलिए सम्प्रेषण के समय छात्रहित को विशेषतः ध्यान में रखना चाहिए। प्रेषक को शिक्षण एवं विषय से सम्बन्धित शिक्षण के उद्देश्यों की जानकारी भली प्रकार होनी चाहिए ताकि अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वह पर्याप्त साधन एवं सुविधाएँ शिक्षण हेतु जुटा सकें। प्रेषक को अपना संदेश भली भाँति प्रेषित करने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए–

- छात्रों का बौद्धिक स्तर
- उद्देश्य की जानकारी
- स्वयं का व्यक्तित्व
- विषयवस्तु का चयन
- पाठ्य योजना का निर्माण
- उचित शिक्षण विधि एवं सहायक सामग्री का प्रयोग
- वैयक्तिक विभिन्नताओं का ध्यान
- कक्षा का वातावरण
- बालक का मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य
- समवाय या विषयों के सह–सम्बन्ध पर आधारित शिक्षण सम्प्रेषण
- अभिप्रेरणा
- निष्पक्ष भाव

2. संदेश Message

संदेश से आशय पाठ्यवस्तु से है। प्रेषक ग्राही को जो कुछ भी सिखाना चाहता है इस कार्य हेतु अपना जो अनुभव व ज्ञान वह शिक्षण के माध्यम से प्रेषित करता है उसे संदेश कहते हैं। यदि एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को सूचना या जानकारी दी जाती है और दूसरा व्यक्ति समझ लेता है तो यह सम्प्रेषण कहलाता है। सम्प्रेषण पूरा होने के लिए सम्प्राप्ति की आवश्यक है अथवा किसी के द्वारा कही गई बात को उसी तरह समझ लेना सम्प्रेषण कहलाता है। **उदाहरणार्थ–** प्रेषक स्कूल, स्टेशन, स्थान आदि शब्दों को शुद्ध बोलना एवं लिखना सिखाना चाहता है। वह पहले स्वयं शुद्ध उच्चारण करके सिखायेगा। यदि फिर भी ग्राही

Downloaded From www.dietmathura.org

ने उसे सही तरीके से नहीं सीखा है वह स्कूल को इस्कूल, सकल स्टेशन को इस्टेशन, टेशन और स्थान को इस्थान या अस्थान बोलना या लिखता है तो प्रेषक उसे श्यामपट्ट पर या चार्ट व चार्ट पट्टिका पर लिख कर भली–भाँति स्पष्ट करके समझाएं।

3. माध्यम (Media)

माध्यम प्रेषक और प्रापक के बीच मेल कराते हैं। यह दोनों के मध्य मध्यस्थता का कार्य करता है। वर्तमान समय में अनेकों सम्प्रेषण माध्यम प्रचलित है, जैसे– रेडियो, टेलीविजन, ओवर हेड, प्रोजेक्टर, फैकज, टेलीफोन, बी0सी0आर0 इत्यादि प्रेषक अपनी आवश्यकता, उपयोगिता को दृष्टिगत रखकर अपने संदेश को सम्प्रेषित करने के लिए किसी एक माध्यम या सभी माध्यमों का सम्मिलित रूप से उपयोग कर सकता है। माध्यम सर्वसुलभ, सस्ता, लोकप्रिय, व्यावहारिक, क्रिया विधि को मानने वाला होना चाहिए।

4. ग्राही– Achiever

ग्राही अर्थात् ग्रहण करने वाले प्राप्त करने वाला सीखने वाला सम्प्रेषण के द्वारा दिये जाने वाले ज्ञान को ग्रहण करने वाला ग्राही कहलाता है। सम्प्रेषण के तीन प्रमुख घटक है– सम्प्रेषण, संदेश, ग्राही। तीनों का ही आपस में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। संप्रेषक –––––––– संदेश ––––––– ग्राही––––––– प्रतिपुष्टि। इसका तात्पर्य है कि संप्रेषक अर्थात् शिक्षक ने विद्यार्थियों को (ग्राही को) जिस किसी भी विषय की महत्वपूर्ण बातों की जानकारी दी उसको ग्राही (विद्यार्थी) ने कितना सीखा, उसे कितनी उपलब्धि हुई। इसको संप्रेषक बीच–बीच में विद्यार्थियों की सहभागिता हुई। इसको संप्रेषक बीच–बीच में विद्यार्थियों की सहभागिता से जान लेता है कि वह सीख व समझ रहा है कि नहीं। यदि वह सामूहिक रूप से कम सीख रहा है या उसकी सिखने की उपलब्धि कम हो रही है तब ऐसी स्थिति में संप्रेषक व्यक्तिगत रूप से ध्यान देकर उसकी इस कमी को दूर करता है बालक को कौन सा विषय किस विधि से पढ़ाया जाना चाहिए, उसकी प्रकृति के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था करता है। ग्राही को अन्य नामों जैसे– प्रापक, प्राप्तकर्ता, ग्रहणकर्ता, विषयी इत्यादि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है।

5. प्रतिपुष्टि Feed Back

जिस प्रकार अधिगम की प्रक्रिया में सीखने वाला व्यक्ति को सीखने की ओर उत्सुक करने के लिए बीच–बीच में पुनर्बलन या पृष्ठपोषण दिया जाता है, जिससे सीखने में तारतम्यता, क्रमबद्धता एवं ध्यान की एकाग्रता बनी रहे, उसी प्रकार सम्प्रेषण की प्रक्रिया में भी प्रापक को समय–समय पर प्रतिपुष्टि देना आवश्यक होता है जिससे वह संदेश के प्रति जागरुक रहता है। प्रतिपुष्टि से प्रापक में नये जोश का संचार होता है और वह प्राप्त संदेश को वह करके देखने एवं उनकी व्यावहारिकता की ओर वह प्रेरित होता है। उसकी ज्ञानात्मक एवं भावात्मक विचार धाराएं क्रियात्मकता की ओर अग्रसर होती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

सम्प्रेषण के प्रकार Kinds of Communication

वर्तमान युग में सम्प्रेषण में प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण को महत्व दिया जाने लगा है, ताकि कक्षा में प्रजातान्त्रिक वातावरण सृजित हो सके। अध्यापक का सभी बालकों के साथ समान व्यवहार रहे, चाहे वह निम्न या उच्च वर्ग का हो या किसी जाति अथवा लिंग का हो। कक्षा में उचित वातावरण बनाया जाना चाहिए और छात्र एवं अध्यापक दोनों सक्रिय रहने चाहिए क्योंकि सम्प्रेषण के साथ सीखना भी जरूरी है अन्यथा सम्प्रेषण व्यर्थ है। कक्षा में कोई बालक किसी विषय में अधिक सफल होता है तो किसी में असफल। इन्हीं कठिनाइयों को दूर करने के लिए सम्प्रेषण के वैयक्तिक एवं सामूहिक सम्प्रेषण को जानना आवश्यक है।

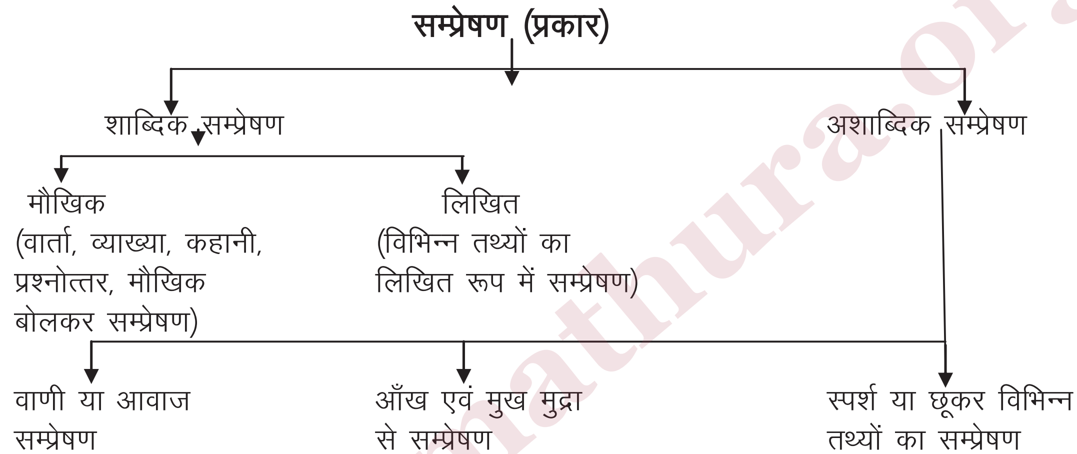

वैयक्तिक सम्प्रेषण Individual Communication

जब शिक्षक प्रत्येक बालक को अलग–अलग शिक्षण देता है तो इसे वैयक्तिक सम्प्रेषण कहा जाता है ए0जी0मेलबिन न वैयक्तिक सम्प्रेषण की परिभाषा इस प्रकार दी है– विचारों का आदान–प्रदान अथवा व्यक्तिगत वार्तालाप द्वारा बालकों को अध्ययन में सहायता, आदेश तथा निर्देश प्रदान करने के लिए शिक्षक का प्रत्येक बालक से पृथक–पृथक् साक्षात्कार करना।

वैयक्तिक सम्प्रेषण के उद्देश्य

- छात्रों की रुचियों, अभिरुचियों, आवश्यकताओ तथा मानसिक योग्यताओं के अनुसार शिक्षण देना।
- बालकों की विशिष्ट योग्यताओं और व्यक्तित्व का विकास करना।
- साधारण बालकों को उनके पंसदीदा क्षेत्र में आगे बढ़ाना।
- क्रियाशीलता का अवसर देना।

Downloaded From www.dietmathura.org

वैयक्तिक सम्प्रेषण के गुण

- इस विधि के अनुसार शिक्षा का केन्द्र बालक होता है। अतः यह विधि बालकेन्द्रित मनोवैज्ञानिक विधि हो।
- इस विधि में बालक स्वयं करना सीखता है।
- यह विधि बालक को क्रियाशील बनाकर उसे अधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ बनाती है।
- शिक्षक, बालक पर अपने व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रभाव डालने में समर्थ रहता है।
- यह विधि रोचक है। इसमें व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर शिक्षा दी जाती है।
- यह विधि प्रखर बुद्धि तथा मन्द बुद्धि दोनों प्रकार के छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी है।
- शिक्षक, बालक पर व्यक्तिगत ध्यान दे सकता है।
- बालक की प्रकृति के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था करती है।
- वैयक्तिक शिक्षण शिक्षक में उत्तर दायित्व को बढ़ाकर उसे अधिक परिश्रम करने के लिए प्रेरित करता है।

वैयक्तिक सम्प्रेषण के दोष

- यह विधि व्ययपूर्ण है। प्रत्येक समाज इसकी व्यवस्था नहीं कर सकता है।
- प्रत्येक छात्र के लिए एक शिक्षक का प्रबन्ध करना असम्भव सा लगता है।
- इस विधि के द्वारा बालक में सामाजिकता के गुण विकसित नहीं किए जा सकते।
- कुछ विषय ऐसे होते हैं जिन्हें सामूहिक रूप से पढ़ाये जाने पर रोचकता उत्पन्न होती है। जैसे संगीत गायन।
- यह विधि अव्यावहारिक है।
- इस विधि के द्वारा बालकों में उत्तम गुणों का विकास नहीं किया जा सकता। बालकों में प्रेम, सहयोग तथा आत्मत्याग की भावना का उदय नहीं हो पाता।
- इस विधि में प्रेरणा, प्रोत्साहन और प्रतिस्पर्द्धा का सदैव अभाव रहता है।
- बालक के दृष्टिकोण को संकुचित करती है।

सामूहिक सम्प्रेषण Collective Communication

सामूहिक सम्प्रेषण का अर्थ कक्षा शिक्षण है। विद्यालय में एक सी मानसिक योग्यता वाले छात्रों के अनेक उपसमूह बना लिए जाते हैं। साधारणतया इनको कक्षा कहते हैं। ये कक्षाएँ सामूहिक इकाइयाँ होती है। शिक्षक इन कक्षाओं में जाकर सभी छात्रों को एक साथ शिक्षा देते हैं। इस विधि में एक कक्षा के सभी छात्रों के लिए सामूहिक शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

सामूहिक सम्प्रेषण के गुण

- यह विधि सरल तथा सस्ती हैं। इसी कारण यह विधि व्यावहारिक है।
- यह विधि छात्रों को व्यवहार कुशल बनाती है। बालक अनेक बालकों के सम्पर्क में आने के कारण अच्छे गुण ग्रहण करते हैं।
- इस विधि से शिक्षा देने में बालकों की तर्कशक्ति, कल्पना और चिन्तन शक्ति का विकास होता है।
- यह विधि नेतृत्व के गुणों का विकास करती है। इसमें बालकों के लिए पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है।
- यह विधि इतिहास, भूगोल, संगीत, कला तथा कविता के लिए उपयोगी होती है।
- इस विधि से शिक्षण देने से बालकों में अनुकरण की भावना उत्पन्न होती है।
- यह विधि छात्रों को सुझाव और नवीन ज्ञान प्रदान करती है।
- यह विधि छात्रों में शिक्षण के प्रति उत्साह उत्पन्न करती है जिससे वे सीखने के लिए व्यक्तिगत प्रयास करते हैं।
- यह विधि बालकों की उत्तर देने की प्रवृत्ति को उत्पन्न करती है।
- कक्षा शिक्षण से बालकों में विचारों का आदान–प्रदान होता है। इस प्रकार उनकी कार्यकुशलता में वृद्धि होती है।
- यह विधि छात्रों को योग्य नागरिक बनाने का प्रशिक्षण देती है।

सामूहिक सम्प्रेषण के दोष

- इस विधि को बालकेन्द्रित व मनोवैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसमें बालकों की रुचियों और आवश्यकताओं की अवहेलना की जाती है।
- इस प्रकार से शिक्षा देने में बालकों के व्यक्तिगत भेदों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। सभी बालकों को एक समान शिक्षा दी जाती है।
- यह विधि समय–सारणी के अनुसार शिक्षक और छात्रों को एक संकुचित क्षेत्र में बाँध देती है। शिक्षक पाठ्यक्रम में निर्धारित विषयवस्तु से जूझता रहता है। फलस्वरूप बालक का विकास रुक जाता है।
- इस विधि में शिक्षक और छात्रों के मध्य सम्पर्क नहीं बन पाता क्योंकि एक ही शिक्षक अनेक कक्षाओं में पढाता है।
- इस विधि में शिक्षक तो सक्रिय रहता है लेकिन बालक निष्क्रिय रहते हैं। कक्षा के अधिकांश कमजोर छात्र चुपचाप बैठे रहते हैं।
- कक्षा में सभी बालकों को एक साथ, एक ही विधि से पढ़ाने में बालक का हित नहीं होता। मन्दबुद्धि बालक पीछे रह जाते हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

बोध प्रश्न

- सम्प्रेषण के सभी घटक अभ्यास में एक–दूसरे से सम्बन्धित हैं वे कैसे एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं ?
- आपकी दृष्टि में वैयक्तिक व सामूहिक दोनों सम्प्रेषणों में कौन–सा सम्प्रेषण शिक्षण के लिए अधिक उपयोगी है ?

प्रभावी सम्प्रेषण के तरीके Methods of effective Communication

यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को कोई सूचना देता है तथा दूसरे व्यक्ति द्वारा सूचना ग्रहण करने का संकेत प्रेषक को किसी प्रतिक्रिया के रूप में प्राप्त हो जाय तो वह प्रभावी सम्प्रेषण होता है। शिक्षाविदों के मतानुसार सम्प्रेषण प्रक्रिया को कक्षा में प्रयोग करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए–

उद्देश्यपूर्ण

प्रभावी सम्प्रेषण की यह विशेषता है कि उसमें शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट एवं विशिष्ट होने चाहिए क्योंकि उद्देश्यहीन कार्य प्रभावी व संतुष्ट करने वाला नहीं होता।

अध्यापन आदेशात्मक न होकर निर्देशात्मक होना चाहिए

सम्प्रेषण आदेशात्मक नहीं होना चाहिए। अतः कक्षा का वातावरण कठोरता तथा नीरसता से युक्त न होकर सरलता, सौहार्द्रता, स्नेह तथा सहानुभूति युक्त होना चाहिए।

प्रेरणास्पद

सम्प्रेषण पूर्णतः प्रेरणाप्रद होना चाहिए। वह उनके पूर्व अनुभवों पर आधारित होना चाहिए साथ ही उनकी रुचियों एवं प्रवृत्तियों को विकसित करने वाला होना चाहिए।

बालकेन्द्रित

वर्तमान समय में शिक्षा बालकेन्द्रित है। अतः सम्प्रेषण भी तभी प्रभावी हो सकता है जब वह बालकेन्द्रित हो अर्थात् उसकी वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए, उसकी सहभागिता के साथ अध्यापन किया जाए।

सुनियोजित

सम्प्रेषण सुनियोजित ढंग से अर्थात् भली प्रकार योजना बनाकर पूर्ण किया जाना चाहिए।

प्रजातान्त्रिक पद्धति पर आधारित

वर्तमान युग में सम्प्रेषण में प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण को महत्त्व दिया जाने लगा है, ताकि कक्षा में प्रजातान्त्रिक वातावरण सृजित हो सके। अध्यापक का सभी बालकों के साथ समान व्यवहार रहे, चाहे वह निम्न या उच्च वर्ग का हो या किसी जाति अथवा लिंग का हो।

Downloaded From www.dietmathura.org

सक्रिय अध्यापन

प्रभावी सम्प्रेषण के लिए आवश्यक है कि कक्षा में उचित वातावरण बनाया जाय और छात्र एवं अध्यापक दोनों सक्रिय रहें, कहने का तात्पर्य यह है कि एकतरफा सम्प्रेषण न हो क्योंकि इस प्रकार के सम्प्रेषण में छात्र निष्क्रिय श्रोता रहते हैं वे संप्रेषक से मिलने वाले संदेश को भली प्रकार ग्रहण नहीं कर पाते और उन्हें विषय का आधा–अधूरा ज्ञान ही मिल पाता है। इसलिए आवश्यक है कि सम्प्रेषण प्रभावी हो और छात्र एवं अध्यापक दोनों ही सक्रियता से सहभागिता दें।

विषय से क्रमबद्धता

विषयवस्तु क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत की जाय, उसका क्रम टूटना नहीं चाहिए, अन्यथा छात्र भ्रमित हो जाते है और उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आता।

सहयोग की भावना का विकास

सम्प्रेषण में छात्र एवं अध्यापक दोनो से सक्रियता अपेक्षित है। इसके लिए एक–दूसरे का सहयोग अपेक्षित है। जैसे– किसी भी विषय को पढ़ाते समय अध्यापक यदि बीच–बीच में प्रश्न करता है तो छात्र की जिज्ञासा व शिक्षण के प्रति रुचि बढ़ती है और साथ ही उनमें सहयोग की भावना का विकास होता है।

पाठ की तैयारी

प्रभावी सम्प्रेषण के लिए पाठ की पूर्ण तैयारी पहले से ही कर लेनी चाहिए, ताकि वह छात्रों की समस्याओं का समाधान भली प्रकार कर सके और छात्र अध्यापक के द्वारा दिए जाने वाले ज्ञान को भली प्रकार ग्रहण कर सकें।

पूर्वज्ञान से सम्बन्धित

पाठ को पढ़ाने से पूर्व अध्यापक को यह तथ्य ज्ञात कर लेना चाहिए कि क्या छात्र विषय से पूर्व की जानकारियों से अवगत है या नहीं ? अन्यथा सम्प्रेषण दोषपूर्ण हो सकता है। जैसे– कविता, कहानी आदि पढ़ाने से पूर्व शिक्षक छात्रों से पहले की कक्षा में पढ़ा हुई कविता या कहानी सुन सकते हैं या पाठ में आए हुए पात्रों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग

सम्प्रेषण में उचित स्थान पर सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए ताकि पाठ में रोचकता आ सके और छात्र रुचि पूर्वक सीख सकें। यथा– श्यामपट्ट का अधिकाधिक प्रयोग, चार्ट, मॉडल, चार्टपट्टिका, फ्लैशकार्ड, आदि वीडियो क्लिप आदि।

स्वतन्त्र वातावरण

विषय का सम्प्रेषण अनुशासित होते हुए भी खेल के समान स्वतन्त्र वातावरण में पूरा हो, ताकि छात्रों को रुचि का अधिकाधिक विकास हो सके।

Downloaded From www.dietmathura.org

आत्मविश्वास की जागृति

सम्प्रेषण की अच्छी तैयारी अध्यापक में आत्म–विश्वास जाग्रत करता है। आत्मविश्वास के साथ पढ़ाया जाना बालक को पूर्ण ज्ञान प्रदान करता है साथ ही छात्रों की विविध समस्याओं का समाधान भी अध्यापक के द्वारा भली प्रकार किया जा सकता है।

अध्यापन उपचारपूर्ण होना चाहिए

जब हम छात्र को कुछ सिखाना चाहते हैं उसे सम्प्रेषण के द्वारा जो ज्ञान का संदेश दिया जा रहा है यदि वह छात्र इस ज्ञान को भली प्रकार ग्रहण नहीं कर पा रहा है तो ऐसी स्थिति में उपचारात्मक शिक्षण द्वारा अध्यापक छात्र की इस कभी को दूर करने का प्रयास करता है।

क्रियाशीलता एवं छात्रों को अपनी बात कहने के अवसर

बच्चों के बीच रहते हुए यह अनुभव किया जा सकता है कि वे क्रियाशील रहते हैं, वे हर समय कुछ न कुछ करते दिखाई देते हैं। अतः यदि उनसे किसी ऐसे विषय पर चर्चा करें जिससे वे परिचित हों, जैसे– मेला, हाट (बाजार) आदि तो वे अपनी बात कहने के लिए बड़े उत्साहित दिखाई देते हैं। इसलिए सम्प्रेषण के समय अध्यापक छात्रों से प्रश्न करके, बातचीत करके शिक्षण के प्रति रुचि व लगन जागृत कर सकता है।

पुनरावृत्ति बिन्दु

- एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को सूचना या जानकारी दी जाती है और दूसरा व्यक्ति समझ लेता है तो वह सम्प्रेषण कहलाता है।
- शिक्षण की समस्त प्रक्रिया विभिन्न प्रकार से ज्ञान, बोध एवं समझ विकसित करने के लिए की जाती है। अतः ज्ञान की संरचना शिक्षण के स्रोत में एक महत्वपूर्ण संरचना है। इस प्रकार की शिक्षण प्रणाली में शिक्षक तथा छात्र दोनो ही सक्रिय रहकर अन्तःक्रिया करते है। इसलिए प्रभावी सम्प्रेषण का शिक्षण में विशेष महत्व एवं आवश्यकता है।
- सम्प्रेषण में मुख्यतः पाँच घटक हैं– प्रेषक............माध्यम............संदेश .... ग्राही............ प्रतिपुष्टि............ विषय ज्ञान देने वाला सम्प्रेषण, विषय सामग्री संदेश व ग्रहण करने वाला ग्राही कहलाता है।
- सम्प्रेषण के दो प्रकार हैं– वैयक्तिक व सामूहिक सम्प्रेषण। छात्रों की रुचियों, अभिरुचियों, आवश्यकताओं तथा मानसिक योग्यताओं के अनुसार शिक्षण देना वैयक्तिक सम्प्रेषण व जब एक ही कक्षा में सामूहिक रूप से अध्यापक शिक्षण कार्य करता है, छात्र सामूहिक रूप से अध्यापक के ज्ञान संदेश को ग्रहण करते हैं तो उसे सामूहिक सम्प्रेषण कहते हैं।
- प्रभावी सम्प्रेषण के तरीके हैं– उद्‌देश्यपूर्ण, निर्देशातमक सम्प्रेषण, प्रेरणास्पद, बालकेन्द्रित, सुनियोजित, प्रजातान्त्रिक पद्धति पर आधारित, सक्रिय अध्यापन, क्रमबद्धता, सहयोग की भावना, पाठ की तैयारी, पूर्वज्ञान से सम्बन्धित, सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग, स्वतन्त्र वातावरण, आत्मविश्वास की जागृति, उपचारात्मक शिक्षण, क्रियाशीलता आदि।

Downloaded From www.dietmathura.org

मूल्यांकन

निबन्धात्मक प्रश्न

- सम्प्रेषण का क्या अर्थ है ? शिक्षण में सम्प्रेषण के महत्त्व एवं उसकी आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
- सम्प्रेषण के प्रमुख घटकों को समझाते हुए कक्षा अध्यापन में इसकी उपयोगिता को लिखिए।
- सम्प्रेषण कितने प्रकार के होते हैं ? किसी एक सम्प्रेषण को गुण–दोष सहित स्पष्ट कीजिए।
- वैयक्तिक और सामूहिक सम्प्रेषण में क्या अन्तर है? शिक्षण में इनकी उपयोगिता सिद्ध कीजिए।
- कक्षा–शिक्षण को प्रभावी व रोचक बनाने के लिए सम्प्रेषण किस प्रकार सहायक है ? स्पष्ट कीजिए।
- सम्प्रेषण के पाँचों घटकों का आपस में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
- सम्प्रेषण की उपयुक्त परिभाषा लिखते हुए कक्षा शिक्षण में सहायक महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए।

लघुउत्तरीय प्रश्न

- सम्प्रेषण से क्या आशय है ?
- सम्प्रेषण की एक परिभाषा लिखिए।
- सम्प्रेषण में सहायक मुख्य चार बिन्दुओं को लिखिए।
- सम्प्रेषक और ग्राही में भेद स्पष्ट कीजिए।
- प्रभावी सम्प्रेषण के चार तरीके लिखिए।
- वैयक्तिक सम्प्रेषण की चार विशेषताओं को लिखिए।
- सामूहिक सम्प्रेषण क्या है?
- सम्प्रेषण आदेशात्मक न होकर निर्देशात्मक क्यों होना चाहिए?
- वैयक्तिक एवं सामूहिक सम्प्रेषण क्या है?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

- सम्प्रेषण शब्द किन दो शब्दों से मिलकर बना है ?
- पूर्व अनुभव से क्या तात्पर्य है ?
- सम्प्रेषण के प्रमुख घटक कौन–कौन से हैं ?
- वैयक्तिक सम्प्रेषण में छात्रों की किन–किन बातों का ध्यान रखा जाता है ?
- सम्प्रेषण कितने प्रकार का होता है ?
- वैयक्तिक सम्प्रेषण के दो उद्देश्य लिखिए।

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

- सुनियोजित सम्प्रेषण से क्या अभिप्राय है ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ''संचार वह क्रिया है जिसके द्वारा दो या अधिक लोग विचारों तथ्यों, भावनाओं एवं प्रभावों आदि का इस प्रकार विचार विनिमय करते है कि संचार प्राप्त करने वाला व्यक्ति सन्देश के अर्थ, उद्देश्य तथा उपयोग को भली भाँति समझ लेता है।'' यह कथन है—

(i) पॉल लीगन्स का, (ii) प्रो0 मार्शल का (iii) हरबर्ट स्पेन्सर का (iv) क्रच का

2. सम्प्रेषण कार्य का सम्प्रेषण होना चाहिए—

(i) स्पष्ट (ii) विश्वसनीय (iii) समयबद्ध (iv) उपरोक्त सभी

3. सम्प्रेषण का वास्तविक अर्थ है—

(i)सूचनाओं को भली प्रकार से प्रेषित करना (ii) सूचनाओं पर भाषण देना

iii) शिक्षक और छात्र के बीच वार्तालाप होना (iv) इनमें से कोई नहीं।

4. सामूहिक सम्प्रेषण का गुण है—

(i) यह विधि सरल तथा सस्ती है (ii) छात्रों को व्यवहार कुशल बनाती है।

(iii) छात्रों में नेतृत्व कुशलता का विकास करती है। (iv) उपरोक्त सभी

5. सम्प्रेषण के प्रकार हैं—

(i) चार (ii) दो (iii) तीन (iv) पाँच

6. सम्प्रेषण प्रक्रिया के तरीके हैं—

(i) प्रेरणास्पद (ii) चिन्तन (iii) लेखन (iv) उपरोक्त सभी

7. सक्रिय अध्यापन से तात्पर्य हैं—

(i) शिक्षक तथा छात्र दोनों की सक्रियता (ii) शिक्षक की सक्रियता

(iii) छात्र की सक्रियता (iv) उपरोक्त सभी।

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण सिद्धान्त

- शिक्षण के सिद्धान्त अर्थ एवं भूमिका
- करके सीखने का सिद्धान्त
- प्रेरणा का सिद्धान्त
- रुचि का सिद्धान्त
- निश्चित उद्‌देश्य का सिद्धान्त
- नियोजन का सिद्धान्त
- चयन का सिद्धान्त
- वैयक्तिक भिन्नताओं को सिद्धान्त
- लोकतन्त्रीय व्यवहार का सिद्धान्त
- जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त
- आवृत्ति का सिद्धान्त
- निर्माण एवं मनोरंजन का सिद्धान्त
- विभाजन का सिद्धान्त (लघु सोपानों का)

भूमिका

बचपन में आपमें से ज्यादातर लोगों से एक सवाल जरूर पूछा गया होगा कि आप बड़े होकर क्या बनेंगे? कुछ का जवाब होगा बड़े होकर टीचर बनूंगा/बनूंगी। कभी आपने जानने का प्रयास किया कि शिक्षक कैसे बनते हैं ? या शिक्षक का मतलब क्या है? वास्तव में शिक्षक वह है जिसे पढ़ाना आता हो, पढ़ाने का कार्य शिक्षण कहलाता है और शिक्षण करने की प्रक्रिया में हम कुछ आधारों का अनुगमन करते हैं। इन्हीं आधारों को या मान्यताओं को शिक्षण के सिद्धान्त कहा जाता है।

शिक्षा शास्त्री/विचारकों के अनुसार विभिन्न शिक्षण सिद्धान्तों को मान्यता दी गई जिनका वर्णन इस प्रकार है–

क्रियाशीलता का सिद्धान्त– इसका अर्थ है करके सीखना यह सिद्धान्त बाल मनोविज्ञान का आधारभूत सिद्धान्त हैं, इसमें सीखने वाले का पूरी अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रहना परम आवश्यक है। याद करें आप सभी में से जो कुछ साइकिल से विद्यालय जाते हैं उसे आपने कैसे सीखा सबसे पहले आपने साइकिल को पकड़ना सीखा, पैडल मारना सीखा, कई बार उसे चलाने में चोटें भी आईं। आखिरकार आपको साइकिल चलाना आ गया, इसमें आप जब तक स्वयं साइकिल के साथ क्रिया नहीं करते तब तक आप उसे सीख नहीं सकते।

> **फ्रोबेल–**बालक कार्य करके ही सीखते है और क्रिया द्वारा सीखना स्थायी सीखना है।

स्पष्ट है शिक्षण/अधिगम का कार्य भी बिना क्रियाशील हुए सम्भव ही नहीं। जितनी अधिक क्रियाशीलता उतनी ही अधिक सीखने की प्रक्रिया सरल और रुचिपूर्ण होगी किन्तु ऐसा नहीं है कि स्वयं करके सीखने में गल्तियाँ नहीं होती, अवश्य होती हैं गल्तियों से घबराने की जरूरत नहीं है, धीरे–धीरे सुधार के साथ हम उस कार्य को सीख ही जायेंगे।

Downloaded From www.dietmathura.org

गतिविधि–1

हम सभी जानते हैं कि पौधों को विकसित होने के लिये हवा, पानी, प्रकाश खाद की आवश्यकता होती है, प्रशिक्षु इसके लिए मिट्टी खोदें, बीज डालें, सीचें, खाद डालें और देखें– हवा, पानी, प्रकाश का प्रयोग करके एक **बीज** पौधा कैसे बनता हैं ? वास्तव में यह सिद्धान्त मानव स्वभाव के अनुकूल है, जन्म से ही बालक क्रियाशील रहता है, उसके प्रत्येक अंग सक्रिय रहते हैं। इस प्रकार सीखना तभी सफल होगा जब हम प्रशिक्षुओं को ज्यादा से ज्यादा करके सीखने का अवसर देंगे और मार्ग–दर्शन करके उनके व्यवहार में परिवर्तन करेंगे। क्रियाशीलता के सिद्धान्त का सबसे बड़ा लाभ है सीखने में एकाग्रता, जो किसी भी चाहे वह छोटा या बड़ा कार्य हो, के लिए जरूरी है।

माण्टेसरी, किण्डरगार्टन, डाल्टन ऐसी ही कुछ पद्धतियाँ हैं जो क्रियाशीलता पर जोर देती हैं। महात्मा गाँधी द्वारा चलाई गई बेसिक योजना तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में करके सीखना को मूलभूत सिद्धान्त के रूप में मान्यता दी गई है।

गतिविधि–2

मान लीजिए आप कक्षा के प्रतिनिधि छात्र हैं (मॉनीटर)। आपको शिक्षक ने भाषण प्रतियोगिता के आयोजन का दायित्व सौंपा। इस आयोजन को पूरा करने में आपने कई कार्य किये, प्रतिभागियों को आमंत्रण पत्र लिखे, सभाकक्ष तैयार किया, निर्णायकों को व्यवस्था की, खान–पान का तथा प्रतियोगिता का संचालन किया। इस प्रकार आयोजन का कार्य आपने स्वयं करके सीख लिया। यह सत्य है दोबारा अगर आपको बड़ा आयोजन करना हो तो आप पूरे आत्मविश्वास से उसको पूर्ण करेंगे।

स्वयं करने से
- कार्य/पाठ हम सीख जाते हैं।
- आत्म विश्वास बढ़ता है।
- व्यवहार परिमार्जन होता है।

प्रेरणा का सिद्धान्त

मानव स्वभाव है– प्रशंसा से खुश और आलोचना से मायूस होना। आप सभी ने जब परीक्षा में अच्छे अंक लाये होंगे तो गुरु जनों, माता–पिता द्वारा शाबाशी दी गई होगी। प्रशंसा पाकर आपने और अच्छा प्रदर्शन या मेहनत करने की ठानी होगी और उसमें सफल भी हुए होंगे। यह प्रशंसा, शाबाशी क्या है, इसे मनोवैज्ञानिक भाषा में प्रेरणा कहते हैं। *केली महोदय का विचार था कि शिक्षण में अभिप्रेरणा किसी न किसी रूप में अवश्य उपस्थित रहना चाहिए।*

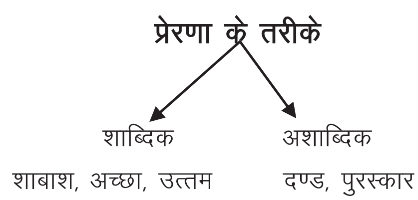

Downloaded From www.dietmathura.org

वास्तव में प्रेरणा वह प्रक्रिया है जो समस्त प्रकार के अधिगम/शिक्षण को प्रारम्भ करती है, जारी रखती है और पूरा होने तक चलती रहती है। शिक्षक को चाहिए कि वह प्रेरक तत्वों द्वारा अधिगम को रुचिकर बनाये ताकि प्रभावी सम्प्रेषण संभव हो सके। एक बार प्रेरित होने के बाद सीखने की प्रक्रिया तीव्र हो जाती है और इसी में शिक्षण की सफलता निहित है।

आप दौड़ में प्रथम स्थान पर आये, आपको ट्राफी मिली और आपने एक के साथ बुरा बर्ताव किया, आपको दण्ड मिला। दोनों के परिणाम/प्रभाव के बारे में सोचें।

रुचि का सिद्धान्त– चर्चा करें– आपने संस्कृत, विज्ञान विषय ही क्यों लिया? क्योंकि ये विषय आपको अच्छे लगते थे, इसके पढ़ने, समझने में आपको बोरियत नहीं होती थी। स्पष्ट है जिस कार्य में हमारा मन लगे, यानि उसमें हमारी रुचि है। रुचि के सिद्धान्त का भी सार यही है कि शिक्षण कार्य ऐसा हो कि सीखने वाला उसे तन्मय होकर सीखे। शिक्षक शिक्षण सामग्री को इस तरीके से प्रस्तुत करे कि कक्षागत अनुशासन बना रहे और अधिगमकर्ता सीखने के प्रति सक्रिय रहे।

रुचिपूर्ण शिक्षण की विधियां
- जिज्ञासा
- सहसम्बन्ध
- पाठ्य सहायक सामग्री

स्वयं करें व सीखें
- आप अपनी कक्षा का वातावरण किस प्रकार रुचिकर बनायेंगे ताकि सीखना प्रभावी हो सके ?

आप स्वयं विचार करें एक पाठ आपको चित्रों, मॉडलों, कहानियों के द्वारा और एक पाठ मात्र व्याख्या करके समझाया गया। कौन सा प्रभावी रहा? किसको आप अच्छी तरह समझ पाये? जाहिर है पहले तरीके से पढ़ाये गये तरीके से। यही तरीका ही रुचि का सिद्धान्त है।

- रुचि प्रच्छन्न ध्यान है तथा ध्यान रुचि का क्रियात्मक रूप हैं– **मैक्डूगल**

निश्चित उद्देश्य का सिद्धान्त अगर हम सबको यह ज्ञान न हो कि हम यहाँ एक साथ क्यों एकत्रित हुए हैं और क्या अर्जित करने आयें है तो यह केवल और केवल समय की बरबादी है। ये क्यों और क्या का जवाब है कि हमारी समस्त क्रियाओं का कोई न कोई मकसद होता है, उसी प्रकार शिक्षण भी एक सोद्देश्यपूर्ण क्रिया है उसका लक्ष्य है अधिगमकर्ता के व्यवहार में उतरोत्तर सुधार।

जब हम शिक्षण करते हैं तो प्रत्येक पाठ का कोई न कोई लक्ष्य होता है और उसी दिशा में शिक्षण कार्य किया जाय तो शिक्षण प्रभावी होता है। जैसे कविता को पढ़ाना है इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए विषयवस्तु की योजना बनानी होगी उसका प्रस्तुतीकरण करना होगा, अधिगम सामग्री का निर्माण एवं प्रदर्शन करना होगा तभी कविता शिक्षण का लक्ष्य पूरा होगा और सम्प्रेषण गुणवत्तापरक माना जायेगा।

पुनरावृत्ति बिन्दु

- करके सीखना– क्रियाशीलता का मुख्य आधार है।
- प्रोजेक्ट, डाल्टन, बेसिक शिक्षा आदि पद्धतियां क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर आधारित है।
- शिक्षण में प्रेरक तत्वों को शामिल करने को प्रेरणा का सिद्धांत कहते हैं।
- पाठ्यवस्तु में एकाग्रता रुचि के सिद्धान्त पर आधारित है।

Downloaded From www.dietmathura.org

बोध प्रश्न

- स्वयं करने एवं रुचि का सीखने पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
- शिक्षण में प्रेरणा क्यों जरूरी है ?

चर्चा करें–

15 अगस्त या 26 जनवरी को मनाने के उद्‌देश्यों का निर्धारण किस प्रकार करेंगे।

नियोजन का सिद्धान्त– शिक्षण हो या कोई भी कार्य हो उसका पूरा होना इस बात पर निर्भर करेगा कि योजना बनाकर किया गया या नहीं। आप स्वयं चर्चा करें कि एक कमरा जिसमें किताबे, मेज, कुर्सी, कपड़े, जूते यथास्थान क्रम से रखें हों और एक कमरा जिसमें सामान बेतरतीब फैला हो किस स्थान पर आपका मन कार्य में लगेगा, जाहिर है उस स्थान पर जहाँ सब कुछ क्रमबद्ध तथा नियोजित हो, इसे ही योजना का सिद्धान्त कहते हैं।

शिक्षण करते समय प्रत्येक शिक्षक को अपनी शिक्षण योजना बनानी चाहिए, उसके प्रस्तुतीकरण का क्रम ज्ञात हो ताकि सीखने वाला भ्रमित न हो कि गुरू जी ने आज क्या पढ़ाया था ? वर्तमान शिक्षण कार्य में प्रत्येक प्रशिक्षु को पाठ योजना बनाने एवं उसके अभ्यास पर जोर दिया जाता है। मान लीजिए आपके। सन्धि पढ़ानी है और आपने सन्धि की परिभाषा, उदाहरण देने के बजाय शब्द–अर्थ समझाने लगें और उसी में सारा कालांश बीत जाय तो आपका शिक्षण नियोजित नहीं कहा जायेगा।

इन्हें भी जानें–

योजना करके कार्य से–

- समय, श्रम की बचत होती है।
- शिक्षण अधिगम क्रमबद्ध होता है।
- शिक्षण का उद्‌देश्य पूरा होता है।

चयन का सिद्धान्त – हम बीमार हैं, तो अगर हमें डॉक्टर के पास जाना हो और विद्यालय भी जाना हो तो इस समय जो ज्यादा जरूरी होगा उसी को करेंगे ताकि दूरगामी प्रभाव हमारे पक्ष में हो। इसी स्थिति को चयन कहते हैं। शिक्षण भी एक जटिल कार्य है। इसमें हमें विभिन्न विषयों को पढ़ाना–समझाना होता है। शिक्षक पर यह गुरुतर दायित्व होता है कि वह कौन सा विषय पहले पढ़ाये, कौन सा बाद में, किस सामग्री को कैसे प्रस्तुत करे, कौन सी कक्षागत समस्याओं को पहले हल करे ताकि शिक्षण अधिगम सफल हो सके। अतएव चयन के सिद्धान्त का अनुसरण जरूरी है।

मान लीजिए कक्षा में सरल विषय पहले कालांश में ढेर–सारे चित्रों, क्लिपों, मॉडलों से समझा दिये जायें। और कठिन विषय–गणित, संस्कृत मात्र व्याख्यान विधि से कक्षा के अन्तिम कालांश में पढ़ाये जायें। **आप चर्चा करें**– क्या प्रभाव होगा? क्या जटिल विषय समझ में आयेगा? इसीलिए चयन की जरूरत है ताकि शिक्षण बोझिल न लगे।

रायबर्न– शिक्षक के अच्छे चयन की योग्यता पर उसके कार्य की सफलता निर्भर करती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

पुनरावृत्ति बिन्दु

- ज्ञान का स्वरूप अथाह सागर के समान है, शिक्षण में चयन जरूरी है।
- उद्देश्य हीन शिक्षण कभी सफल नहीं होता है।
- चयन, उद्देश्य के साथ–साथ शिक्षण की योजना बनानी चाहिए।

बोध प्रश्न

- शिक्षण का उद्देश्यपूर्ण होना क्यों जरूरी है ?
- चयन के सिद्धांत में नियोजन का क्या योगदान है ?

वैयक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त

आपने देखा होगा कुछ लोग काले–कुछ गोरे होते हैं, कुछ लोग किसी तथ्य को जल्दी समझ लेते है कुछ लोग देर में, कुछ अपनी बात चिल्ला–चिल्लाकर सब जगह कह देते हैं और कुछ उपयुक्त समय पर भी अपने को व्यक्त नहीं करते आखिर ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए हर व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न है। उसमें कोई समानता नहीं । न रूप–रंग की, न आकृति की, न बनावट में और न ही बुद्धि में। यही भिन्नता ही वैयक्तिक भिन्नता कहलाती है।

शिक्षण कार्य में यदि इस भिन्नता को ध्यान में न रखा जाय तो अधिगम को गुणवत्तापरक नहीं कहा जा सकता। शिक्षक हमेशा वैयक्तित्क भिन्नता का ख्याल रखें, उसके अनुसार शिक्षण को नियोजित करें अन्यथा शिक्षण कुछ छात्रों की समझ में आयेगा और कुछ की नहीं।

स्वयं चर्चा करें

हम विचार करें कक्षा के सभी बच्चों को एक ही गुरू ने गणित पढ़ाया, पर सभी का निष्पादन अलग–अलग क्यों रहा ?

लोकतन्त्रीय व्यवहार का सिद्धान्त– इस सिद्धान्त का मूल तथ्य है–समानता और सहभागिता। यदि कक्षा में कुछ विद्यार्थी शिक्षक के बहुत करीब होते हैं कुछ से शिक्षक बिल्कुल उदासीन रहता है, जो प्रिय हैं उन्हें अनुशासन भंग पर भी दण्ड नहीं मिलता जो प्रिय नहीं उन्हें दण्ड का भागी होना पड़ता हैं। इस कक्षा को हम लोकतंत्रीय कक्षा नहीं कह सकते और न ही शिक्षक–व्यवहार को समानता का व्यवहार कह सकते हैं।

> **सोचें और बतायें**
> - एक शिक्षक के रूप में कक्षा के सभी बच्चों के साथ आपका व्यवहार कैसा होना चाहिए ?

शिक्षक हमेशा ध्यान रखे कि वह कक्षा के सभी बच्चों का शिक्षक है, सभी के व्यवहार का परिमार्जन उसका मकसद है, सभी छात्रों के साथ समानता का व्यवहार करें। लोकतंत्रीय सिद्धांत कहता है कि कक्षा शिक्षण शिक्षार्थियों की सहभागिता पर आधारित हो, उनकी क्रियाशीलता से पाठ्यवस्तु पढ़ायी जाये।

Downloaded From www.dietmathura.org

जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा ही मानव जीवन को उन्नत बनाया जा सकता है, इसलिए **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005** में शिक्षा को जीवन से जोड़ने की बात पर जोर दिया गया है। शिक्षा देने का कार्य शिक्षण के माध्यम से होता है, शिक्षक को किसी भी पाठ को पढ़ाते समय उन तथ्यों, पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो विद्यार्थी को उसके जीवन की क्रिया के साथ जोड़ते हैं। यह सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर नया ज्ञान या कौशल बालक के जीवन का स्थायी अंग बन जाता है और वह इस ज्ञान का प्रयोग जीवन में आने वाली परिस्थितियों को सुलझाने में करता है।

गतिविधि

आप सबने पर्यावरण, भूगोल, सामाजिक विषय का ज्ञान अर्जित किया। उस ज्ञान का उपयोग अपने आस–पास के स्थान को स्वच्छ बनाने के लिए कैसे करेंगे– ....

....।

स्वयं चर्चा करें–

बच्चा जब स्कूल में प्रवेश करता है तो वह स्कूल की तुलना अपने घर के वातावरण से क्यों करता है?

शिक्षण में केवल जीवन से ही नहीं वरन एक विषय का दूसरे विषय से सह सम्बन्ध भी जरूरी है जैसे– अर्थशास्त्र का गणित से, गृहविज्ञान और जीवविज्ञान, एक भाषा का दूसरी भाषा से।

पुनरावृति बिन्दु

- प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे से बिल्कुल भिन्न है।
- लोकतंत्र का मूल भाव समानता तथा सहभागिता है।
- सफल शिक्षण वही है जो व्यक्ति के जीवन से जुड़ा हो।

बोध प्रश्न

- शिक्षक को कक्षा शिक्षण में वैयक्तिक भिन्नता का ध्यान क्यों रखना चाहिए ?
- छात्र सहभागिता के सिद्धान्त का मनोवैज्ञानिक आधार क्या है ?

आवृत्ति का सिद्धान्त

आप सभी ने यह जुमला अक्सर सुना होगा– ***"करत– करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान"*** इसका आशय है जिस कार्य को हम बार–बार करते हैं वह कार्य आसान हो जाता है। शिक्षण में जिस पाठ को, तथ्य को हम बार–बार पढ़ते–पढ़ाते हैं उस पर हमारी पकड़ अच्छी होती है और उसमें रुचि व ध्यान भी केन्द्रित होता है। आप स्वयं विचार करें कि गणित के सूत्र हों या केमिस्ट्री के समीकरण, इनका हम अगर बारम्बार अभ्यास करते थे, लिखते थे तो वह भी हमारे लिए सरल हो जाता था और वह ज्ञान आज भी स्थायी हैं। बार–बार पाठ को दोहराने से सीखे हुए पाठ के प्रति विस्मरण की संभावना कम होती जाती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

आवृत्ति के तरीके

- गृहकार्य
- मासिक परीक्षा
- छात्रों से पाठ समझाने को कहना

निर्माण व मनोरंजन का सिद्धान्त से लाभ

यह सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि हम सभी में जन्मतः रचनात्मक शक्ति होती है। उसका यदि अवसर दिया जाय तो वह और प्रखर होती जाती है। शिक्षण में भी इस बात का ध्यान देना चाहिए कि जो भी पाठ पढ़ाना हो उसको कक्षा में सीखने वालों की सृजनात्मक क्रियाओं द्वारा विकसित करते हुए पढ़ाया जाय। इसके दो लाभ होंगे– वह पाठ रुचिपूर्ण होगा और अधिगमकर्ता तथा शिक्षक के मध्य अन्तःक्रिया का पर्याप्त अवसर मिलेगा।

निर्माण व मनोरंजन की उपयोगिता

स्वतः अध्ययन का विकास
चिन्तन मनन का विकास

जब तक शिक्षण कार्य में मनोरंजनात्मक क्रियाएं समाहित नहीं होंगी, पढ़ने व पढ़ाने वालों दोनों पर सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा। मान लीजिए हमें गणित में पहाड़ा सिखाना हो तो इसे आप इस रूप में गाकर, कविता का रूप देकर शिक्षण को मनोरंजनात्मक बना सकते हैं कि सीखने वाले बरबस गणित में रुचि लेने लगें–

दो एकम दो– उठो सवेरे मुंह धोलो
दो दुना चार बहुत न खाना आम का अचार
दो तियां छः मीठी–मीठी बात कह
दो चौके आठ– मेले में जाओ करके ठाठ–बाट
ऐसे ही आगे....................................

विभाजन का सिद्धान्त

इसे लघु सोपानों का सिद्धान्त भी कहते हैं। शिक्षण स्वयं में व्यापक प्रक्रिया है। इसको सफल बनाने का सबसे सरल तरीका है इसे विभाजित करके पढ़ाया जाय। शिक्षक को चाहिए पाठ्यवस्तु को विभाजित करके सरल से कठिन की ओर अग्रसर हों ताकि तारतम्यता (क्रमबद्धता) बनी रहे और सम्प्रेषण व्यवहारिक बना रहे। मान लीजिए आपको व्याकरण का ज्ञान देना है तो आप पहले अक्षर ज्ञान देंगे, शब्द बनाना सिखायेंगे, फिर वाक्य कैसे बनाये जाते हैं यह बतायेंगे तब व्याकरणिक दृष्टि से इनका प्रयोग बताएंगे। इससे क्रिया आसानी से समझ में आ जायगी और शिक्षण बोझिल नहीं लगेगा।

Downloaded From www.dietmathura.org

यह सिद्धान्त वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्ण है क्योंकि विभाजन क्रम में आगे बढ़ते हुए शिक्षक को छात्रों के सीखने की गति व स्तर का ज्ञान होता चलता है और वह अपना शिक्षणकार्य उतरोत्तर परिष्कृत भी करता चलता है।

उपर्युक्त चर्चा से हमने जाना

सभी सिद्धान्त एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। इनका अनुपालन सुनिश्चित करने से शिक्षण तो बेहतर होता ही है, शिक्षा में भी गुणात्मक सुधार मिलने लगता है। एक तरीके से ये सिद्धान्त शिक्षण प्रक्रिया को एक प्लेटफार्म प्रदान करते हैं जिस पर चलकर सहजता से गन्तव्य तक पहुँचा जा सकता है।

पुनरावृत्ति बिन्दु

- पढ़ाये गये तथ्यों को बार–बार दोहराने से ज्ञान स्थायी हो जाता है।
- मन में प्रसन्नता हो तो अधिगम की गति तीव्र होती है।
- खण्ड से पूर्ण की ओर बढ़ना मनोवैज्ञानिक है।
- पाठ्य विषय को छोटे–छोटे पदों में बाँटकर पढ़ाने से शिक्षण प्रभावी होता है।

मूल्यांकन

बहुविकल्पीय प्रश्न

दिये गये विकल्पों में से सही का चयन करें–

1. कक्षा में एक शिक्षक की मुस्कान, कहे गये शाबाशी के शब्दों का क्या–प्रभाव होगा–

(1) छात्र हँसेंगे (2) छात्र खेलेंगे

(3) छात्र प्रेरित होंगे (4) इनमें से कोई नहीं

2. प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न है, किस सिद्धान्त के अनुसार सत्य है–

(1) लोकतन्त्रीय व्यवहार का सिद्धान्त (2) चयन का सिद्धांत

(3) आवृत्ति का सिद्धांत (4) वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धांत

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

3. भाषा शिक्षण में आप शिक्षण के किन सिद्धांतों का प्रयोग करेंगे और क्यों ?

4. हर बच्चे की वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षण के अवसरों का किस प्रकार आयोजन करेंगे?

सत्रीय कार्य

विज्ञान विषय से एक पाठ का चयन करें, उसका उद्देश्य योजना बनाकर, रुचिपूर्ण शिक्षण के लिए किये जाने वाले कार्यों की सूची बनायें।

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण के सूत्र (Maxims of Teaching)

"शिक्षण सूत्र शिक्षण प्रक्रिया में विशेष विधियों का ज्ञान कराते हैं जिन्हें ध्यान में रखकर शिक्षण करके शिक्षक अपने छात्रों की उपलब्धि में गुणात्मक सुधार कर सकते हैं।"

प्रमुख शिक्षण बिन्दु

- शिक्षण सूत्र का अर्थ
- शिक्षण सूत्र की परिभाषा
- शिक्षण के विभिन्न सूत्र
- शिक्षण सूत्रों की शिक्षण में उपयोगिता

शिक्षा के कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ही साधन के रूप में शिक्षण का प्रयोग किया जाता है। अच्छे शिक्षण की एक मुख्य विशेषता यह है कि छात्रों को जो भी विषयवस्तु पढ़ायी/सिखाई जाये वे उसे भलीभाँति सीख व समझ लें। उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करना तथा कक्षा में विषय शिक्षण में उनकी रुचि व ध्यान प्राप्त करना अध्यापक की कुशलता पर निर्भर करता है और शिक्षक की कुशलता शिक्षण विधियों, सिद्धान्तों, शिक्षण सूत्रों, छात्रों की क्षमताओं के समुचित ज्ञान पर निर्भर है। इनकी जानकारी व समुचित प्रयोग द्वारा वह अपने शिक्षण तथा सीखने की क्रियाओं को प्रभावी बना सकता है।

चर्चा के बिन्दु

- कक्षा में शिक्षण के समय अध्यापक के सामने क्या समस्यायें आती हैं ?
- शिक्षण में आने वाली समस्याओं को वह कैसे दूर कर सकता है ?

शिक्षण सूत्र का अर्थ– (Meaning of Teaching Maxims)

कक्षा कक्ष में प्रत्येक विषय शिक्षक के सामने महत्वपूर्ण प्रश्न होते हैं कि–

- मूल पाठ का प्रारम्भ कैसे किया जाये ?
- शिक्षण कब और किस क्रम में किया जाये ?
- बच्चों का ध्यान कैसे आकर्षित किया जाये ?
- पाठ व विषय में उनकी रुचि कैसे उत्पन्न की जाये ?
- शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग कब, कैसे और कहाँ पर किया जाये ?

शिक्षकों की उपरोक्त कठिनाइयों का समाधान करने के लिए मनोवैज्ञानिकों व शिक्षाशास्त्रियों ने अपने अनुभवों व विचारों को सूत्र रूप में प्रस्तुत किया है जिन्हें शिक्षण के सूत्र कहा जाता है। ये सूत्र उस मार्ग की ओर संकेत करते हैं जिस पर चलकर शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया सुगम, रुचिकर, प्रभावशाली व वैज्ञानिक बन जाती है। ये सूत्र 'बाल प्रकृति' पर आधारित हैं। अतः प्रत्येक अध्यापक को शिक्षण कला में सफलता व दक्षता प्राप्त करने के लिए अपने विषयज्ञान के साथ–साथ शिक्षण सूत्रों का ज्ञान होना भी

Downloaded From www.dietmathura.org

आवश्यक है कि किस सूत्र का प्रयोग उसे किस स्थान पर और कैसे करना है ताकि उसके छात्र विषयवस्तु को सरलता से समझ सकें।

> **और भी जानें–**
> **कामेनियस** एवं **हरबर्ट स्पेन्सर** आदि ने अपने अनुभवों के आधार पर शिक्षण के कुछ सामान्य नियम निर्धारित किये थे, जिन्हें बाद में शिक्षण सूत्रों के नाम से जाना जाने लगा।

शिक्षण सूत्र की परिभाषा (Definition of Teaching Maxims)

रेमण्ट के अनुसार– '' शिक्षण सूत्र पथ प्रदर्शन करते हैं जिसमें सिद्धांत से व्यवहार में सहायता के लिए अपेक्षा की जाती है।''

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार– ''सूत्र एक आम सच्चाई है जो विज्ञान एवं अनुभव से ली जाती है। ये सूत्र अध्यापक को सुचारु रूप से शिक्षण में मदद करते हैं। विशेष रूप से प्रारम्भिक कक्षाओं में पठन–पाठन की क्रिया आसान हो जाती है, क्योंकि ये सभी सूत्र छात्र को ध्यान में रखकर बनाये गये हैं।''

उपर्युक्त परिभाषाओं पर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि 'शिक्षकों द्वारा अध्ययन–अध्यापन को प्रभावशाली बनाने के लिए एवं छात्रों को अध्ययन के प्रति जागरुक तथा क्रियाशील बनाने हेतु जो तकनीकें एवं विधियां प्रयोग में लाई जाती हैं , वह शिक्षण सूत्र कहलाती हैं।''

> ***विचार करें और बताएं–*** *शिक्षक को शिक्षण सूत्रों को ध्यान में रखकर शिक्षण क्यों करना चाहिए ?*

शिक्षण के विभिन्न सूत्र (Various maxims of Teaching)

कक्षा शिक्षण में शिक्षकों द्वारा विभिन्न शिक्षण सूत्रों का प्रयोग किया जाता है। ये सूत्र निम्नलिखित हैं।

> **शिक्षण सूत्र**
> - सरल से जटिल की ओर
> - ज्ञात से अज्ञात की ओर
> - स्थूल से सूक्ष्म की ओर
> - पूर्ण से अंश की ओर
> - अनिश्चित से निश्चित की ओर
> - प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर
> - विशिष्ट से सामान्य की ओर
> - विश्लेषण से संश्लेषण की ओर
> - मनोवैज्ञानिक क्रम से तर्कसंगत की ओर
> - अनुभव से युक्तियुक्त की ओर
> - प्रकृति का अनुसरण

1. सरल से जटिल की ओर (From simple to complex)

इस सूत्र का आशय यह है कि छात्रों को पहले सरल व फिर जटिल बातों की जानकारी दी जाये जिससे पाठ व विषय में उनकी रुचि व ध्यान लगा रहे। यह क्रम बाल विकास के अनुकूल व मनोवैज्ञानिक है क्योंकि बच्चा आयु बढ़ने व मानसिक विकास के साथ जटिल बातों को भी समझने लगता है। यदि अध्यापक प्रारम्भ में ही कठिन बातों/तथ्यों को छात्रों को बताने लगें तो वे उसे समझने में असमर्थ रहेंगे। इससे शिक्षक का प्रयास व्यर्थ हो जायेगा।

> ***शिक्षक सदैव ध्यान रखें–***
> - हमारा कार्य और हमारे पाठ हमारे छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होने चाहिए अर्थात् सरल या कठिन बालकों की दृष्टि से होना चाहिए न कि शिक्षक के अनुसार।

Downloaded From www.dietmathura.org

उदाहरणार्थ

- हासिल के जोड़ व घटाना सिखाने से पहले बच्चों को गिनती व साधारण जोड़, घटाना सिखाना चाहिए।
- हमारे देश का इतिहास छोटी–छोटी कहानियों के रूप में बच्चों को सरल प्रतीत होगा परन्तु युद्धों, घटनाओं, सन्धियों व शासन प्रबन्ध के विस्तृत रूप में यह अत्यन्त कठिन लगेगा।

2. ज्ञात से अज्ञात की ओर (From known to unknown)

इस सूत्र के अनुसार शिक्षक को बालकों के पूर्व ज्ञान को जाँचकर उसी के आधार पर उन्हें नया ज्ञान देना चाहिए अर्थात् उसे पहले वे बातें बतानी चाहिए जिन्हें वह जानता है फिर उस विषयवस्तु पर आना चाहिए जिन्हें वह नहीं जानता क्योंकि सर्वथा नवीन तथ्य बच्चे के लिए कठिन होते हैं। किसी पाठ में छात्रों की रुचि व ध्यान तभी संभव है जब उसमें जानकारी व नयापन दोनों सम्मिलित हों। अतः शिक्षक को पढ़ाने से पूर्व छात्रों का पूर्वज्ञान अवश्य जान लेना चाहिए।

ध्यान रखें– जिस बात को हम जानते हैं वह हमारे लिए सरल और जिस बात को हम नहीं जानते हैं, वह बात हमारे लिए कठिन होती है।

उदाहरणार्थ– भाषा शिक्षण में वर्णमाला की जानकारी कराते समय प्रत्येक वर्ण से सम्बन्धित वस्तु की जानकारी करायें तत्पश्चात् उसी वर्ण से सम्बन्धित एक से अधिक वस्तुओं की जानकारी कराई जा सकती है। जैसे– क से कमल, कलम, कलश, कबूतर तथा ख से खरगोश, खत, खड़ाऊं आदि

गणित में पहाड़ा सिखाने से पहले छात्रों को गिनती का ज्ञान होना चाहिए तभी वह पहाड़ा सुगमता से सीख सकेंगे।

चर्चा करें–

- बच्चों को पहले कठिन विषयवस्तु सिखाया जाना चाहिए या सरल ?
- सीखने सिखाने में बच्चों के पूर्व अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए। यदि हाँ तो क्यों ?

3. स्थूल से सूक्ष्म की ओर (From concrete to abstract)

बच्चों के शारीरिक विकास के साथ–साथ उनका मानसिक विकास भी होता है। शैशवावस्था में वह सूक्ष्म/अमूर्त वस्तुओं के बारे में नहीं जानता परन्तु स्थूल/मूर्त पदार्थों को सरलता से जान लेता है। आयु बढ़ने के साथ–साथ उसमें सूक्ष्म भावों/तथ्यों/वस्तुओं को समझने की क्षमता का विकास होता जाता है। अतः शिक्षकों को छोटे बच्चों को पढ़ाते समय प्रारम्भ में केवल मूर्त वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए और उनकी सहायता से सूक्ष्म बातों को बताना चाहिए।

- **हरबर्ट स्पेन्सर** ने इस सूत्र को अपनाने पर विशेष बल दिया है। उनके अनुसार– ''हमारे पाठ का प्रारम्भ स्थूल वस्तुओं से किया जाये और उसका अन्त सूक्ष्म बातों से हो।''
- इस सूत्र को मूर्त से अमूर्त की ओर के नाम से भी जाना जाता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

उदाहरणार्थ

- गणित में जोड़, घटाना सिखाने के लिए गेंद, गोली, कंकड़ आदि का प्रयोग किया जा सकता है।
- भूगोल में नदी, पर्वत, समुद्र, झीलों, तालाबों, कुओं आदि का ज्ञान प्रत्यक्ष प्रदर्शन (भ्रमण) या फिर मॉडल, चित्र, चार्ट आदि के माध्यम से सरलतापूर्वक कराया जा सकता है।

4. पूर्ण से अंश की ओर (From whole to part)

इस सूत्र का आधार गेस्टॉल्टवाद (अवयवीवाद) है। गेस्टॉल्ट मनोवैज्ञानिकों के अनुसार हम किसी वस्तु को उसके पूर्ण रूप में ही देखते हैं। बालक के सामने कोई वस्तु आने पर वह सर्वप्रथम पूर्ण वस्तु को ही देखता, जानता व समझता है उसके विभिन्न अंगों/अंशों को नहीं। जैसे– बालक सर्वप्रथम किसी वृक्ष को उसके पूर्ण रूप में ही देखता है उसके भागों के बारे में अलग–अलग नहीं। शिक्षक को उसके इस पूर्व ज्ञान से लाभ उठाकर उसे वृक्ष के अंगों जड़, तना, डाली, पत्ती, फल, फूल आदि के बारे में जानकारी देना चाहिए।

इसे भी जानें–

यह सूत्र काव्य शिक्षण में विशेष रूप से लागू होता है जिसमें पहले सम्पूर्ण कविता का पाठ करना उचित होता है तत्पश्चात् एक–एक पंक्ति का, क्योंकि प्रारम्भ में एक–एक पंक्ति पढ़ाने से कविता की मूल भावना बच्चों की समझ में नहीं आती है।

उदाहरणार्थ

- कम्प्यूटर का ज्ञान कराने के लिए पहले कम्प्यूटर व फिर उसके भागों जैसे– मॉनीटर, की बोर्ड, सी0पी0यू0, माउस, प्रिन्टर का ज्ञान कराया जाये।
- भूगोल में पहले भारत का मानचित्र दिखाकर फिर राज्यों का ज्ञान कराया जाये।

स्वयं करने की बारी–

- भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विषय से ऐसे प्रकरणों की पहचान करें जिनमें स्थूल से सूक्ष्म व पूर्ण से अंश शिक्षण सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है।

5. अनिश्चित से निश्चित की ओर (From Indefinite to Definite)

बालकों के बौद्धिक विकास का क्रम अनिश्चित से निश्चित की ओर होता है। मानसिक विकास (ज्ञानेन्द्रियों के विकास) व अनुभव के साथ–साथ उसके विचारों में स्पष्टता व निश्चित आती है। प्रारम्भ में बच्चों को किसी घटना, तथ्य, वस्तु का स्पष्ट व निश्चित ज्ञान नहीं होता है। अनुभव, परिपक्वता के अभाव व कल्पना की अधिकता के कारण वह उनके बारे में अपने मन में कुछ विचार बना लेते हैं जो अस्पष्ट, अनिश्चित व कई बार गलत भी होते हैं। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह उनके अनिश्चित ज्ञान को स्पष्ट व निश्चित करे तथा गलत धारणाओं/जानकारियों में भी सुधार करें।

Downloaded From **www.dietmathura.org**

www.dietmathura.org

उदाहरणार्थ– किसी देश/प्रदेश, प्रमुख स्थल व वहां की विशिष्टताओं से सम्बन्धित छात्रों के अस्पष्ट व अनिश्चित ज्ञान को शिक्षक वहाँ के मानचित्र, चित्र, मॉडल, चार्ट व उदाहरणों के माध्यम से निश्चित व स्पष्ट कर सकता है।

6. प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर (From Seen to Unseen)

इस सूत्र के अनुसार छात्रों को सबसे पहले उनके द्वारा देखी गई वस्तुओं के बारे बताना चाहिए तत्पश्चात् उन वस्तुओं के बारे में, जिन्हें वह नहीं देख सकता है। अर्थात् उन्हें पहले उनके वर्तमान की जानकारी कराई जाये फिर उसी की सहायता से भूत या भविष्य की, क्योंकि जो वस्तुएं हमारे सामने होती हैं उनका ज्ञान हम आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। अतः शिक्षण के समय शिक्षकों को छात्रों को अप्रत्यक्ष वस्तुओं/तथ्यों/घटनाओं की जानकारी देने के लिए पहले प्रत्यक्ष वस्तुओं, घटनाओं के उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।

उदाहरणार्थ

- भाषा में चित्र पठन व अन्य विषयों में सहायक सामग्री (चार्ट, चित्र, मॉडल, मूर्त वस्तुओं) के माध्यम से बच्चों को अप्रत्यक्ष वस्तुओं के बारे में सरलता से जानकारी दी जा सकती है।
- सामाजिक विषय में ग्लोब, मॉडल, चित्र आदि के माध्यम से संसार के विविध भागों के बारे में बताया जा सकता है।

7. विशिष्ट से सामान्य की ओर (From Particular to General)

इस सूत्र के अनुसार अध्यापक को छात्रों के सामने पहले किसी प्रकरण से सम्बन्धित कई उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए फिर उन्हीं की सहायता से सिद्धान्त व नियम स्पष्ट करना चाहिए। स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करके उन्हें निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करना चाहिए। यह सूत्र बालकों को निरीक्षण, परीक्षण, विचार, चिन्तन आदि के अवसर प्रदान करता हैं। अतः इसमें बच्चे रुचिपूर्वक सीखते हैं जिससे प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है। विज्ञान, गणित तथा व्याकरण शिक्षण में यह सूत्र विशेष उपयोगी है।

> **इसे भी जानें–**
>
> - इस सूत्र को 'दृष्टान्त से सिद्धान्त की ओर' ले जाना भी कहते हैं।
> - आगमन विधि में भी इसी सूत्र का प्रयोग किया जाता है अर्थात्, पहले उदाहरण प्रस्तुत करके फिर निष्कर्ष पर पहुंचते हैं।

उदाहरणार्थ

- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण पढ़ाते समय पहले इनके एक से अधिक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए फिर उन्हीं उदाहरणों को समेकित करते हुए इनकी परिभाषा को स्पष्ट करना चाहिए।
- संस्कृत/हिन्दी में सूक्ति एक विशिष्ट विचार से सम्बन्धित होती है परतु उसकी व्याख्या सामान्य सन्दर्भों में की जाती है।

> ***प्रशिक्षुओं हेतु–*** *विज्ञान, गणित व व्याकरण में 'विशिष्ट से सामान्य की ओर' शिक्षण सूत्र को उदाहरण के माध्यम से अपने प्रशिक्षण कक्ष में प्रस्तुत करें।*

Downloaded From www.dietmathura.org

8. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर (From Analysis to synthesis)

विश्लेषण बालक को किसी बात को भली प्रकार समझने में सहायक होता है तो संश्लेषण उस बात के ज्ञान को निश्चित रूप प्रदान करता है। इस सूत्र के अनुसार किसी घटना या तथ्य की जानकारी पहले समग्र रूप में कराकर फिर उसके विविध भागों को व्याख्या व विश्लेषण द्वारा स्पष्ट किया जाना चाहिए तत्पश्चात उन भागों या खण्डों को आपस में जोड़कर पूरी जानकारी कराकर निष्कर्ष तक पहुंचना चाहिए। शिक्षण में विश्लेषण व संश्लेषण दोनों आवश्यक हैं।

> एक शिक्षाशास्त्री के अनुसार– ''किसी समस्या के ऐसे जीवित टुकड़े करना कि जिनके जोड़ने पर समस्या का हल तैयार हो जाये, विश्लेषण कहलाता है और खण्डों में प्राप्त ज्ञान को जब जोड़कर समझाया जाता है तो उसे संश्लेषण कहते हैं।''

उदाहरणार्थ

- छात्रों को यदि उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों की जानकारी देना है तो सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश फिर उसके सभी जिलों की स्थिति व विशेषताओं की जानकारी करायी जा सकती है और अन्त में सभी को पुनः समेकित करते हुए उत्तर प्रदेश की जानकारी की जा सकती है।

9. मनोवैज्ञानिक क्रम से तर्कसंगत की ओर (From Psychological to Logical)

शिक्षा में बाल मनोविज्ञान के महत्व के कारण यह माना जाता है कि बालक की शिक्षा उसकी रुचियों, रूझानों, क्षमताओं व जिज्ञासाओं के अनुसार प्रदान करनी चाहिए और जैसे–जैसे उसके ज्ञान का विकास होता जाये, उसे विषय का तार्किक व क्रमबद्ध ज्ञान प्रदान किया जाये। जिससे उनकी रुचि व ध्यान पाठ व विषय में बना रहे।

> **ध्यातव्य बिन्दु**
>
> ''छोटी कक्षाओं के लिए हमें मनोवैज्ञानिक क्रम का प्रयोग करना चाहिए और ज्यों–ज्यों बालक ऊँची कक्षाओं में पहुँचते जायें त्यों–त्यों हमें तर्कात्मक क्रम का प्रयोग करते जाना चाहिए।'' **एस0के0 अग्रवाल**

उदाहरणार्थ

- भाषा में शिक्षण का तार्किक क्रम वर्ण एवं ध्वनि के पश्चात् वाक्य सिखाने का है जबकि मनोवैज्ञानिक क्रम के अनुसार पहले वाक्य फिर वर्ण व ध्वनि के बारे में जानकारी करानी चाहिए।

बच्चों को इतिहास में मुगलकालीन स्थापत्य की जानकारी देना है तो मनोवैज्ञानिक विधि के अनुसार बच्चों को पहले स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों के चित्रों को दिखाकर चर्चा करें जिससे वे पाठ में रुचि लें फिर तार्किक ढंग से उनकी स्थापत्य सम्बन्धी विशेषताओं को बताएं।

10 अनुभव से युक्तियुक्त की ओर (From Empirical to Rational)

अनुभूत ज्ञान वह होता है जिसे बालक अपने निरीक्षण व अनुभव द्वारा प्राप्त करता है। उसके इस अपूर्ण व अनिश्चित ज्ञान को वास्तविक व स्थायी बनाने के लिए उसे तर्कयुक्त बनाना चाहिए। अल्पायु के बालकों में तर्क व विचार के प्रयोग की क्षमता बड़ों की अपेक्षा कम होती है। उनकी जानकारियों का आधार उनका अपना अवलोकन व स्वानुभव होता है परन्तु इन अनुभवों के कारणों को खोजने में बाल मस्तिष्क

Downloaded From www.dietmathura.org

असफल रहता है। अतः शिक्षक को बच्चों के अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान को विविध विधियों/सामग्रियों के प्रयोग द्वारा तर्क संगत व युक्तियुक्त बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

उदाहरणार्थ–

- सूर्योदय व सूर्यास्त को वह प्रतिदिन देखता है, गर्मी के बाद बरसात फिर जाड़ा आता है, सर्दियों में कोहरा भी वह देखता है, बरसात में जोरदार बारिश वह प्रतिवर्ष देखता है परन्तु ऐसा क्यों होता है और इसके क्या कारण हैं ? इसे वह नहीं समझ पाता। अतः शिक्षक को कारण सहित व उदाहरण, टी0एल0एम0 के माध्यम से उनकी जिज्ञासाओं का समाधान करना चाहिए जिससे उसका अनुभवजन्य ज्ञान युक्तियुक्त बन सके।

11. प्रकृति का अनुसरण (Follow to Nature)

इस सूत्र का आशय है कि बालक की शिक्षा दीक्षा उसकी प्रकृति के अनुसार होनी चाहिए। शिक्षक को उन्हें सिखाते समय उनकी आयु, मानसिक स्तर, क्षमताओं, रुचियों को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु, पाठ्यपुस्तक, शिक्षण विधि, शिक्षण अधिगम सामग्री व गतिविधियाँ सभी कुछ बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास व आवश्यकताओं के अनुरूप होने चाहिए। यदि हमारी शिक्षा व शिक्षण बाल विकास में बाधक बनते हैं तो वह अनुचित, अप्रासंगिक व अमनोवैज्ञानिक हैं। अतः शिक्षक के रूप में हमें इस सूत्र का अनुसरण करके छात्रों के स्वाभाविक विकास में सहायता करने को तत्पर रहना चाहिए।

शिक्षण सूत्रों की शिक्षण में उपयोगिता (Utility of Teaching Maxims in Teaching)

शिक्षण के द्वारा ही शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है। शिक्षा का महत्वपूर्ण और अन्तिम लक्ष्य छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। इस दृष्टि से शिक्षण का मुख्य उद्देश्य अधिगम है। छात्रों में अधिगम प्राप्ति को सुनिश्चित करना शिक्षक का प्रमुख दायित्व है। अपने दायित्व के कुशलतापूर्वक निर्वहन हेतु शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह शिक्षण की कला में दक्ष व निपुण हो।

शिक्षण सूत्र इस कार्य में उसके लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। इनके प्रयोग द्वारा वह अपने शिक्षण को सरल, रुचिकर बोधगम्य व बालोपयोगी बना सकता है। साथ ही इनके प्रयोग द्वारा वह बच्चों की सम्प्राप्ति को अपेक्षित स्तर तक पहुंचा सकता है।

अध्यापन की सफलता हेतु प्रत्येक शिक्षक को इनकी जानकारी व प्रयोग में दक्षता अनिवार्य है। इससे कम समय व श्रम में वह बच्चों को सीखने हेतु प्रेरित करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

मूल्यांकन

वस्तुनिष्ठ (बहुविकल्पीय) प्रश्न

1. 'छात्र की शिक्षा सर्वदा स्थूल वस्तुओं तथा तथ्यों से होनी चाहिए, शब्दों, परिभाषाओं तथा नियमों से नहीं।' यह परिभाषा है–

   (i) अरस्तू (ii) पेस्टालॉजी

   (iii) महात्मा गाँधी (iv) हरबर्ट स्पेन्सर

2. कौन सा शिक्षण सूत्र गेस्टाल्ट मनोविज्ञान पर आधारित है–

   (i) सरल से जटिल की ओर (ii) ज्ञात से अज्ञात की ओर

   (iii) पूर्ण से अंश की ओर (iv) विश्लेषण से संश्लेषण की ओर

लघुउत्तरीय प्रश्न

3. शिक्षण सूत्र का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसकी उपयुक्त परिभाषा दीजिए।
4. शिक्षण के किन्हीं दो सूत्रों को उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
5. ज्ञात से अज्ञात की ओर शिक्षण सूत्र का क्या आशय है ?
6. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर शिक्षण सूत्र का प्रयोग विज्ञान शिक्षण में आप कैसे करेंगे ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

7. शिक्षण सूत्र किसे कहते हैं ? शिक्षण के प्रमुख सूत्रों को उपयुक्त उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
8. शिक्षण सूत्रों की शिक्षण में क्या उपयोगिता है? स्पष्ट कीजिए।

प्रशिक्षुओं हेतु स्वयं करने के लिए

कक्षा में पढ़ाते समय मूर्त वस्तुओं के प्रयोग से क्या–क्या लाभ हैं ?

....

....

.... ।

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण प्रविधियाँ

शिक्षण प्रविधियाँ
• प्रश्नोत्तर प्रविधि
• विवरण प्रविधि
• वर्णन प्रविधि
• व्याख्यान प्रविधि
• स्पष्टीकरण प्रविधि
• कहानी कथन प्रविधि
• निरीक्षण एवं अवलोकन प्रविधि
• उदाहरण प्रविधि
• खेल/गतिविधि प्रविधि
• प्रयोगात्मक कार्य प्रविधि
• वाद–विवाद प्रविधि
• कार्यशाला प्रविधि
• भ्रमण प्रविधि
• समूह चर्चा प्रविधि

शिक्षण प्रविधियाँ

हम सभी के विद्यालय– महाविद्यालय स्तरों पर पढ़ाई करते समय कुछ पसन्दीदा अध्यापक रहे होंगे। उनकी पढ़ाई गयी विषयवस्तु हमें आज तक याद है। जानते हैं ऐसा क्यों? क्योंकि उनके पढ़ाने का तरीका, समझाने का ढ़ंग इतना अच्छा तथा सरल था कि उन पाठों को **हम** आज अपने छोटों को आसानी से समझा लेते हैं। ये पढ़ाने का तरीका ही शिक्षण विधि है।

शिक्षण विधि वास्तव में शिक्षण प्रक्रिया की शुरूआत है। शिक्षण कैसे हो इसका उत्तर शिक्षण विधि द्वारा ही प्राप्त होता है। पाठ्यवस्तु कितनी समझ में आयी और कितनी और अच्छी तरीकों से समझायी जा सकती है। इसका निर्धारण शिक्षण विधि द्वारा किया जाता है।

परिभाषा–थ्रिंग के अनुसार–"शिक्षक शिक्षण प्रविधियों के द्वारा अपने छात्रों को कार्य करने के योग्य बनाता है और स्वयं यह दर्शाने में लगा रहता है कि इस कार्य को कैसे किया जायेगा साथ ही इस बात के लिए सतर्क रहता है कि वे इसे करें।"

एम0पी0मॉफेट– "शिक्षण प्रविधियों का प्रयोग शिक्षक द्वारा अध्ययन करने के लिए दिये गये निर्देशात्मक तरीकों में होता है।"

Downloaded From www.dietmathura.org
www.dietmathura.org

उपर्युक्त चर्चा से हमने जाना

- शिक्षण विधिया/शिक्षण कैसे हो ?
- शिक्षण विधिया/शिक्षण कितना प्रभावी था ?
- शिक्षण विधिया/शिक्षण और कैसे सुधारा जाय **का** समाधान बताती हैं।

प्रश्नोत्तर प्रविधि– जिज्ञासा मानव स्वभाव की पहचान है। सदियों से मानव ने अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए नित नये प्रयोग किए और आविष्कारों से ज्ञान जगत को समृद्ध किया। जिज्ञासा ही प्रश्न पूछने का मूल रूप है। शिक्षण कार्य की शुरूआत प्रश्नविधि से किया जाये तो शिक्षक अपनी समस्त शिक्षण योजना को नियोजित स्वरूप दे सकता है।

> **पार्कर–** ''प्रश्न आदत, कौशल' के स्तर से ऊपर उठकर समस्त क्रियाओं की कुंजी है।''

वास्तव में इस प्रविधि का जन्मदाता सुकरात को कहा जाता है। उन्होंने इसके तीन सोपान बताये–

- निरीक्षण
- अनुभव
- परीक्षण

माता–पिता, नाना, नानी जो हमें प्रतिदिन अच्छी–अच्छी बातें बताते है उस तरीके को क्या कहते है? इसकी जांच करें–

प्रश्न विधि का महत्व

- जिज्ञासा
- रुचि व एकाग्रता
- चिन्तन
- पाठ विस्तार
- समस्या समाधान की क्षमता
- शिक्षण मूल्यांकन
- नवीन ज्ञान से सम्बद्धीकरण
- सक्रियता
- कक्षा अनुशासन

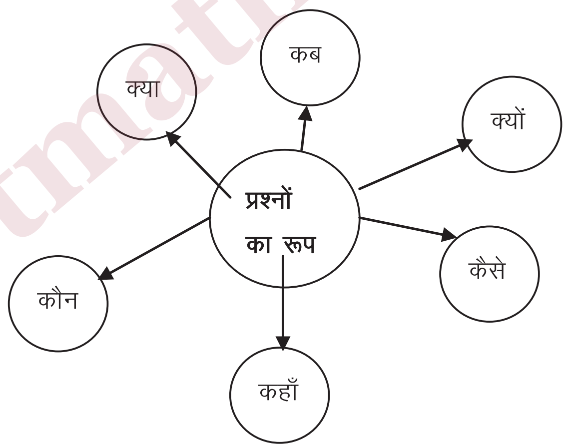

प्रश्न प्रविधि शिक्षण को सहज व क्रमबद्ध करती है। इसके लिए कुछ बातें जानना जरूरी है–

- प्रश्न सरल तथा स्पष्ट हो।
- प्रश्न पाठ्यवस्तु से सम्बद्ध हो।
- प्रश्न सम्पूर्ण कक्षा से किए जाएं।
- प्रश्न पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए पाठ का विस्तार करने वाले हो।
- प्रश्न शिक्षण स्तर के अनुकूल हो।
- प्रश्नों में क्रमबद्धता हो।

Downloaded From www.dietmathura.org

- शिक्षक को विषय का पूर्ण ज्ञान हो।

प्रश्नों के माध्यम से चलने वाला शिक्षण प्रभावशाली होता या यूँ कहे कि प्रश्न शिक्षक के लिए अच्छे साथी के रूप में सहयोग देते हैं।

काउलर– "शिक्षण मुख्य रूप से प्रश्नों के द्वारा होना चाहिए।"

प्रश्न पूछने के बाद उत्तर की अपेक्षा होती है उत्तर प्राप्त/निकलवाना भी एक कला है। उत्तर देते समय निम्नलिखित तथ्यों का पालन होना जरूरी है–

उत्तर देते समय छात्रों को सीधे खड़ा होकर उचित स्वर में बोलना चाहिए।
एक समय में एक ही छात्र उत्तर दें।
उत्तर देने के लिए प्रतिभाशाली कमजोर दोनों छात्रों को प्रेरित करना चाहिए।
अशुद्ध व अस्पष्ट उत्तर पर उत्तेजक प्रतिक्रियाएं न हों। उनके गलत होने के कारणों को शिक्षक अवश्य स्पष्ट करें।
सही उत्तरों की प्रशंसा करनी चाहिए ताकि अन्य छात्र भी प्रेरित हो सकें।

> **प्रश्नों का प्रकार**
> - प्रस्तावना प्रश्न, विचारात्मक प्रश्न, बोध प्रश्न, विकासात्मक प्रश्न, समस्या प्रश्न तुलनात्मक प्रश्न, पुनरावृति प्रश्न

जटिल प्रश्नों के उत्तर को शिक्षक स्वयं पाठ्य सहसामग्री से स्पष्ट करें।
उतर खोजने का अवसर दिया जाय।
स्पष्ट है उत्तर विधि भी अधिगम प्रक्रिया की दिशा बोधक है।

पशु एवं उनके उपयोग के बारे में शिक्षण करना है तो प्रश्नोतर विधि की रूपरेखा पर विचार करें।

> छात्रों की उत्तर रूपी आधार शिला पर शिक्षक अपनी पाठ रूपी इमारत खड़ी करता है और अपना अभीष्ट सिद्ध करता है–**एस0के0 अग्रवाल**

विवरण विधि

शिक्षण की ऐसी विधि जिसमें पाठ्यवस्तु, प्रसंग, घटना, स्थान का सरल भाषा में कथन किया जाता है इसलिए इसे कथन विधि भी कहते हैं। इसमें अज्ञात से ज्ञात की स्थिति की ओर अग्रसर होते हैं।

उदाहरण विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के बारे में बताना–कुतुबमीनार, बुलन्द दरवाजा, ताजमहल, आदि के बारे में बताना कि वे कहाँ स्थित हैं, किसने बनवाया, किस लिये प्रसिद्ध हैं, यह विवरण हैं।

- विवरण की उपयोगिता
- अनुभवों को मूर्तरूप
- बोध विस्तार
- तथ्यात्मक ज्ञान
- मानसिक क्षमता
- ध्यान केन्द्रीकरण

> *विवरण से तात्पर्य क्रमानुसार वर्णन प्रक्रिया से है–* ***डॉ0 रविशंकर मेनन***

Downloaded From www.dietmathura.org

विवरण विधि से शिक्षण करते समय कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिए–

- विवरण विषयवस्तु से सम्बद्ध हो।
- विवरण सरल, स्पष्ट हो।
- विवरण, चित्र, मॉडल, श्यामपट्ट के द्वारा प्रस्तुत किया जाय।
- विवरण अत्यधिक रूप से बड़ा न हो। खण्डों में प्रस्तुत हो।
- विवरण छात्र स्तर के अनुकूल हो।
- विवरण के अन्त में एक दो प्रश्न पूछकर छात्रों के अधिगम स्तर का पता लगाया जाना चाहिए।

वर्णन विधि

शिक्षण की इस प्रविधि में विषय वस्तु का विस्तार से कथन किया जाता है ताकि छात्रों को पाठ अच्छी तरह से समझ में आ जाय। इस विधि में हालांकि शिक्षक ही ज्यादा सक्रिय रहता है किन्तु यदि रुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाय तो छात्र भी सक्रियता से भाग लेते हैं और सम्प्रेषण प्रभावी हो जाता है।

वर्णन विधि को प्रस्तुत करने के तरीके

↓

चित्र मॉडलों द्वारा | भ्रमण | करके/प्रयोग द्वारा

इन्हें भी जानें

- वर्णन और विवरण विधि एक समान नहीं है। विवरण सतही होता है वर्णन में विषयवस्तु व्यापक ढंग से प्रस्तुत की जाती है यानि वर्णन में सांगोपांग चित्रण होता है। यह मौखिक–लिखित दोनों तरह से किया जाता है। विवरण के आगे की स्थिति वर्णन होती है। इसका स्वरूप संश्लेषणात्मक होता है।

इस विधि से शिक्षण करते समय शिक्षक को कुछ बातों पर ध्यान देना चाहिए–

- वर्णन विषयवस्तु से सम्बद्ध हो।
- वर्णन की भाषा–शैली सरल, स्पष्ट हो।
- वर्णन समग्र रूप में रुप किया जाय।
- वर्णन क्रमबद्ध और आवश्यकतानुसार हो।
- वर्णन स्तरानुकुल हो।

व्याख्या विधि– किसी भी विषयवस्तु का गहन ढंग से विश्लेषण करना व्याख्या कहलाता है। इस विधि का प्रयोग ज्यादातर जटिल विषयों को समझाने के लिए तथा उच्च स्तर पर किया जाता है। **उदाहरण** के तौर पर 'समास' को लें इसे समझाना हो तो समास दो शब्दों से मिलकर बना है– सम+अस, सम का अर्थ होता है– समीप/पास और अस् का अर्थ बैठना। जिस क्रिया में संक्षेपीकरण किया जाय या दो या अधिक शब्दों को मिलाकर लिखा जाय उसे समासिक पद कहते हैं।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

- रामलक्ष्मण, माता–पिता, शास्त्रकुशल
- फिर इन पदों का विग्रह करके बतायेंगे–
- राम और लक्ष्मण, माता और पिता, शास्त्रों में कुशल

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि व्याख्यान विधि में किसी भी प्रसंग को विस्तार से समझाया जाता है।

इन्हें भी जानें–

हालांकि यह एकतरफा सम्प्रेषण है इसे रुचिकर व उपादेय बनाया जा सकता है यदि–

- व्याख्यान से पहले उददे्श्य का निश्चय कर लें।
- व्याख्यान स्तरानुकूल हो।
- व्याख्यान सरल व स्पष्ट भाषा में हो।
- व्याख्यान देने के बाद शिक्षक रुककर प्रश्न पूछकर ज्ञात करें कि सीखने की क्रिया हो रही है।
- व्याख्यान को अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को चित्र, मॉडलों, उदाहरणों एवं तुलना के तरीकों का समावेश करना चाहिए।
- व्याख्यान नीति से पढ़ाते समय विषय की मूलभूत बातों को बताकर विद्यार्थियों से पूर्व ज्ञान के आधार पर नवीन चीजों को जानने–समझने की ओर प्रेरित करना चाहिए।

इन्हें भी जाने

व्याख्यान विधि से लाभ →
- जटिल व दुरूह विषय का ज्ञान
- **विषय का सरलीकरण**
- स्वाध्याय की भावना
- पाठ के हर पहलू का ज्ञान
- अधिकतम सूचना एवं तथ्यों का ज्ञान

स्पष्टीकरण प्रविधि

किसी वस्तु, विषय, घटना को अच्छी तरह समझाना स्पष्टीकरण कहलाता है, इस विधि को उद्‌घाटन विधि भी कहा जाता है। यह विधि ज्यादातर जटिल विषयों को सरल रूप से बोध गम्य बनाने के काम आती है। शिक्षक को चाहिए कि पाठ्‌यवस्तु के प्रमुख पक्षों का चयन कर लें और उसके बारे में प्रत्येक बातों को प्रकाशित करे। इसके लिए चित्रों, मॉडलों, श्यामपट्‌ट लेखन को माध्यम बनाया जाना चाहिए।

स्पष्टीकरण विधि से शिक्षण की सफलता इस बात में निहित है कि शिक्षक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान हो ताकि उसे समग्र रूप में अधिगमकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। **उदाहरण के तौर** पर ***सौरमंडल*** पढ़ाना हो तो इसमें सौरमण्डल का अर्थ उन ग्रहों, तारों के समूह को स्पष्ट करना होगा फिर प्रत्येक ग्रह, तारों की स्थिति, प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से समझाना होगा। इसके लिए चित्रों, तारामंडल भ्रमण का सहारा लिया जा सकता है।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

इन्हें भी जानें

स्पष्टीकरण विधि को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए–

- पाठ्यवस्तु को छोटे–छोटे भागों में विभाजित करके उसे तार्किक क्रम में नियोजित कर लेना चाहिए।
- स्पष्टीकरण की भाषा को सरल व शुद्ध रखना चाहिए।
- पाठ्यवस्तु के भ्रामक पक्ष को अच्छी तरह समझाना चाहिए।
- शिक्षण की अन्य प्रविधियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।
- स्पष्टीकरण के अन्त में प्रश्न अवश्य पूछें।

स्पष्टीकरण विधि से लाभ

- प्रत्येक पहलू का ज्ञान
- क्रमबद्धता व तार्किकता
- ज्ञान की समग्रता
- प्रत्येक बिन्दु का ज्ञान

कहानी कथन प्रविधि

एक राजा था, एक राजकुमारी थी, एक परी थी, जैसे वाक्यों से शुरू होने वाली कहानियाँ हम सभी ने अपनी दादी–नानी से सुनी होगी, और उसमें बताई गयीं बातें हम सभी को याद भी हैं। यही विधा कहानी कथन कहलाती है। इसका सबसे बड़ा महत्व यह है कि यदि शिक्षण का स्थायी प्रभाव डालना हो तो शिक्षण को कल्पना द्वारा, आकर्षक तरीके से कथा का रूप देकर प्रस्तुत किया जाये तो बच्चे जल्दी सीखेंगे। कक्षागत अनुशासन भी बना रहेगा और उनमें जिज्ञासा जागृत होगी। यह विधि मुख्यतः मौखिक ही होती है।

कहानी विधि का महत्व

- एकाग्रता
- कल्पनाशक्ति का विकास
- अधिगम की तीव्रता

कहानी विधि मनोवैज्ञानिक होने के कारण शिक्षण क्षेत्र में सबसे लोकप्रिय है। इसे और भी प्रभावी बनाया जा सकता है यदि कुछ बातों को ध्यान में रखा जाय।

- कहानी कथन स्तरानुकूल हो।
- कहानी कथन की भाषा स्पष्ट सरल हो।
- कहानी कथन में प्रसंगानुसार हाव–भाव, आरोह–अवरोह हो।
- कहानी कथन के साथ पाठ्यसह सामग्री का उचित प्रयोग होना चाहिए।
- कहानी कथन के बाद अधिगमकर्ता से बोधगम्यता के प्रश्न अवश्य पूछें जायें।

Downloaded From www.dietmathura.org

निरीक्षण एवं अवलोकन प्रविधि

यह तथ्य पूरी तरह स्थापित है कि देखी हुई घटना, वस्तु भूलती नहीं है। इसका प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर स्थायी होता है। शिक्षण करते समय यदि छात्र को पाठ्य विषय में शामिल वस्तुओं, घटनाओं के अवलोकन एवं निरीक्षण का अवसर दिया जाय तो शिक्षण अधिगम प्रभावशाली होगा।

वास्तव में किसी वस्तु, स्थान, कार्य का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना ही अवलोकन है। सभी विषयों में विशेषकर विज्ञान, कृषि तथा समाज विज्ञान के लिए यह अधिक उपयोगी है। समझना– परखना ही इस विधि का मूल तत्व है। समूह शिक्षण एवं उच्च स्तरों पर शोध कार्यों में इस विधि का प्रयोग प्रभावी होता है। इस विधि से शिक्षण करते समय ध्यातव्य बिन्दु इस प्रकार हैं–

- अवलोकन निरीक्षण की प्रक्रिया क्रमबद्ध हो ।
- कब, कहाँ, किसका, क्या और कैसे अवलोकन करना है यह छात्रों को पता होना चाहिए।
- उद्देश्य का पूर्व निर्धारण जरूरी है।
- छात्रों को शिक्षक के मार्गदर्शन में ही अवलोकन निरीक्षण करना चाहिए।
- अवलोकन निरीक्षण के बाद उसकी आख्या लेखन आवश्यक है।

उदाहरण विधि– किसी कठिन और गूढ़ तथ्य, घटना, वस्तु को, सामग्री, प्रसंगों, अनुभवों के प्रयोग द्वारा व्यक्त करना उदाहरण है। जैसे– सरदार भगत सिंह की वीरता, साहस, बलिदान का उदाहरण देकर बच्चों में राष्ट्रीय भावना का विकास किया जा सकता है।

एस0 के कोचर– उदाहरण का अभिप्राय प्रतिमान, चित्र तथा चार्ट आदि वस्तुओं से है, जो क्लिष्ट विचारों का वर्णन करते हैं और उसकी प्रक्रिया में उन पर विशेष प्रकाश डालकर उन्हें आसान बनाते हैं। ये सीखने वालों की भावनाओं, कल्पनाओं को प्रेरित करते हैं, जिससे उनके विचार स्पष्ट होते हैं और वह सही ज्ञान ग्रहण करने योग्य बनते हैं।''

उदाहरण की सहजता उसका सबसे बड़ा गुण है, शिक्षण कार्य जितने ज्यादा उदाहरणों, दृष्टान्तों से समझाया जायेगा वह सम्प्रत्यय छात्रों को पूर्णतया स्पष्ट हो जायेगा व गल्तियों की सम्भावना कम रहेंगी। स्वर सन्धियों में दीर्घ सन्धि के अर्थ को हम जितने उदाहरण–रामायण, विद्यालय, सदाचार, रामाज्ञा, देवालय, मुख्यालय, आज्ञानुसार आदि से स्पष्ट करेंगे दीर्घ सन्धि का अर्थ उतना ही ग्राहय बनेगा।

इन्हें भी जानें–

जो मनुष्य नेक सलाह देता है, वह एक हाथ से निर्माण करता है, जो मनुष्य उपयुक्त परामर्श को साथ दृष्टान्त देता है वह दोनों हाथ से निर्माण करता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

उदाहरण विधि का प्रयोग कैसे करें–

- उदाहरण सरल व स्पष्ट भाषा में हो
- उदाहरणों में विविधता हो
- उदाहरण स्तरानुकूल हो
- पूर्वज्ञान से सम्बन्धित व रुचिकर हो
- सरल से कठिन, ज्ञात से अज्ञात की ओर उन्मुख हो।

महत्व / उपादेयता

- सरलीकरण / स्पष्टता
- बोध गम्यता
- रुचिपूर्णता
- अधिगम सम्भाव्यता

खेल विधि– खेल एक स्वभाविक प्रक्रिया है, इसी के द्वारा बालक अपने को मूल रूप में व्यक्त करता है।

हयूजेज एवं हयूजेज– वह विधि जो बालकों को उसी उत्साह से सीखने की क्षमता देती है जो उनमें स्वाभाविक रूप में पायी जाती है प्रायः क्रीडा विधि कहलाती है।

खेल–खेल में सीखो यह कथन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को संकेत करता है। इस विधि ने परम्परागत शिक्षण को नवीन दिशा दी है, जिससे शिक्षण ज्यादा रुचिपूर्ण हो गया है। **रायबर्न ने** इसके महत्व को बताते हुए कहा भी है–

यह विधि बालक की रचनात्मक शक्तियों को प्रोत्साहित करती है सामाजिक गुणों को विकसित करके समूह प्रवृत्ति का विकास करती है। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर व्यक्तित्व को सन्तुलित करती हैं।

खेल विधि से शिक्षण करते समय हम परिवेश में उपलब्ध सामग्री प्रयोग करें और अभिनय को शामिल कर दें तो शिक्षण जीवन से सहसम्बन्धित होगा और रुचिकर हो जायेगा।

शिक्षण में इसके महत्व को फ्रीबेल ने सबसे पहले रेखांकित किया–

गिनती का ज्ञान कराना हो या अक्षर ज्ञान देना हो तो बच्चों की पंक्तियां बनवायें। उसका नाम क, ख, ग आदि रख दें फिर दौड़ लगवायें। दौड़ में उनके स्थानों की गणना में 0, 1, 2, 3 का ज्ञान दिया जा सकता है।

समूह चर्चा विधि– किसी विषय पर एक से अधिक लोगों द्वारा चिन्तन और वार्तालाप करने को समूह चर्चा विधि कहते हैं। इस विधि से शिक्षण करने से सुनने, समझने का कौशल विकसित होता है।

इन्हें भी जानें (महत्व)

- सामाजिकता
- लोकतांत्रिक
- ज्ञानवर्द्धन
- स्वतंत्रता

Downloaded From www.dietmathura.org

यह विधि अधिगम पर ज्यादा जोर देती है। समूह में चर्चा करने से एक ओर जहाँ खुलकर अभिव्यक्ति का अवसर होता है वहीं दूसरी ओर विषय भी स्पष्ट होता चलता है। इस विधि में शिक्षक–शिक्षार्थी दोनों की समान रूप से सहभागिता एवं सक्रियता रहती है। कक्षागत अनुशासन बना रहता है और, तर्क आदि मानसिक संक्रियाओं का बारम्बार अभ्यास भी हो जाता है।

ध्यातव्य बिन्दु

- चर्चा का विषय स्पष्ट होना चाहिए।
- चर्चा का माध्यम एक भाषा ही होनी चाहिए।
- चर्चा में छात्रों को छोटे–छोटे समूहों में बाँट देना चाहिए।
- अनावश्यक विवाद न हो, शिक्षक इस बात के प्रति जागरुक रहें।
- चर्चा के अन्त में प्रश्न पूछकर बोधगम्यता का पता लगाना चाहिए।

- भारत में शिक्षा के स्तर में गिरावट पर चर्चा करें और सीखें।

प्रयोगात्मक विधि

नाम से ही स्पष्ट है जिस विधि में प्रयोग करके सिखाया जाय वह शिक्षण की प्रयोगात्मक विधि कहलाती है। इस विधि का आधार वैज्ञानिकता एवं तार्किकता है। प्रयोग द्वारा शिक्षण करने से छात्र सक्रिय एवं एकाग्र रहते हैं और स्वयं करके सीखने का अवसर होने से अधिगम स्थायी होता है।

इस विधि में बालक की समस्त इन्द्रियां सक्रिय होती हैं इसलिए सीखना सरल व सहज होता है।

स्वयं करें और देखें

- लाल और हरा रंग मिलाने से कौन सा रंग बनता है?

प्रयोग विधि का उपयोग– किसी वस्तु के बारे में जानना हो तो क्या–क्या करेंगे–

- वस्तु देखने में कैसी है ?
- वस्तु का रंग कैसा हैं ?
- वस्तु का आकार कैसा है ?
- छूने पर वस्तु कैसी लगती है ?
- पटकने पर कैसी आवाज होती है ?
- वस्तु हल्की है या भारी है ?

इन्हें भी जानें

- प्रयोग विधि से क्रियाशीलता बनी रहती है।
- ज्ञान प्रक्रिया दो तरफा होती है।
- कल्पना व यथार्थ का अन्तर पता चलता है।
- जिज्ञासा पूर्ति में सहायक है।

Downloaded From www.dietmathura.org

वाद–विवाद प्रविधि

महिलाओं की व्यवसाय में आवश्यकता इस विषय पर एक पक्ष है– महिलाओं का व्यवसाय करना जरूरी है दूसरा पक्ष **नहीं** जरूरी है। जब किसी विषय पर चर्चा के लिए दो पक्ष होते हैं उनके अलग–अलग मत होते हैं और दोनों की चर्चा के बाद निष्कर्ष निकाला जाता है। इसी विधि को वाद–विवाद विधि कहते हैं।

महत्व

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता रहती है।
- प्रसंग/तथ्य को स्पष्ट करने में सहायता मिलती है।
- जिज्ञासायें शांत होती हैं, नवीन ज्ञान में वृद्धि होती है।
- मानसिक विकास के लिए उपयोगी है।
- माध्यमिक कक्षा से उच्च कक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।
- सुनने, बोलने का कौशल विकसित होता है।

चर्चा करें–

''कक्षा में अनुशासनहीनता के लिए जिम्मेदारी'' पक्ष– विपक्ष में विचार व्यक्त करके सीखें।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

कार्यशाला प्रविधि

(Workshop Technique)

कार्यशाला एक निश्चित विषय पर परिचर्चा का प्रायोगिक कार्य होता है जिसमें सभी प्रतिभागी सदस्य अपने ज्ञान, अनुभवों व कौशलों के पारस्परिक आदान प्रदान के द्वारा विषय के बारे में सीखते हैं।

प्रमुख शिक्षण बिन्दु

- कार्यशाला प्रविधि का अर्थ
- कार्यशाला की परिभाषा
- कार्यशाला प्रविधि के उद्देश्य
- क्षेत्र
- कार्यशाला में शिक्षण का क्रम
- शिक्षण में कार्यशाला का महत्व

शिक्षक अपने शिक्षण में सफलता पाने के लिए विविध विधियों/प्रविधियों का प्रयोग करता है। कार्यशाला प्रविधि ऐसी ही एक प्रविधि है। इसकी सहायता से छात्रों में क्रियात्मक पक्षीय उच्च अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किया जाता है। कार्यशाला (Workshop) शब्द का प्रयोग अभियांत्रिकी के क्षेत्र में अधिक किया जाता है, जैसे– रेल वर्कशाप, सड़क परिवहन कार्यशाला आदि, जहाँ पर रेल इंजन व बसों को निर्मित करने व उनकी मरम्मत की व्यवस्था होती है। कार्य करते हुए ही यहाँ पर कुछ सीखा जा सकता है। अतः इस प्रविधि में श्रम आधारित स्वयं सक्रिय रहते हुए व्यावहारिक क्रियाकलापों के अधिगम को महत्व दिया जाता है।

कार्यशाला का अर्थ (Meaning of Workshop)

कार्यशाला वह प्रविधि है जिसमें छात्र वास्तविक रूप से सक्रिय रहकर कार्य करते हुए अपने व समूह के सदस्यों के अनुभवों के पारस्परिक आदान प्रदान के द्वारा किसी विषय की जानकारी प्राप्त करता है। चूंकि छात्र इसमें सक्रिय प्रतिभाग करता है अतः प्राप्त ज्ञान स्थायी, विश्वसनीय व उपयोगी होता है। इस प्रविधि का प्रयोग छात्रों के क्रियात्मक पक्ष के विकास के लिए किया जाता है। इसमें प्रायोगिक कार्य द्वारा ज्ञानार्जन को अधिक महत्व दिया जाता है।

चर्चा के बिन्दु

- छात्रों में क्रियात्मक पक्ष के विकास हेतु कार्यशाला के अतिरिक्त शिक्षक और कौन–कौन से क्रियाकलाप करा सकता है ?
- कार्यशाला का आयोजन क्यों किया जाता है?

कार्यशाला की परिभाषा (Definition of Workshop)

डॉ0 प्रीतम सिंह के अनुसार– ''कार्यशाला आमने–सामने का ऐसा प्राथमिक समूह है जिसमें सामाजिक अन्तः क्रिया अधिक नजदीक तथा प्रत्यक्ष होती है और यह सदस्यों पर अधिक सामाजिक नियन्त्रण रखती है।''

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षा शब्दकोष के अनुसार– ''कार्यशाला एक शैक्षणिक प्रविधि है, जिसमें समान रुचियों और समस्याओं से युक्त व्यक्ति उपयुक्त विशेषज्ञों के साथ प्रायः आवासिक और कई दिवसों की अवधि में आवश्यक सूचनाएं प्राप्त करने और समूह अध्ययन के माध्यम से समाधान निकालने के लिए मिलते हैं।''

उपर्युक्त आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कार्यशाला/कार्यगोष्ठी परम्परागत क्रियाकलापों से परे सर्वथा नवीन, रोचक व आनन्ददायी माहौल प्रस्तुत करती है। ऐसे माहौल में छात्र–छात्राएं स्वतन्त्र होकर अपनी रुचि से कार्य करते हैं। फलतः उनकी अन्तर्निहित क्षमताएं व मानसिक चिन्तन अपने वास्तविक रूप में हमारे सामने आते हैं।

कार्यशाला प्रविधि के उद्देश्य (Aims of Workshop Technique)

ज्ञानात्मक उद्देश्य

- शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं का समाधान खोजना।
- किसी प्रकरण के व्यावहारिक पक्ष को समझना।
- शिक्षण उद्देश्यों एवं विधियों का निर्धारण करना तथा उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।

> **कार्यशाला का मूलमन्त्र है–**
>
> ''उद्देश्य प्राप्ति के लिए आपस में मिल जुलकर सहयोगात्मक भावना से कार्य करना।''

क्रियात्मक उद्देश्य

- शिक्षण की विशिष्ट क्षमताओं का विकास करना।
- समूह में कार्य करने व सहयोग की भावना का विकास करना।
- शिक्षण की प्रभावी विधियों/प्रविधियों का निर्धारण करना।
- शिक्षा व शिक्षण के नवीन उपागमों का प्रशिक्षण देना
- शिक्षण कौशल का विकास व सुधार करना।

कार्यशाला का क्षेत्र (Field of Workshop Techninque)

शिक्षा के क्षेत्र में कार्यशाला प्रविधि बेहद उपयोगी है। इसका उपयोग शिक्षण में व्यापक रूप में किया जा सकता है। इसके क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य सम्मिलित हैं–

- पाठ योजना के नवीन प्रारूप बनाने हेतु
- क्रियात्मक शोध के प्रयोग हेतु
- पाठयोजना में प्राप्त उद्देश्यों को व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में लिखने हेतु
- नवीन प्रकार की परीक्षाओं के प्रश्नों व प्रश्नपत्रों के निर्माण हेतु
- विविध प्रकार की प्रश्नावली के निर्माण हेतु

> ***चर्चा करें–***
>
> उपर्युक्त के अतिरिक्त और किन प्रकरणों हेतु कार्यशाला का आयोजन किया जा सकता है?

Downloaded From **www.dietmathura.org**

कार्यशाला में शिक्षण का क्रम (Sequence of Teaching in Workshop)

कार्यशाला में शिक्षण का क्रम निम्न प्रकार का होता है–

- प्रकरण/समस्या का चयन, प्रस्तुतीकरण व स्पष्टीकरण
- पाठ पर आधारित कार्य (समूहों में)
- कार्य के विविध तौर तरीकों के प्रयोग का अभ्यास
- वास्तविक अनुभवों का आदान प्रदान
- सहभागियों के साथ कार्य
- कार्यों/तैयार सामग्री की जाँच/परीक्षण/निरीक्षण
- निष्कर्ष (पाठ से सम्बन्धित तथ्यों का ज्ञान)

शिक्षण में कार्यशाला का महत्व (Importance of Workshop in Teaching)

शिक्षा का प्रमुख उद्‌देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण व सन्तुलित विकास करना है। अतः शिक्षक का प्रमुख दायित्व यह है वह विद्यालय में ऐसा वातावरण तैयार करे जिसमें प्रत्येक बच्चा स्वयं सीखने में रुचि ले व तत्पर रहे। सीखने का ऐसा वातावरण बनाने में कार्यशाला प्रविधि अत्यन्त उपयोगी है। इसमें वास्तविक परिस्थितियों में छात्र समस्या समाधान का प्रयास करते हैं और स्वयं करते हुए सीखते हैं। सीखने के लिए वह अध्यापक पर निर्भर नहीं रहते और समूह के सदस्यों के साथ मिलजुलकर कार्य करते हुए नवीन अनुभव प्राप्त करते हैं।

भ्रमण विधि

भ्रमण से आशय है– घूमना स्पष्ट है इस विधि में स्थलों, वस्तुओं का ज्ञान घूम–घूम कर प्राप्त किया जाता है। इस विधि को शैक्षिक भ्रमण भी कहा जाता है। भ्रमण के पश्चात सीखी गई बातों का लेखन अवश्य करवाना चाहिए ताकि ज्ञान स्थायी रह सके।

इन्हें भी जानें–

भ्रमण विधि से

- सीखना रुचिपूर्ण लगता है।
- सामाजिक भावना का विकास होता है।
- समस्त इन्द्रियां क्रियाशील रहती है।
- विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान सहजता से हो जाता हैं
- सीखने में स्वतन्त्रता रहती है।

स्वयं करें व जाँचें

- आपने किसी स्थल की यात्रा की और उस स्थल का पुस्तकीय अध्ययन किया। सीखने में क्या अन्तर था?

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण विधियों का अपना विशेष स्थान है। शिक्षक पर यह गुरुतर दायित्व है कि वह विषय, छात्र स्तर, संसाधनों के अनुसार विधियों का शिक्षण में अनुप्रयोग करें और अधिगम की गुणवत्ता में उतरोत्तर सुधार का लक्ष्य प्राप्त करें।

Downloaded From www.dietmathura.org

मूल्यांकन

बोध प्रश्न

1. प्रश्नोतर विधि किस प्रकार शिक्षण का विकास करने में सहायक है ?

2. विवरण विधि एवं वर्णन विधि एक समान है, अगर नहीं तो अन्तर स्पष्ट करिये?

3. प्रयोगात्मक विधि का आधार क्या है? यह विधि किन विषयों के शिक्षण में विशेषतः प्रयोग होती है?

4. खेल, कहानी विधि को आज सबसे ज्यादा लोकप्रिय क्यों माना जाता है ?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. कार्यशाला प्रविधि का क्या अभिप्राय है ?

2. ''छात्र समूह में कार्य करके ही वास्तविक रूप में सीखते हैं।'' स्पष्ट कीजिए।

3. शिक्षण में कार्यशाला प्रविधि की क्या उपयोगिता है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

4. कार्यशाला प्रविधि को स्पष्ट करते हुए इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

5. कार्यशाला का क्षेत्र क्या है ? इसमें शिक्षण का क्रम क्या होना चाहिए ?

प्रशिक्षुओं हेतु स्वयं करने के लिए

- प्रशिक्षु अपने प्रशिक्षण विषयों के किसी प्रकरण पर प्रशिक्षण कक्ष में दो दिवसीय कार्यशाला का प्रस्ताव बनायें, साथ ही शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से उसका आयोजन करें। कार्यशाला में विकसित पाठ्य सामग्री का कक्ष में प्रस्तुतीकरण भी करें, साथ ही उसकी आख्या तैयार करें।

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम)

New Methods/Approach of Teaching

शिक्षण की नवीन विधाओं या उपागम की अवधारणा Concept of New Approaches of Teaching

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिस पर प्रत्येक देश की शासन प्रणाली, सामाजिक दर्शन, सामाजिक परिस्थितियों तथा मूल्यों एवं संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। प्रजातन्त्र शासन प्रणाली के कारण भारत में जनता की इच्छा को वरीयता देते हुए उसका सम्मान किया जाता है। इस प्रकार की शिक्षण प्रणाली में शिक्षक और छात्र दोनों सक्रिय रहते हैं औरउनके मध्य शाब्दिक और अशाब्दिक अन्तः क्रिया चलती रहती है। शिक्षक का उद्‌देश्य बालक को अधिक से अधिक सिखाना है। वह बालक को शिक्षण के द्वारा सिखाता है। शिक्षक बालक को नवीन तथ्यों की सूचना देता है। छात्रों का शिक्षण करते समय अध्यापक अपनी सभी क्षमताओं का उपयोग करता है। अध्यापक अपने पूर्ण मनोयोग, अपने पूर्व अनुभव, दक्षताओं के साथ विभिन्न प्रविधियों, विधियों तथा विधाओं का उपयोग करता है। अध्यापक द्वारा प्रयोग में लायी गयी विधाएँ या उपागम उसकी शिक्षण कला को सुगम बनाते हैं। शिक्षक यह चाहता है कि कक्षा का प्रत्येक छात्र शिक्षण–अधिगम का पूरा लाभ उठाये।

उद्‌देश्य

- प्रशिक्षुओं को शिक्षण की नवीन विधाओं (उपागम) की जानकारी देना।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास की जानकारियों से अवगत कराना।
- गतिविधि आधारित शिक्षण का ज्ञान देना।
- प्रशिक्षुओं को भावी शिक्षक के रूप में कक्षा में बच्चों को स्वयं करके सीखने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- रुचिपूर्ण शिक्षण के द्वारा खेल–खेल में बच्चों को पढ़ाने की विधाओं से अवगत कराना।
- उपचारात्मक एवं बहुकक्षा शिक्षण के क्रियान्वयन के बारे में बताना।

शिक्षण के बिन्दु

- बाल केन्द्रित शिक्षण उपागम का अर्थ
- क्रिया / गतिविधि आधारित शिक्षण
- रुचिपूर्ण या आनन्ददायी शिक्षण
- सहभागी शिक्षण
- दक्षता आधारित शिक्षण
- उपचारात्मक शिक्षण
- बहुकक्षा / बहुस्तरीय शिक्षण

Downloaded From www.dietmathura.org

प्रशिक्षुओं से चर्चा करें

- शिक्षण में बच्चों की प्रधानता से क्या अभिप्राय है ?
- शिक्षण कार्य करते समय बच्चों को प्रमुखता देना कहाँ तक उचित है और क्यों ?

बालकेन्द्रित शिक्षण उपागम का अर्थ Meaning of Child-Centred Approach Teaching)

बालकेन्द्रित शिक्षण अर्थात् जिस शिक्षण का मुख्य केन्द्र बिन्दु बालक होता है। बालक की रुचियों, प्रवृत्तियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रदान किया जाता है। इसमें बालक का व्यक्तिगत निरीक्षण कर उसकी दैनिक कठिनाइयों को दूर करने के साथ ही साथ उसे स्वावलम्बी बनाकर उसमें स्वतन्त्रता की भावना उत्पन्न की जाती है। इस शिक्षण उपागम में बालक चुने हुए साधनों में से अपनी इच्छानुसार किसी भी साधन का चुनाव कर सकता है तथा उस साधन के साथ संतोष प्राप्त होने तक कार्य कर सकता है। इसके द्वारा वह मानसिक सन्तोष और शान्ति का अनुभव करता है। इस अनुभव से बालक का शारीरिक एवं मानसिक उत्साह उत्पन्न होने में सहायता मिलती है। बालक ज्यों ही क्रियाशील होता है, वह कुछ कार्य करने में आनन्द अनुभव करता है वह करके ही कुछ सीखता है। बालकेन्द्रित शिक्षा पर जोर देते हुए प्रशिक्षुओं से चर्चा के उपरान्त जो उत्तर निकल कर सामने आए उनकी सहायता से शिक्षक 'बालकेन्द्रित शिक्षा' को स्पष्ट करेंगे और यह समझाने का प्रयास करेंगे कि जिस प्रकार आपके सहयोग से शिक्षण सामग्री को बताया जा रहा है उसी प्रकार जब आपके द्वारा बच्चों को पढ़ाया जाए, तब उनकी सहायता से, उनकी रुचियों, उनके स्तर आदि का ध्यान रखते हुए रुचिपूर्वक व गतिविधि आधारित शिक्षण किया जाय। बालकेन्द्रित शिक्षा पर जोर देते हुए किसी विद्वान ने कहा है कि आज का बालक भावी राष्ट्र निर्माता है।

उद्देश्य

- बालक का चहुँमुखी विकास करने की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- स्वयं करके सीखने की प्रवृत्ति विकसित करना।
- आत्मविश्वास जाग्रत करने की भावना का विकास करना।
- चिन्तन, मनन जिज्ञासा जैसी प्रवृत्तियों का विकास करना।
- सहयोग की भावना विकसित करना।
- स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- पुनर्बलन द्वारा शिक्षण को प्रभावी बनाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- पढ़ाने की क्रिया पर जोर न देकर सिखाने की क्रिया पर जोर देना।
- शारीरिक दण्ड प्रक्रिया को बहिष्कृत करना।
- प्रेषण, सूचना, संचालन तथा निष्कर्ष निकालने की दक्षता का विकास करना।
- प्रशिक्षुओं को बालकों के सहयोगी एवं मार्गदर्शक के रूप में तैयार करना।

Downloaded From www.dietmathura.org

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से चर्चा करें

- बालकेन्द्रित एवं शिक्षक केन्द्रित शिक्षण में क्या अन्तर है ?
- ....
  .... ।

समूह में चर्चा के उपरान्त प्रशिक्षणार्थियों से यह जानने का प्रयास करें कि कौन सी शिक्षण पद्धति अच्छी है और यदि अच्छी है तो क्यों ? इस पर निम्न प्रकार के बिन्दु निकलकर आ सकते हैं–

शिक्षक केन्द्रित शिक्षा	**बालकेन्द्रित शिक्षा**
▪ शिक्षक केन्द्रित शिक्षा	▪ बालकेन्द्रित शिक्षा
▪ शिक्षक का निर्देश और निर्णय सर्वोपरि	▪ बालक की स्वायत्ता व स्वतन्त्रता
▪ शिक्षक का मार्गदर्शन और निरीक्षण	▪ सहयोग द्वारा शिक्षार्थी को प्रोत्साहन
▪ निष्क्रियभाव से अधिगम (सीखना)	▪ सीखने में विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी
▪ चाहारदीवारी के अन्दर अधिगम	▪ विस्तृत सामाजिक संदर्भो में सीखना या चाहारदीवारी के बाहर भी सीखना।
▪ प्रदत्त के रूप में ज्ञान (शिक्षक से ज्ञान प्राप्त करना)	▪ ज्ञान निर्मित होता है। (स्वयं करके सीखना)
▪ अनुशासनात्मक दृष्टिकोण	▪ बहुअनुशासनात्मक शैक्षणिक बल
▪ रेखिक अनुभव	▪ बहुविध अनुभव

बालकेन्द्रित शिक्षा में

- शिक्षक बच्चों से मित्रवत् व्यवहार करते हैं।
- बच्चों को सिखाने में मार्गदर्शक के रूप में भूमिका का निर्वहन करते हैं।
- खेल–खेल में तथा गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को ज्ञान देते हैं।
- बार–बार अभ्यास कार्य के द्वारा बच्चों की कठिनाइयों को दूर करते हैं।
- बच्चों को अधिक से अधिक अभिव्यक्ति का अवसर देते हैं।
- बच्चों को आन्नद की अनुभूति कराते हैं।
- बच्चों को उचित नाम से सम्बोधित करते हैं।
- शिक्षण अधिगम सामग्री को अधिक से अधिक प्रयोग करते हैं।
- बच्चों को विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में अधिक से अधिक अवसर देते है।

इसी प्रकार शिक्षक केन्द्रित शिक्षा के बिन्दु निकलवाए जा सकते हैं।

गतिविधि

सम्पूर्ण कक्षा को दो भागों में बांटकर एक समूह को बालकेन्द्रित तथा दूसरे समूह को शिक्षक केन्द्रित शिक्षा पर नाटक का मंचन करायें तथा उस पर चर्चा करें कि आपको कौन सी कक्षा अधिक प्रभावशाली लगी।

Downloaded From www.dietmathura.org

बालकेन्द्रित शिक्षा का महत्त्व Importance of child Centred Teaching

- बालक प्रधान शिक्षण।
- सरल और रुचिपूर्ण शिक्षण।
- आत्माभिव्यक्ति के अवसर।
- ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण पर बल।
- व्यावहारिक और सामाजिक ज्ञान।
- क्रियाशीलता पर आधारित शिक्षा।
- स्वयं करके सीखने पर बल।

बालकेन्द्रित शिक्षण में शिक्षक की भूमिका The Role of Teacher in Child Centred Teaching

बालकेन्द्रित शिक्षण में शिक्षक बालकों का सहयोगी, सेवक तथा मार्गदर्शक के रूप में होता है। वह बालकों का सभी प्रकार से मार्गदर्शन करता है और विभिन्न क्रियाकलापों को क्रियान्वित करने में सहायता करता है।

शिक्षक जब कक्षा में पढ़ाने जाते हैं तो शिक्षक के सामने बालक होता है और विषयवस्तु होती है। शिक्षण द्वारा शिक्षक अपने और विषयवस्तु के मध्य एक संबंध बनाता है। यही सम्बन्ध बच्चे के सर्वांगीण विकास में सहायता देकर उसे भविष्य में समाज का योग्य और सृजनशील नागरिक बनाने का काम करता है। चूँकि बालक को शिक्षण अधिगम का सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक बनाया है इसलिए एक सफल शिक्षक के लिए आवश्यक है कि अपने विषय के साथ–साथ वह उस बच्चे को भली–भाँति जानें जिसे शिक्षित करना है। यह कहना पूर्णतया सत्य है–

''शिक्षक वह धुरी है जिस पर बाल–केन्द्रित शिक्षण कार्यरत है।'' बालकेन्द्रित शिक्षण में शिक्षक माली के सदृश पौधों के समान बालकों का पोषण करके उनका शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास करता है। शिक्षक ही बालक को पशु प्रवृत्ति से निकालकर मानवीय प्रवृत्ति की ओर उन्मुख करता है।

बालकेन्द्रित शिक्षण एवं बालकेन्द्रित उपागम में भेद

बालकेन्द्रित शिक्षण

बाल केन्द्रित शिक्षण बालक की रुचियों, प्रवृत्तियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखकर आयोजित किया जाता है। इस शिक्षण के द्वारा बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण सम्मान करते हुए उसके सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। पाठ्यक्रम, पाठ्यसामग्री, समय, स्थान तथा मूल्यांकन पद्धतियाँ बच्चों के अनुकूल रखी जाती हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

बाल केन्द्रित उपागम

बालकेन्द्रित उपागम एक दृष्टिकोण है, जिसके द्वारा बालक को शैक्षणिक कार्यक्रम का मुख्य आधार बनाया गया है, शिक्षक को नहीं। यह शिक्षण प्रक्रिया का विश्लेषण करने की एक तर्कपूर्ण विधि है जो बालकेन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाती है। उपागम में बालकेन्द्रित शिक्षण के सभी पक्षों एवं अंगों का समावेश रहता है जैसे– छात्र, शिक्षक, विषयवस्तु, शैक्षणिक सामग्री, शिक्षण प्रणाली, शिक्षण प्रविधि, भौतिक परिवेश एवं शैक्षिक उद्देश्यों का मूल्यांकन।

ध्यातव्य बिन्दु

- शिक्षक की पूर्व तैयारी
- शिक्षण के पूर्व पाठयोजना बनाना
- उद्देश्य की जानकारी
- सम्प्रेषण विधि की जानकारी
- शिक्षण में बच्चों की सक्रिय भागीदारी
- सीखने का पर्याप्त अवसर देना
- प्रयोग पर बल
- रुचिपूर्ण शिक्षण देना
- समय–समय पर पुनर्बलन शब्दों का प्रयोग
- आत्मविश्वास को बढ़ाना।

गतिविधि

प्रशिक्षण निम्नलिखित प्रश्नों पर सभी प्रशिक्षुओं से दस–दस बिन्दु लिखने को कहें तथा उस पर चर्चा कराएं–

- बालकेन्द्रित शिक्षा में शिक्षक एवं बच्चों की भूमिका कैसी होनी चाहिए।
- बालकेन्द्रित शिक्षा तथा शिक्षक केन्द्रित शिक्षा में क्या अन्तर है ?
- आनंददायी शिक्षा में बालकेन्द्रित शिक्षा की क्या भूमिका है ?

इसी तरह के अन्य प्रश्न प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से पूछकर विधिवत चर्चा करें। क्रियाकलापों/शैक्षिक गतिविधियों को इनके आधार पर सुनिश्चित करें क्योंकि बच्चे उसी वातावरण में सीखते हैं जहाँ उन्हें अपनापन महसूस होता है तथा उन्हें सीखने में आनन्द एवं सन्तोष की प्राप्ति होती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

क्रिया/गतिविधि आधारित शिक्षण (Activity Based Teaching)

शिक्षण पद्धति को अधिक से अधिक गतिविधि आधारित बनाने, बच्चों में रुचि बनाये रखने एवं उनमें तार्किक ढंग से समझ विकसित करने के लिए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण की नवीन विधाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। बच्चों के व्यवहार, व्यक्तित्व, विद्यालय एवं कक्षा–कक्ष में उसकी सहभागिता, पाठ्येत्तर गतिविधियों में सहभागिता, स्कूल में नियमितता एवं स्वास्थ्य व स्वच्छता के प्रति जागरुकता की भावना विकसित हो रही है। इसके विपरीत कभी–कभी यह भी देखा जाता है कि बच्चे विद्यालय के अरुचिकर वातावरण, शिक्षण अधिगम की जटिल विधि, उपेक्षित व्यवहार आदि के कारण विद्यालय छोड़ देते हैं। आपने कभी यह जानने का प्रयास किया कि ऐसा क्यों होता हैं? हमें इसके कारणों को खोजकर अपने शिक्षण कार्य/प्रक्रिया में परम्परागत तरीके से हटकर नये ढंग से शिक्षण कार्य करना होगा। रूसो का कथन है कि '' यदि आप अपने छात्र की बुद्धि का विकास करना चाहते हैं तो उस शक्ति का विकास करना चाहिए, जिसे इसको नियन्त्रित करना है। उसको बुद्धिमान और तर्कपूर्ण बनाने के लिए उसे स्वस्थ बनाना होगा।''

उद्देश्य

- कक्षा में गतिविधि आधारित शिक्षण का प्रयोग कराना।
- शैक्षिक गतिविधि/क्रियाकलापों से परिचित कराना।
- गतिविधि के द्वारा अनेक दक्षताओं का विकास करना।
- शिक्षण को रोचक व प्रभावी बनाना।
- खेल–खेल में शिक्षण के द्वारा सिखाना।
- बच्चों की रुचियों, मनोवृत्तियों व स्तर को समझते हुए शिक्षण करना।
- कक्षा में सुचारू संचालनमें सहायक।
- बच्चों में सक्रियता का विकास करना।

शिक्षक प्रशिक्षुओं से चर्चा करें

- बच्चों को कक्षा में सक्रिय बनाने के लिए आप क्या करेंगे ?
- कक्षा में पढाते समय बच्चों की मौखिक भागीदारी के लिए आप उनसे किस प्रकार सहभागिता प्राप्त करेंगे ?

प्रशिक्षुओं के उत्तरों के आधार पर शिक्षक क्रिया आधारित/गतिविधि आधारित शिक्षण को समझायेंगे।

क्रिया/गतिविधि आधारित शिक्षण का अर्थ

क्रियापरक विधि का अर्थ है– छात्र का अपनी स्वयं की क्रिया के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। छात्र की क्रिया से तात्पर्य है कि जिस क्रिया को छात्र किसी उद्देश्य से पूर्ण करता है। उसको पूर्ण करने में उसका शरीर और मस्तिष्क दोनों ही क्रियाशील रहते हैं। इस आधार पर ज्ञात होता है कि छात्र की क्रियाएँ दो

Downloaded From www.dietmathura.org

प्रकार की होती हैं– शारीरिक तथा मानसिक। आत्मक्रिया एवं आत्माभिव्यक्ति इसके प्रमुख अंग माने जाते हैं।

उन सभी क्रियाओं के द्वारा जिनमें बच्चे रुचिपूर्वक, जिज्ञासा, कौतूहल, लगन तथा मनोयोग से सक्रिया रहकर कार्य करते हुए सीखते हैं, गतिविधि कहलाती है। गतिविधि से तात्पर्य उन सभी क्रियाओं से है जिनकी सहायता से शिक्षक के द्वारा विषयवस्तु को कक्षा में रोचक एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाये तथा बच्चे उसमें रुचि लें।

परिभाषा

शोइनचेन के अनुसार– ''क्रियापरक विधि का प्रयोग उस समय किया जाता है, जब किसी विषय के शिक्षण में लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए छात्रों के द्वारा किसी प्रकार की क्रिया की जाती है।''

गतिविधि का श्रेणीकरण

शारीरिक गतिविधि– कदमताल, पी0टी0, हाथ ऊपर नीचे कराना, उछल कूद आदि।

मानसिक गतिविधि– चिन्तन, मनन, तर्क, वार्तालाप, वर्गपहेली, पहेली पूछना, लेखन करना, भाषण देना आदि।

शारीरिक एवं मानसिक दोनों– पशु/पक्षी का नाम लेते हुए आगे या पीदे कूदना, वर्गकूद, अक्षरकूछ आदि।

गतिविधि–1

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को शारीरिक गतिविधियों से सम्बन्धित गतिविधि करायें–

ताली दो भाई ताली दो ताली दो भाई ताली दो,

आगे–आगे ताली दो, पीछे–पीछे ताली दो,

बांए–बांए ताली दो, दांए–दांए ताली दो

ऊपर–ऊपर ताली दो, नीचे–नीचे ताली दो

गतिविधि–2

आप प्रतिदिन अपने घरों में , बाजार में, स्कूल में, मंदिर में सीढ़ियाँ तो चढ़ते ही होंगे। आपके मन में कभी–कभी आता होगा कि कितनी ज्यादा सीढ़िया हैं या कम हैं। इन सीढ़ियों के चढ़ने उतरने की क्रिया के द्वारा हम क्या–क्या सीख रहे हैं ?

गतिविधि–3

शिक्षक प्रशिक्षुओं के साथ चिड़िया उड़ खेल के द्वारा चिड़िया फुर्र, कौआ फुर्र, बिल्ली फुर्र, उड़ने वाले और न उड़ने वाले पक्षी पशुओं की जानकारी कराकर उन्हें भावी शिक्षक के रूप में कक्षा को रोचक बनाकर रुचिपूर्ण ढंग से शिक्षण करने की विधा से परिचित करा सकते हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

चर्चा करें

उपर्युक्त तीनों गतिविधियों के द्वारा बच्चे किन–किन बातों से परिचित हो रहे हैं ?.. ....।

चर्चा के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि पहली गतिविधि शारीरिक, दूसरी शारीरिक व मानसिक दोनों और तीसरी तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता का विकास करती है। इस प्रकार इन गतिविधियों के द्वारा बच्चे क्या–क्या सीख सकते हैं कुछ बिन्दु उभर कर सामने आते हैं–

- शारीरिक क्षमता का विकास।
- आगे–पीछे, ऊपर–नीचे का ज्ञान।
- दिशाओं का ज्ञान– दाएं–बाएं का ज्ञान।
- गिनती के बढ़ते और उतरते क्रम का ज्ञान।
- जोड़ और घटाने का ज्ञान।
- सक्रियता का विकास।
- पशु–पक्षी सम्बन्धी भेद ज्ञान।
- उड़ने वाले पक्षियों का ज्ञान।
- न उड़ने वाले पक्षियों का ज्ञान।
- पशु–पक्षी के नामों की जानकारी।

ध्यातव्य बिन्दु

- कक्षा में सभी बच्चों को गतिविधि में भाग लेने का अवसर मिले।
- बच्चों में किसी प्रकार का भय न हो तथा गतिविधि रुचिकर हो।
- गतिविधि बच्चों में प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने वाली हो।
- गतिविधि बच्चों के अन्दर जिज्ञासा उत्पन्न करने वाली हो।
- बच्चों को केवल शारीरिक उछल–कूद ही न हो, वरन् उनका मानसिक अभ्यास भी हो।
- गतिविधियों के नियम लचीले हों तथा उनमें आवश्यकतानुसार बदलाव भी किया जा सके।

गतिविधियाँ कराने के ढंग (तरीके)

शिक्षक तीन प्रकार की गतिविधियों (यथा ज्ञान प्राप्त करने वाली, ज्ञान व्यक्त करने वाली, अनुभव करने वाली) के द्वारा रोचकतापूर्ण वातावरण का सृजन करके सीखने की क्रिया को सहजता प्रदान कर सकता है। ये गतिविधियां लिखित और मौखिक, एकल और सामूहिक, सामग्री के साथ या सामग्री के बिना किसी भी रूप में करायी जा सकती हैं। अभिनय, कहानी, नाटक, कविता, हाव–भाव, भ्रमण, अवलोकन प्रोजेक्ट कार्य आदि गतिविधियों की श्रेणी में आते हैं।

Downloaded From **www.dietmathura.org**

गतिविधि कैसे करें? बनाएं?

हम गतिविधि कैसे करें या कक्षा में कैसे कराएं यह प्रश्न सभी के मन में निरन्तर आता रहता है। क्योंकि कुछ लोगों में किसी भी बात को अभिनय या हाव—भाव से कहने की कला जन्मजात होती है जबकि कुछ लोग सीख कर सिखाने का प्रयास करते हैं।

गतिविधि कराने में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि आत्मविश्वास के साथ—साथ। विषय की स्पष्ट समझ होना जरूरी है तभी हम कोई गतिविधि विषय से जोड़ते हुए करा सकते हैं। कोई गतिविधि आयोजित करने से पहले गतिविधि के दौरान बैठक व्यवस्था क्या रहेगी, वितरण कैसे होगा, समूह की क्या जिम्मेदारियाँ रहेंगी, इन बातों पर निर्णय कर लेना होगा। गतिविधि में सीखने का क्रम, कहां शुरू करना, कहाँ विषय को समेटना, तथ्य का स्पष्ट सम्प्रेषण, सामग्री की उपलब्धता, प्रयोग और विभिन्न विषयों को जोड़ने की कला ही सीखने—सिखाने का आधार बन जाती है। गतिविधि में क्या सिखाना है यह पहले तय करके गतिविधि का निर्माण किया जा सकता है। गतिविधि को रोचकता से जोड़ना उसके प्रभाव को बढ़ा देता है लेकिन रोचकता अनायास आनी चाहिए, प्रयास पूर्वक नहीं।

गतिविधियों से बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। इन्हें सिर्फ 'खेलने के वादन' तक सीमित न करें बल्कि पाठ्य—पुस्तकों, पाठ्यवस्तु पर आधारित करते हुए गतिविधियों द्वारा बच्चों को सीखने का अवसर दें।

अनेक दक्षताएं एक ही गतिविधि द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं और एक ही दक्षता को प्राप्त करने के लिए अनेक गतिविधियों का प्रयोग किया जा सकता है।

गतिविधि आधारित शिक्षण विधि की विशेषताएं

गतिविधि आधारित शिक्षण विधि की निम्नलिखित विशेषताएं हैं—

- यह विधि छात्र को स्वयं करके सीखने (Learining by doing) का अवसर प्रदान करती है, जिससे छात्र ज्ञानार्जन करता है।
- यह विधि छात्र को कार्य करने में इतना मग्न कर देती है कि उसे ज्ञानार्जन करते समय थकान का अनुभव नहीं होता है।
- यह विधि शिक्षक—केन्द्रित न होकर बाल—केन्द्रित होती है।
- इस विधि के द्वारा छात्र क्रियाशील होकर पाठ्य विषय में रुचि का अनुभव करता है।
- यह विधि छात्रों को अनेक वस्तुओं को बनाने का प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी व्यावसायिक कुशलता को बढ़ाती है।
- यह विधि पाठ्य—पुस्तकों को महत्त्व न देकर वस्तुओं के संग्रह, पर्यटन, अवलोकन और परीक्षण को महत्व देती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

रुचिपूर्ण/आनन्ददायी शिक्षण

रुचिपूर्ण शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा बालक को प्रत्यक्ष ढंग से कुछ सिखाया नहीं जाता वरन् उसमें ऐसी रुचि एवं जिज्ञासा उत्पन्न की जाती है कि वह स्वयं सीखने के लिए प्रेरित हो जाता है क्योंकि विद्यालय का वातावरण घर के वातावरण से अधिक रुचिकर एवं प्रभावकारी होता है। मात्र किताबी ज्ञान जीवन के संघर्षों का सफलतापूर्वक सामना करने में पूर्णतः सफल नहीं हो सकता है। आज के बच्चे देश के भावी नागरिक हैं, अतः उनमें कुछ ऐसे गुणों का विकास आवश्यक है जिससे स्वयं लाभान्वित होने के साथ–साथ वे समाज तथा राष्ट्र को भी लाभ पहुँचा सकें।

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से चर्चा करें

- शिक्षण को प्रभावी एवं आकर्षक बनाने के लिए आप क्या करेंगे ?
- मान लीजिए आपकी कक्षा के बच्चे ठीक से नहीं पढ़ रहे हैं वे न कुछ सीख रहे हैं और न ही कुछ सीखना चाहते है। ऐसी स्थिति में आप कैसी शिक्षण विधा अपनायेंगे।

रुचिपूर्ण शिक्षण का अर्थ Interested Based Teaching

रुचिपूर्ण शिक्षण से आशय है शिक्षण की ऐसी विधा से है जो बालक की अभिरुचियों को ध्यान मे रखते हुए उनके सर्वांगीण विकास हेतु विकसित की गई है। प्रत्येक बालक की एक ही रुचि न होकर अलग–अलग रुचि होती है। उदाहरण के लिए एक बालक पढ़ने में रुचि रखता है तो दूसरा खेलने में और तीसरा संगीत सुनने में। इस प्रकार तीनों बच्चों को अलग–अलग बातों से लगाव अर्थात् रुचि है। सामान्यतया रुचि एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसके आधार पर कोई वस्तु अच्छी या खराब लगती है। अतः शिक्षक को उनकी रुचि के अनुकूल स्थूल पदार्थों, चित्रों, चार्टों, मॉड्ल आदि का प्रयोग पाठ पढ़ाते समय अवश्य करना चाहिए। बालक जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। वे अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। उनकी इस प्रवृत्ति को जागृत रखने और तृप्त करने का दायित्व शिक्षक का ही है। अतः शिक्षा के सार्वजनीकरण एवं उपलब्धि सुनिश्चित कराने हेतु शिक्षा विभाग द्वारा वर्ष 1994 में रुचिपूर्ण शिक्षा कार्यक्रम शुरु किया गया।

रुचिपूर्ण शिक्षण एक समयबद्ध कार्यक्रम तथा सुविचारित रणनीति हैं यह बालकों को शिक्षा देने हेतु आकर्षक एवं बालकेन्द्रित प्रणाली है, जिसमें बालकों को आनन्दित करने वाले क्रियाकलाप एवं विद्यालय में छात्र के प्रति शिक्षक का हेय रहित, मित्रवत् तथा आत्मीय व्यवहार है। यह गीतों, कहानियों तथा खेलों द्वारा सरल गतिविधि प्रधान बालकेन्द्रित शिक्षण है। यह एक ऐसी विधा है जो शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाकर शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होगी।

Downloaded From www.dietmathura.org

उद्देश्य

रुचिपूर्ण शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान एवं व्यवहार की दूरी को समाप्त कर शिक्षा को जीवन से जोड़ना है। रुचिपूर्ण शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य है–

- बालकों का नामांकन, ठहराव तथा गुणात्मक शिक्षा की सम्प्राप्ति।
- विद्यालय का बाह्य एवं आन्तरिक सौन्दर्यीकरण करके उसे एक आनन्दमयी केन्द्र के रूप में विकसित करना।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को क्रियाकलाप आधारित बनाकर प्रत्येक बालक की सहभागिता सुनिश्चित करना।
- शिक्षक को एक मित्र एवं सहयोगी के रूप में कल्पित करना।
- शिक्षकों की आपसी समझ और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित कर उनकी बौद्धिक, सृजनात्मक एवं कलात्मक दक्षताओं का समुचित उपयोग करना।
- समुदाय का सहयोग प्राप्त करना।
- निर्धारित दक्षताओं सम्बन्धी कौशलों का विकास करके न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करना।
- ह्रास एवं अवरोध को रोकना।
- विद्यालय का वातावरण सरल, आकर्षक, शैक्षिक एवं सौन्दर्यपूर्ण बनाना।

चर्चा करें

- शिक्षक छात्रों का सच्चा मित्र एवं सहयोगी है कैसे? ....।
- विद्यालय में बच्चों के नामांकन व ठहराव की स्थिति को बनाए रखने के लिए आप क्या करेंगे ?..... ....।

रुचिपूर्ण शिक्षण की विशेषताएँ

रुचिपूर्ण शिक्षा सीखने–सिखाने की कार्यशैली से जो बच्चों को रुचि, आनन्द, रुझान आदि को ध्यान में रखते हुए खेल विधि, गीत, रोचक क्रियाओं आदि के द्वारा दक्षताओं का विकास किया जाता है। जब दक्षताओं का विकास होगा तो अधिगम की सम्प्राप्ति अवश्य होगी। ऐसी स्थिति में शिक्षा की गुणवत्ता एवं न्यूनतम अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति सुनिश्चित हो जाती है रुचिपूर्ण शिक्षण की निम्नलिखित विशेषताएं है–

- बच्चों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करके उनका सर्वांगीण विकास करना।
- बच्चों हेतु रुचिपूर्ण एवं आनन्ददायी शिक्षण पद्धति का प्रयोग करना।
- करके सीखने का रुचिपूर्ण तरीका अपनाना।
- उबाऊ और अनाकर्षक वातावरण को हटाकर रोचक प्रस्तुति करना।
- सीमित संसाधनों से परिवेश को आकर्षक बनाने का प्रयास कराना।

रुचिपूर्ण शिक्षण– प्रशिक्षण प्रक्रिया

रुचिपूर्ण शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया एक सुनियोजित प्रक्रिया है जो बच्चों को रुचिकर एवं आनन्ददायी वातावरण का सृजन करके उनकी सहभागिता के द्वारा उन्हें सीखने हेतु प्रेरित करती है। रुचिपूर्ण कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन हेतु शिक्षा निदेशालय (बेसिक) निशातगंज, लखनऊ के अधीन राज्य स्तरीय रुचिपूर्ण

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है, जो विभागीय अधिकारियों, यूनीसेफ, जनपदीय स्टाक फोर्स, राइट तथा प्राथमिक शिक्षक संघ के साथ कार्यक्रमों को संचालित करता है। यूनीसेफ द्वारा प्रदत्त वित्तीय व्यवस्था भी प्रकोष्ठ के माध्यम से की जाती है। जनपद स्तर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी तथा जिला प्राथमिक शिक्षक संघ इस कार्यक्रम का संचालन करते हैं। विद्यालय स्तर पर ग्राम प्रधान, ग्राम शिक्षा समिति, अभिभावक एवं जन प्रतिनिधि की सहभागिता एवं सहयोग लिया जाता है।

रुचिपूर्ण शिक्षण विधा के सफल क्रियान्वयन हेतु जनपद स्तर पर जिला अधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी, जिला विकास अधिकारी एवं पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत अध्यक्ष, जिला पंचायत, नगर पंचायत, विकास खण्ड प्रमुख तथा ग्राम प्रधान की सहभागिता एवं सहयोग प्राप्त होता है।

रुचिपूर्ण शिक्षण में सीखने–सिखाने हेतु किए जाने वाले क्रियाकलाप

बच्चों के सीखने में क्रियाकलापों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। जब हम किसी विशेष दक्षता के लिए कोई गतिविधि करते हैं तो उसका बच्चों पर काफी असर पड़ता है तथा उन्हें जो अधिगम होता है वह स्थायी होता हैं क्योंकि वे स्वयं करके सीखते हैं। छात्र जिन विधाओं व क्रियाकलापों के द्वारा सहजता से सीख लेता है वे निम्न हैं–

Downloaded From www.dietmathura.org

- गीत / कविता
- कहानी चित्रण
- खेल
- अभिनय / नाटक
- भ्रमण / निरीक्षण
- पहेली
- वार्तालाप
- पर्यावरण में पायी जाने वाली वस्तुओं का उपयोग।

गतिविधि

शिक्षक प्रशिक्षुओं को 'कहानी चित्रण' को रोचक व आनन्दपूर्ण ढंग से सिखाने के लिए श्यामपट्ट पर, चार्ट पेपर पर या पट्टिकाओं में चित्रित कहानी के चित्र दिखाएँ तथा उनसे स्वयं कहानी बनाने को कहें। यथा– प्यासा कौआ कहानी को समझने व कहानी बनवाने के लिए चार्ट पेपर पर चित्रित आसमान में उड़ते हुए कौवे को, नदी के पेड़–पौधों का, थोड़े पानी वाले घड़े का, घड़े के पास कंकण का चित्र दिखाएंगे और पूछेंगे कि कौवा क्या कर रहा है? दूसरे चित्र में कौवे को घड़े में देखते हुए, देखकर उड़ते हुए, जमीन पर गिरे हुए कंकण को चोंच में उठाते हुए दिखाएंगे और पूछेंगे कि कौवा क्या–क्या कर रहा है ? तीसरे चित्र में कौवे को घड़े में कंकण डालते हुए, कंकणों से घड़े को आधा भरा हुआ, पानी ऊपर आया हुआ और फिर कौवे को चोंच से पानी पीता हुआ दिखाएंगे। प्रश्न करेंगे– कौवा क्या कर रहा है ? उसने घड़े में कंकण क्यों डाला?, कंकण डालने पर क्या हुआ ? घड़े में कितना पानी था आदि आदि।

ध्यातव्य बिन्दु

- बालक स्वभावतः क्रियाशील होते हैं।
- बच्चे हर समय कुछ न कुछ करना चाहते हैं।
- वे जिज्ञासु एवं कल्पनाशील होते हैं।
- वे नित्य नई–नई क्रियाओं में अधिक रुचि लेते हैं।

उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर रुचिपूर्ण शिक्षा में सभी विधाओं का समावेश किया गया है जो बालक की अभिरुचियों को ध्यान में रखते हुए उनके सर्वांगीण विकास हेतु विकसित की गई हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

सहभागी शिक्षण

प्राचीन काल से ही शिक्षा में शिक्षण प्रक्रिया का सम्बन्ध दो पक्षों से रहा है। इसमें प्रथम पक्ष शिक्षा प्रदान करने वाला होता है। जिसे गुरू के नाम से जानते हैं। वर्तमान में उसको शिक्षक के नाम से जानते हैं। दूसरा पक्ष शिक्षा ग्रहण करने वाला होता था जिसे प्राचीन काल में शिष्य तथा वर्तमान समय में छात्र के नाम से जानते हैं। इन दोनों पक्षों के मध्य ही शिक्षण व्यवस्था के ताने बाने को बुना जाता था। दोनों ही शिक्षण प्रक्रिया के लिए अनिवार्य माने जाते थे। शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए प्राचीनकाल में शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार की आचार संहिताएं बनायी जाती थीं जिससे कि शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली बन सके।

वर्तमान समय में इस प्रक्रिया को सहभागी शिक्षण के रूप में जाना गया अर्थात् सहभागी शिक्षा की अवधारणा का उदय हुआ जिसमें यह निश्चित किया गया कि शिक्षण प्रक्रिया को उपयोगी एवं प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक एवं छात्र दोनों की ही सहभागिता आवश्यक है। इसके विपरीत स्थिति में शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली सिद्ध नहीं होगी।

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से चर्चा करें

- शिक्षण करते समय बच्चों की सहभागिता क्यों आवश्यक है ?
- आपके द्वारा बच्चों में सहभागिता की भावना अथवा शिक्षण में बच्चों के सहयोग लेने हेतु प्रेरित करने की भावना किस प्रकार विकसित की जायेगी ?

सहभागी शिक्षण का अर्थ

सहभागी शिक्षण का सामान्य अर्थ शिक्षक एवं शिक्षार्थी की सहभागिता से लिया जाता है। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि शिक्षक। उदाहरणार्थ– एक शिक्षक कक्षा में पूर्ण तल्लीनता से शिक्षण कार्य कर रहा है। वह छात्रों से प्रश्न पूछकर, श्यामपट्ट पर लेखन करवाकर, पाठ को पढ़वाकर एवं पृष्ठ पोषण प्रदान करके उनका सहयोग प्राप्त कर रहा है। इस प्रकार दोनों पक्ष शिक्षण प्रक्रिया में एक–दूसरे को सहयोग दे रहे हैं। शिक्षक प्रश्न पूछता है तो छात्र उत्तर देता है । शिक्षक निर्देश देता है, छात्र पालन करता है। शिक्षक पाठ को अच्छी तरह से समझाने के लिए गतिविधि जैसे– फ्लैशकार्ड, चार्ट पेपर पर चित्रित चित्र, श्यामपट्ट पर अभ्यास कार्य, नाटक मंचन आदि कराकर अपने शिक्षण को रोचक व सहभागिता से युक्त बनाता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

परिभाषाएं

प्रो0 श्रीकृष्ण दूबे के शब्दों में– ''सहभागी शिक्षण का आशय उस शिक्षण प्रक्रिया से है जिसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी की पूर्ण सहभागिता निश्चित होती है तथा सहभागिता द्वारा ही शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली एवं उद्देश्यपूर्ण बनती है।

श्रीमती आर0के0शर्मा के अनुसार– जिस शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी का सहयोग प्राप्त करके उसे यह अनुभव कराया जाता है कि वह इस शिक्षण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पक्ष है, सहभागी शिक्षण कहलाता है।

उद्देश्य

- शिक्षक एवं छात्र दोनों को ही क्रियाशील बनाना।
- छात्रों को स्थायी ज्ञान प्रदान करना।
- कक्षा के वातावरण को रुचिकर एवं आनन्ददायी बनाना।
- विषयवस्तु की प्रस्तुति को सरल एवं बोधगम्य बनाना।
- छात्रों का चहुँमुखी विकास करना।
- छात्रों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करना।
- छात्रों में चिन्तन, मनन, कल्पना, तर्क, जिज्ञासा आदि प्रवृत्तियों का विकास करना।
- सहयोग एवं सहकारिता की भावना विकसित करना।,

सहभागी शिक्षण हेतु किए जाने वाले क्रियाकलाप

- प्रस्तुतीकरण के पश्चात् कठिन शब्दों का उच्चारणाभ्यास कराना।
- फ्लैशकार्डों को दिखाकर, चार्ट पट्टिका को दिखाकर व्याकरणात्मक त्रुटियों को उनकी सहभागिता के द्वारा दूर करना।
- छात्रों के द्वारा अपने अनुभव की अभिव्यक्ति कराना।
- श्यामपट्ट पर शब्दों का मिलान कराना, चित्र बनवाना आदि।
- समूह में बांटकर विषयगत जानकारी प्राप्त करना।
- कहानी, नाटक का मंचन छात्रों की सहभागिता से यथा– छात्रों को कहानी, नाटक का पात्र बनाकर व पात्रों में संवाद बुलवाकर।

चर्चा करें

- प्राचीन काल की शिक्षण प्रक्रिया में सहभागी शिक्षण की भूमिका' को आप कैसे स्पष्ट करें ?
- आप कक्षा में पढ़ाते समय बच्चों से किस प्रकार सहभागिता प्राप्त करेंगे ?

Downloaded From www.dietmathura.org

दक्षता आधारित शिक्षण Efficiency Based Teaching

वर्तमान युग प्रतिस्पर्द्धा एवं प्रतियोगिता का युग है। बालक को ज्ञान प्राप्ति के साथ ही साथ समाज में विशिष्ट स्थान बनाने के लिए किसी क्षेत्र में विशिष्ट दक्षताएं प्राप्त करनी होती हैं। दक्षताएं– भौतिक एवं मानसिक दोनों क्षेत्रों में हो सकती हैं। छात्र को चिन्तन, समस्या समाधान, शब्द कौशल, कविता लेखन, गणितीय गणनाएं, वाचन भाषण, नृत्य तथा संगीत आदि में दक्षता प्राप्त करनी चाहिए अथवा कम्प्यूटर, बागवानी, डिजायनिंग, भवन निर्माण, कारपेन्टरी, टंकण तथा चित्रकला आशुलिपि जैसे कार्यों में दक्षता प्राप्त करनी चाहिए क्योंकि दक्षता प्राप्त करने के बाद ही वह समाज में रहते हुए सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है।

यदि व्यक्ति के पास कोई दक्षता नहीं है तो उसका व्यक्तित्व एक पक्षीय बन कर रह जाता है।

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से चर्चा करें

- आप किन–किन कार्यों को भली–भाँति कर लेते हैं ?
- 'कुशलता' शब्द से क्या अभिप्राय है ?

शिक्षण बिन्दु

- दक्षता आधारित शिक्षण का अर्थ
- दक्षता आधारित शिक्षण के उद्देश्य
- दक्षता आधारित शिक्षण विधि के सोपान

दक्षता आधारित शिक्षण का अर्थ

दक्षता आधारित शिक्षण से तात्पर्य है दक्ष अध्यापकों द्वारा ऐसा शिक्षण जो छात्रों को ज्ञान प्राप्ति में दक्ष बना सके। दक्षताओं का विकास तभी सम्भव हैं जब शिक्षार्थी किसी ज्ञान की इकाई को इस सीमा तक सीख लें कि वह उसके जीवन का अंग बन जाए। अध्यापन विज्ञान की शब्दावली में इसे मास्टरी लर्निंग अथवा ऑप्टिमम लर्निंग कहा जाता है। बहुत से विद्वान अधिगम के 'आटोमाइजेशन' पर बल देते है। जिसका अर्थ है कि ज्ञान की इकाई, विचार और क्रिया के मार्ग से होती हुई बच्चे के सहज जीवनचर्या का अंग बन जाए। इस प्रकार दक्षता आधारित शिक्षण के द्वारा छात्रों की दक्षता पर आधारित न्यूनतम अधिगम की सम्प्राप्ति करना है, जिससे छात्रों की दक्षता को सुनिश्चित किया जा सके।

गतिविधि

शिक्षक कक्षा–1 के बच्चों को 1–50 तक की गिनती सिखाना चाहते हैं तो शिक्षण में विविध क्रियाकलापों, टी0एल0एम0 व अन्य सामग्रियों के द्वारा गिनतियों की संख्या धारण व पहचान आदि कराएं – यथा

☆ – **1**

☆ ☆ – **2**

Downloaded From www.dietmathura.org

उपर्युक्त गतिविधि के द्वारा शिक्षक बच्चों में निम्नलिखित दक्षताएं विकसित करता है–

- संख्याओं की धारणा
- संख्याओं की पहचान
- संख्याओं को लिखना
- संख्याओं को लिखने का निश्चित क्रम

इसी प्रकार यदि शिक्षक कक्षा–2 के बच्चों को हिन्दी भाषा में कविता सिखाना चाहता है तो वह उचित लय, हाव–भाव, उतार चढ़ाव आदि के साथ कविता को सुनाकर, अनुकरण वाचन करा करके, कठिन शब्दों का उच्चारणाभ्यास कराके, बच्चों से दूसरी कविताएं सुनाने के द्वारा उनकी सहभागिता प्राप्त करके, टी0एल0एम0 अन्य सामग्रियों के द्वारा बच्चों में भाषा सम्बन्धी दक्षताओं का विकास कर सकते हैं। भाषा सम्बन्धी दक्षताएं हैं–

- सुनना
- बोलना
- पढ़ना
- लिखना

उद्देश्य (दक्षता आधारित शिक्षण के उद्देश्य)

- छात्रों को दक्ष बनाना
- प्रतिस्पर्द्धा की भावना विकसित करना
- ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करना
- शिक्षण के प्रति रुचि विकसित करना
- सहयोग की भावना विकसित करना।

चर्चा करें

- आप कक्षा–1 के बच्चों को वर्णमाला के अन्तर्गत– अ से अः तक का ज्ञान किस प्रकार देंगे कि वे इन वर्णों को पहचानने, बोलने, लिखने में दक्ष हो सकें।

दक्षता आधारित शिक्षण विधि के सोपान

दक्षता आधारित शिक्षण विधि के निम्नलिखित सोपान हैं–

- पूर्व तैयारी– उद्देश्य निर्धारण, सहायक सामग्री।
- विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण।
- नियम–निर्णय का समन्वयीकरण, सूचीकरण।
- अभ्यास
- अभ्यास कार्य के मध्य की गयी त्रुटियों का शुद्धिकरण।
- प्रयोग।

Downloaded From www.dietmathura.org

जब छात्र अभ्यास कार्य के मध्य त्रुटियाँ करना बन्द कर दें तो दक्षता विकास हेतु पुनः अभ्यासात्मक प्रयोग कराया जाय और इस प्रक्रिया को तब तक जारी रखा जाय जब तक कि छात्र वांछित दक्षता प्राप्त नहीं कर लें।

ध्यातव्य बिन्दु

- दक्षता का कार्यक्षेत्र छात्रों के स्तरानुकूल होना चाहिए।
- अभ्यास कार्य के समय बालकों की थकान का विशेष ध्यान रखा जाय।
- छात्र की अन्तर्निहित शक्तियों को ज्ञातकर उनमें दक्षता विकास हेतु प्रयास करने चाहिए।
- छात्रों को अभ्यास कार्य के लिए अभिप्रेरित करने के लिए दक्षता को उनके तात्कालिक जीवन से सम्बन्धित किया जाय।
- छात्रों को आवश्यक मार्गदर्शन दिया जाय।
- दक्षता विकास हेतु छात्र तथा अध्यापकों को बड़े ही धैर्य के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए, क्योंकि इसकी सम्प्राप्ति में समय भी लग सकता है।
- शिक्षण में टी0एल0एम0 व अन्य शैक्षिक सामग्रियों का प्रयोग करके छात्रों के ज्ञान में वृद्धि करके दक्षता बढ़ायी जा सकती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

उपचारात्मक शिक्षण

(Remedial Teaching)

उपचारात्मक शिक्षण वास्तव में छात्र ने जो कुछ सीखा है उसको ध्यान में रखकर उसकी उन्नति प्राप्त करने के लिए होता है। इसके अन्तर्गत शिक्षक छात्र को अपनी कमजोरियों के क्षेत्रों में अधिक योग्यता की दिशा में अग्रसर करता है।

प्रमुख शिक्षण बिन्दु

- उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ
- परिभाषाएँ
- उपचारात्मक शिक्षण का महत्व
- उपचारात्मक शिक्षण के समय ध्यातव्य बिन्दु
- उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ

शिक्षा का उद्‌देश्य मात्र ज्ञान प्रदान करना ही नहीं है बल्कि बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। वर्तमान बालकेन्द्रित शिक्षा व शिक्षण का भी एकमात्र लक्ष्य यही है कि बालकों के व्यवहार में अभीष्ट परिवर्तन परिलक्षित हो। इसके लिए आवश्यक है कि हमारा पाठ्‌यक्रम, पाठ्‌यपुस्तकें, शिक्षण विधियाँ, क्रियाकलाप, शिक्षण अधिगम सामग्री आदि सभी कुछ बच्चों की रुचि, आयु व समझ के अनुरूप हों।

विद्यालय में आने वाले बच्चे रुचि, आयु, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक व आर्थिक स्तर, क्षमता व दृष्टिकोण में एक दूसरे से सर्वथा भिन्न होते हैं। इस कारण से किसी कक्षा व विषय में उनके सीखने का स्तर भी एक जैसा नहीं रहता है। कुछ बच्चे शीघ्र ही सब कुछ सीख लेते हैं जबकि कुछ बहुत प्रयास करने पर भी अपेक्षित गति से सीखने में असमर्थ रहते हैं। सीखने की असमर्थता के कारण धीरे–धीरे ये बच्चे कक्षा के अन्य बच्चों से पिछड़ते जाते हैं। उन्हें सीखने में अनेकों प्रकार की कठिनाइयां महसूस होती हैं। ऐसे ही बच्चों की कठिनाइयों को दूर करने के लिए शिक्षक उपचारात्मक शिक्षण की सहायता लेते हैं।

चर्चा के बिन्दु

- बच्चे कैसे अधिक सीखते हैं ? (स्वयं प्रयास करके या शिक्षक की सहायता से)
- कक्षा के सभी बच्चों का सीखने का स्तर एक समान क्यों नहीं होता है ?

उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ (Meaning of Remedial Teaching)

शिक्षा जगत में 'उपचारात्मक' शब्द चिकित्साशास्त्र से लिया गया है। जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक विविध प्रकार के परीक्षणों के आधार पर रोगी के रोग तथा रोग के कारणों का पता लगाकर उसकी समुचित चिकित्सा करता है, उसी प्रकार एक कुशल शिक्षक विभिन्न प्रकार की शिक्षण प्रविधियों,

Downloaded From www.dietmathura.org

परीक्षणों, निरीक्षण व वार्तालाप के आधार पर शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े व कमजोर बच्चों की कठिनाइयों का पता लगाते हैं और फिर उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा उनकी कठिनाइयों/त्रुटियों को दूर करके उनके सीखने की क्षमता में वृद्धि करते हैं तथा उन्हें सामान्य बालकों के स्तर पर लाने का प्रयास करते हैं।

उपचारात्मक शिक्षण का अभिप्राय उस शिक्षण से है जिसकी व्यवस्था छात्रों की कमियों/दुर्बलताओं /अशुद्धियों को दूर करने के लिए की जाती है। उनकी दुर्बलताओं को जानकर शिक्षा का ऐसा कार्यक्रम बनाया जाता है जिससे उनकी विशिष्ट कठिनाइयों, दुर्बलताओं, बुरी आदतों व नकारात्मक मनोवृत्तियों को दूर करके सीखने के दूषित प्रभावों को नष्ट किया जा सकता है और गलत ढंग से सीखी गई बातों में सुधार किया जा सकता है। इसके विकासात्मक रूप द्वारा छात्रों की सीखी गई दक्षताओं/कुशलताओं को और उत्कृष्टता प्रदान की जा सकती है।

परिभाषाएँ (Definitions)

योकम व सिम्पसन के अनुसार– ''उपचारात्मक शिक्षण उस विधि को खोजने का प्रयत्न करता है जो छात्र को अपनी कुशलता या विचार की त्रुटियों को दूर करने में सफलता प्रदान करें।''

ब्लायर के अनुसार– '' उपचारात्मक शिक्षण का प्रमुख कार्य है– दोषपूर्ण अध्ययन एवं अध्यापन के प्रभाव को दूर करना। इसका मुख्य लक्ष्य है इन दोषों व दोषों के कारणों को खोजना एवं कमजोरियों का निराकरण करना।''

शिक्षा शब्दकोष के अनुसार– ''उपचारात्मक शिक्षण, एक छात्र की कमी निम्न सामान्य योग्यता के कारण नहीं, को अंशतः अथवा पूर्णतः दूर करने के लिए उद्दिष्ट विशेष शिक्षण है।''

उपचारात्मक शिक्षण निदानात्मक परीक्षण के बाद आता है क्योंकि नैदानिक परीक्षणों के द्वारा ही पहले छात्रों की त्रुटियों, कठिनाइयों व अधिगम दोषों की जानकारी प्राप्त की जाती है और उसके बाद उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है।

चर्चा करें– *उपचारात्मक शिक्षण से क्या लाभ हैं ?*

उपचारात्मक शिक्षण का महत्व (Importance of Remedial teaching)

शिक्षा प्रक्रिया में उपचारात्मक शिक्षण का महत्व निम्नलिखित कारणों से है–

- छात्रों की विषय/प्रकरण सम्बन्धी विशिष्ट कठिनाइयों/दुर्बलताओं का पता चल जाता है।
- छात्रों की सामान्य व विशिष्ट कठिनाइयों का निराकरण हो जाता है।
- बालकों की क्षमताओं को उचित दिशा में मोड़ने में सहायता मिलती है।
- शिक्षण रोचक, उद्देश्यपूर्ण व प्रभावशाली बनाने में सहायता मिलती है।
- छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। उनमें आत्मविश्वास जाग्रत होता है।
- बालकों की व्यक्तित्व सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण हो जाता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

- शिक्षक की प्रवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन आता है।
- छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों में सुधार के साथ–साथ भविष्य में होने वाली त्रुटियों से भी बचाव होता है।
- उपचारात्मक शिक्षण से बालकों को अपने वातावरण से अनुकूलन करने में सहायता मिलती है।

उपचारात्मक शिक्षण के समय ध्यातव्य बिन्दु

उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करते समय शिक्षक को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

- छात्रों की कठिनाइयों की प्रकृति भली–भाँति समझ लेनी चाहिए कि वे सामान्य हैं या विशिष्ट।
- शिक्षण छात्रों की रुचि, स्तर व आवश्यकता केन्द्रित हो।
- शिक्षण सूत्रों व शिक्षण सिद्धान्तों के आधार पर शिक्षण करना चाहिए।
- विषयवस्तु सीखने में जिस स्थल पर बच्चों को कठिनाई हो, वहीं से उपचारात्मक शिक्षण प्रारम्भ करना चाहिए।
- अभ्यास कार्यों में विविधता हो ताकि छात्र उसमें रुचि लें व कक्षा में नीरसता न रहे।
- व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर छात्रों को दिये जाने वाले कार्यों में समय–समय पर परिवर्तन किया जाना चाहिए।
- अभ्यास कार्य व अन्य कार्यों का सतत मूल्यांकन किया जाये।
- कार्य या अभ्यास से मूल प्रयोजन की सन्तुष्टि होनी चाहिए।
- छात्रों को समय–समय पर उनकी प्रगति से अवगत कराया जाना चाहिए।

शिक्षक छात्रों की कठिनाइयों को कैसे जानें ?

- कक्षा कार्य या अभ्यास कार्य द्वारा
- गृह कार्य/प्रॉजेक्ट कार्य द्वारा
- सत्र परीक्षा के परिणाम द्वारा
- मासिक/अर्द्धवार्षिक/वार्षिक परीक्षाओं के परिणाम द्वारा।
- कक्षा में छात्रों से पूछे जाने वाले प्रश्न के प्राप्त उत्तर द्वारा
- छात्रों के व्यवहार/प्रतिक्रियाओं के सतत निरीक्षण/अवलोकन द्वारा
- अभिभावकों से साक्षात्कार द्वारा

उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करने की विधियाँ (Methods of Providing Remedial Teaching)

छात्रों की त्रुटियों की जानकारी होने पर उन्हें दूर करने हेतु शिक्षक द्वारा उपचारात्मक शिक्षण कार्य व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार से किया जा सकता है। छात्रों का वर्गीकरण करके (मानसिक स्तर व कठिनाइयों के अनुसार) उनके स्तर के अनुसार अभ्यास कार्य व अन्य क्रियाकलाप कराये जाने चाहिए। उपचारात्मक शिक्षण को सफल व प्रभावी बनाने हेतु निम्न प्रकार के क्रियाकलाप कराये जा सकते हैं–

- व्यक्तिगत शिक्षण
- समूह शिक्षण (छोटे व बड़े समूह)

Downloaded From www.dietmathura.org

- साधारण अभ्यास कार्य (लिखित व मौखिक)
- विशिष्ट अभ्यास कार्य (लिखित व मौखिक)
- समूह चर्चा
- वाद विवाद
- गोष्ठियों/खेल व अन्य गतिविधियों का आयोजन
- प्रॉजेक्ट कार्य
- पुनरावृत्ति व गृहकार्य
- शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग
- कार्यपुस्तिका का प्रयोग
- सहपाठी अध्ययन समूह
- समस्त कार्यों का सतत मूल्यांकन

स्वयं करें–

प्रशिक्षु उपचारात्मक शिक्षण हेतु स्वयं और कौन–कौन से क्रियाकलाप करा सकते हैं ? सूची बनाएँ।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि उपचारात्मक शिक्षण शिक्षा के क्षेत्र में, गुणवत्ता प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसका समुचित प्रयोग करके शिक्षक अपने कक्षा के शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े व कमजोर बच्चों की कठिनाइयों का पता लगाकर उन्हें दूर करके छात्रों के सीखने की क्षमता में वृद्धि कर सकते हैं तथा उनकी क्षमताओं में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

मूल्यांकन

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. उपचारात्मक शिक्षण का क्या अर्थ है ?

2. उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य क्या है ?

3. बच्चों को सीखने में होने वाली कठिनाइयों को शिक्षक कैसे जान सकते हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

4. उपचारात्मक शिक्षण हेतु किन विधियों का प्रयोग शिक्षक को करना चाहिए ?

5. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उपचारात्मक शिक्षण का क्या महत्व है ?

6. शिक्षक के रूप में आप उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखेंगे?

प्रशिक्षुओं हेतु स्वयं करने के लिए

- उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करने से पूर्व कक्षा 1 व 2 में भाषा व गणित में बच्चों का अधिगम स्तर जाँचने हेतु परीक्षण प्रपत्र बनाइये।
- विद्यालय में जाने पर (इण्टर्नशिप अवधि में) स्वयं को आवंटित किसी कक्षा के बच्चों का पूर्व परीक्षण करके उनके लिए योजना बनाकर उपचारात्मक शिक्षण करें तथा उसकी लिखित विस्तृत आख्या तैयार करके प्रशिक्षण कक्ष में अपने अनुभवों को अपने साथियों से साझा करें।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण

वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर जनसंख्या वृद्धि के कारण विद्यालयों में छात्र संख्या तो बढ़ती जा रही है लेकिन उस अनुपात में शिक्षकों की संख्या अभी भी बहुत कम है। अनेक विद्यालय ऐसे हैं जहाँ एक ही अध्यापक कक्षा एक से पाँच तक के बच्चों को पढ़ा रहे हैं। प्रत्येक कक्षा के लिए अध्यापक की नियुक्ति एक जटिल समस्या बनी हुई है। इसके साथ एक विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों की वैयक्तिक भिन्नता, उपलब्धि, अभिरुचि तथा मानसिक परिपक्वता एक अलग से एक समस्या उत्पन्न करती है। अपनी मानसिक योग्यता, अभिरुचि और विकास क्रम की विशिष्टता के कारण ही एक ही कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों के अधिगम का स्तर भी भिन्न–भिन्न होता है। इस समस्या के समाधान हेतु ऐसी शिक्षण युक्तियाँ और तकनीकें अपनानी होंगी, जिनके द्वारा एक ही समय में एक से अधिक कक्षाओं का संचालन सुचारू रूप से किया जा सके।

चर्चा करें–

यदि आपके विद्यालय में शिक्षकों की संख्या कम है और आपको सभी कक्षाओं में शिक्षण कार्य एक साथ करना है तो आप कक्षा को किस प्रकार व्यवस्थित करेंगे ?

बहुकक्षा शिक्षण का अर्थ

विद्यालयों में कक्षा–कक्षों के अभाव में दो या दो से अधिक कक्षाओं को एक साथ पढ़ाना पड़ता है, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इसी कमी को दूर करने के लिए ही बहुकक्षा शिक्षण की व्यवस्था अपनायी जाती है। बहुकक्षा शिक्षण का आशय प्रभावी प्रबन्धन विधियों को अपनाकर व्यवस्थित शिक्षण से है। बहुकक्षा शिक्षण का सीधा अर्थ है – एक शिक्षक द्वारा एक से अधिक कक्षाओं से एक साथ पढ़ाना। इसमें शिक्षक एक से अधिक कक्षा के बच्चों को एक साथ बैठकर शिक्षण करता है। इस शिक्षण व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षक की श्रम शक्ति, सूझ–बूझ और समय का अधिक उपयोग होता है।

बहुकक्षा शिक्षण को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए शिक्षक को पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, संदर्शिकाओं, समय विभाजन चक्र, समूह–नायक (peer leader), मॉनिटर, बैठक व्यवस्था, बच्चों के विषयवार समूह को सही रूप में संचालित करना होता है। इसमें शिक्षक को एक से अधिक कक्षाओं के बच्चों को एक साथ बैठाकर शिक्षण कार्य करना होता है। बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बांटकर उन्हें समूह–कार्य दिया जाता है, जिससे बच्चों को एक–दूसरे के साथ चर्चा करते हुए तथा एक–दूसरे को सहयोग देते हुए विषय को समझने का अवसर मिल जाता है। शिक्षक एक समूह को कार्य देकर दूसरे समूह के साथ कार्य करता है।

चर्चा बिन्दु–

- आप अपनी बहुश्रेणी कक्षा में मॉनीटर से किस प्रकार सहायता लेंगे।
- बहुश्रेणी कक्षा के शिक्षक के रूप में आप अपनी भूमिका किस प्रकार निभायेंगे ?

Downloaded From www.dietmathura.org

बहुश्रेणी शिक्षण की आवश्यकता

बहुश्रेणी शिक्षण (बहुकक्षा शिक्षा) आज एक अपरिहार्य आवश्यकता है क्योंकि हमारे अधिकांश प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या प्रति विद्यालय पाँच (कक्षा–1 से 5 तक प्रत्येक कक्षा हेतु एक शिक्षक) से कम है। बहुश्रेणी शिक्षण में शिक्षक को भाषा, गणित तथा पर्यावरणीय अध्ययन के साथ–साथ कला और कार्यानुभव का भी शिक्षण करना अनिवार्य होता है। संज्ञानात्मक क्षेत्र के साथ ही सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र में भी बहुत से कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इस शिक्षण में गीत, लोकगीत, नाटक, कविता पाठ तथा अन्त्याक्षरी आदि को विशेष महत्त्व प्रदान किया जाता है। ये क्रिया–कलाप शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं।

बहुश्रेणी शिक्षण में मॉनीटर प्रणाली तथा प्रोजेक्ट प्रणाली का विशेष महत्व होता है। प्रोजेक्ट कार्य को करने के लिए बच्चों को समूहों में बाँट दिया जाता है क्योंकि समूह में सीखना प्रत्येक शिक्षण विधा हेतु आवश्यक होता है। समूह के द्वारा उनमें सहभागिता से कार्य करने की भावना जाग्रत होती है। वे एक–दूसरे के अभ्यास कार्यों को स्वयं हल करते हैं साथ ही साथ उनकी त्रुटियों का सुधार भी करते रहना चाहिए। ऐसा करने से सक्रिय अधिगम की स्थिति प्राप्त होती है, साथ ही अनुशासन भी बना रहता है तथा अध्यापक को ऐसा करने से अधिक समय मिल जाता है, जिसका वे अन्यत्र भी उपयोग कर सकते हैं।

उदाहरणार्थ
एक शिक्षक एक कक्षा कक्ष

श्यामपट्ट		श्यामपट्ट
I I I I I		V V V V V
I I I I I		V V V V V
I I I I I		V V V V V
	शिक्षक	
श्यामपट्ट		श्यामपट्ट
II II II II II		IV IV IV IV IV
II II II II II		IV IV IV IV IV
II II II II II		IV IV IV IV IV
	श्यामपट्ट	
	III III III III III	
	III III III III III	
	III III III III III	

www.dietmathura.org
Downloaded From www.dietmathura.org

इसी प्रकार

- दो शिक्षक दो कक्षा–कक्ष
- तीन शिक्षक दो कक्षा– कक्ष
- चार शिक्षक दो कक्षा–कक्ष आदि की परिस्थिति में बैठक व्यवस्था बनवायी जाये।

ध्यातव्य बिन्दु

- शिक्षकों एवं कक्षा–कक्षों की संख्या की जानकारी।
- कक्षा–कक्षों में बैठने की स्थिति की जानकारी।
- समय विभाजन चक्र प्रबन्धन की जानकारी।
- स्थान प्रबन्धन की जानकारी।
- पाठ्यवस्तु प्रबन्धन।
- शिक्षण सामग्री प्रबन्धन।
- संसाधन प्रबन्धन।
- शिक्षण विधा प्रबन्धन।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रबन्धन।

चर्चा बिन्दु–

- आप बहुश्रेणी शिक्षण हेतु किसी एक विषय की कार्ययोजना किस प्रकार बनाएंगे ?
- आपकी कक्षा में शैक्षिक दृष्टि से कई स्तर के विद्यार्थी हैं आप सभी विद्यार्थियों के समुचित विकास हेतु किस प्रकार से कक्षा का संचालन करेंगे ?

बहुस्तरीय शिक्षण का अर्थ

> ''विभिन्न उपलब्धि स्तर वाले बच्चों को कुशलतापूर्वक पढ़ाने की योजनाबद्ध प्रक्रिया बहुस्तरीय शिक्षण कहलाती है।''

''मानसिक स्तरीय शिक्षण ही बहुस्तरीय शिक्षण कहलाता है।'' एक ही कक्षा में अलग–अलग तरीके से व अलग–अलग गति से सीखने वाले छात्र होते हैं। जब एक शिक्षक एक ही समय में कक्षा के प्रत्येक बच्चे को उसके स्तर के आधार पर समूहों में बाँटकर शिक्षण कार्य करता है, तो वह बहुस्तरीय शिक्षण कहलाता है। जैसे–किसी कक्षा में गणित विषय में तेज, मध्यम तथा धीमी गति से सीखने वाले बच्चे हैं, उन्हें क्रमशः कठिन, मध्यम एवं सरल प्रश्न देकर हल कराना। बहुस्तरीय शिक्षण कहलाता है। मूल्यांकन के आधार पर बच्चों की उपलब्धि स्तर का निर्धारण A B C D ग्रेड से करके पाठ्यवस्तु का शिक्षण बच्चों के मानसिक स्तर और उनके सीखने की दर के अनुसार करना ही उपयुक्त होता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

बहुस्तरीय शिक्षण की आवश्यकता

- बच्चों की उपलब्धि स्तर का अलग होना।
- बच्चों में सीखने की गति का अलग–अलग होना।

बोध प्रश्न

- बालकेन्द्रित शिक्षण का आशय स्पष्ट करते हुए बालकेन्द्रित शिक्षण तथा शिक्षक केन्द्रित शिक्षण में अन्तर स्पष्ट कीजिए
- गतिविधि आधारित / क्रियाविधि आधारित शिक्षण के द्वारा शैक्षिक गुणवत्ता को किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है। स्पष्ट कीजिए।
- सहभागी शिक्षण से आप क्या समझते हैं ? इसकी विशेषताओं एवं उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
- कक्षा शिक्षण में दक्षताधारित शिक्षण विधि की क्या उपयोगिता है स्पष्ट कीजिए।
- उपचारात्मक शिक्षण का क्या अभिप्राय है ? मन्द–बुद्धि एवं प्रखर बुद्धि छात्रों के लिए किस प्रकार के उपचारात्मक कार्य किए जाने चाहिए ? स्पष्ट कीजिए।
- बहुकक्षा / बहुस्तरीय शिक्षण में बच्चों की बैठक व्यवस्था को उदाहरण सहित स्पष्ट करते हुए दोनों के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

मूल्यांकन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बाल केन्द्रित शिक्षण में प्रमुखता दी जाती है–

(i) शिक्षक के अच्छे व्याख्यान की, (ii) बालक की आवश्यकता, रुचि एवं क्षमता की,

(iii) लेखन कार्य की, (iv) उपरोक्त सभी।

2. शारीरिक एवं मानसिक गतिविधि का सम्बन्ध है–

(i) चिन्तन (ii) वार्तालाप

(iii) अक्षरकूद (iv) कदमताल

3.'यूनीसेफ वित्त पोषित रुचिपूर्ण शिक्षा कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया–

(i) 1984 में (ii) 1974 में

(iii) 1994 में (iv) 1980 में

Downloaded From www.dietmathura.org

4. 'सहभागी शिक्षण का आशय उस शिक्षण प्रक्रिया से है जिसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी की पूर्ण सहभागिता निश्चित होती है तथा सहभागिता द्वारा ही शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली एवं उद्देश्य पूर्ण बनती है।'' यह परिभाषा है–

(i) श्रीमती आर0के शर्मा (ii) प्रो0 श्रीकृष्ण दूबे

(iii) शोइनचेन (iv) रायबर्न

5. छात्रों की त्रुटियों का निराकरण किया जाता है–

(i) बाल–केन्द्रित शिक्षण (ii) बहुस्तरीय शिक्षण

(iii) उपचारात्मक शिक्षण (iv) दक्षता आधारित शिक्षण

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. बालकेन्द्रित शिक्षण उपागम का क्या अर्थ है ?

2. मन्द बुद्धि छात्रों के लिए दो उपचारात्मक कार्य लिखें।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रुचिपूर्ण शिक्षण के उद्देश्यों को संक्षेप में लिखिए।

2. बहुकक्षा शिक्षण में बैठक व्यवस्था को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बालकेन्द्रित शिक्षण में शिक्षक की भूमिका का वर्णन करते हुए बालकेन्द्रित शिक्षण एवं बालकेन्द्रित उपागम में भेद स्पष्ट कीजिए।

2. दक्षताधारित शिक्षण विधि से आपका क्या आशय है ? इस विधि के सोपान एवं ध्यान देने योग्य तथ्यों का वर्णन कीजिए।

Downloaded From www.dietmathura.org

सूक्ष्म शिक्षण

- अर्थ एवं परिभाषा
- आवश्यकता एवं महत्व
- सोपान या पद
- सूक्ष्म शिक्षण के सिद्धान्त

आप सभी ने कक्षा में अपने अध्यापकों को पढ़ाते हुए देखा होगा। उनमें से कुछ का शिक्षण कार्य बहुत अच्छा लगता होगा। उनके एक बार पढ़ाने पर अच्छी तरह समझ में आ भी जाता होगा। कभी आपने सोचा कि उनके पढ़ाने का तरीका इतना प्रभावी कैसे है? दरअसल आपके गुरूजनों ने शिक्षण कार्य में दक्षता प्रशिक्षण विधियों के बारम्बार अभ्यास से पायी होगी। शिक्षण कार्य में समझ देने वाली नयी विधियों में से एक विधि है– सूक्ष्म शिक्षण

सूक्ष्म शिक्षण से **तात्पर्य है–** शिक्षण का लघु रूप। शिक्षण की जटिल प्रक्रिया को सरलतम ढंग से छोटे–छोटे सोपानों में प्रशिक्षुओं के सामने प्रस्तुत करने की एक रुचि पूर्ण प्रक्रिया है सूक्ष्म शिक्षण। सूक्ष्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रशिक्षुओं को शिक्षण कौशल की बारीकियों से अवगत कराया जाता है। अध्यापक बनने के पूर्व शिक्षण दक्षता का एक प्रकार से अभ्यास है।

परिभाषा– एलेन– ने अपनी पुस्तक *माइक्रोटीचिंग* में लिखा है **''**सूक्ष्म शिक्षण सभी प्रकार की शिक्षण सम्बन्धी क्रियाओं को छोटे–छोटे भागों में विभक्त करना है।''

इन्हें भी जानें–
- ए0डब्लू एलन– को सूक्ष्म शिक्षण का जन्मदाता माना जाता है। भारत में सेन्ट्रल पैडागाजीकल इन्स्टीट्यूट के डा0 डी0डी0 तिवारी ने इस विधि का प्रयोग किया।

क्लिफ्ट– ''सूक्ष्म शिक्षण अध्यापक प्रशिक्षण की वह विधि है जिसमें शिक्षण की स्थितियों को सरल किया जाता है और शिक्षण व्यवहार को किसी एक विशिष्ट कौशल के अभ्यास से जोड़ दिया जाता है। यह अभ्यास शिक्षण की अवधि एवं कक्षा के आकार के छोटे स्वरूप पर होता है।''

बी0के0पासी– ''सूक्ष्म शिक्षण एक प्रशिक्षण तकनीकि है जो प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों से यह अभिलाषा रखती है कि किसी तथ्य को थोड़े से छात्रों को, थोड़े से समय में एक विशिष्ट शिक्षण कौशल के माध्यम से शिक्षण दें।''

उपर्युक्त चर्चा से हमने जाना–

- सूक्ष्म शिक्षण में कक्षा का आकार छोटा होता है।
- पाठ्यवस्तु सीमित होती है।
- पढ़ाने की अवधि 10 मिनट होती है।
- छात्रों (प्रशिक्षु) की संख्या 5 से 10 होती है।
- एक शिक्षण कौशल पर ही बल दिया जाता है।

मान लीजिए– ''श्यामपट्ट कार्य'' को एक शिक्षण कौशल के रूप में सिखाना है तो इसमें हम निम्नवत बिन्दुओं को समझायेंगे–

- लेख स्पष्ट व स्वच्छ हो।

Downloaded From www.dietmathura.org

- श्यामपट्ट के समक्ष किस दिशा में खड़े होकर लेखन शुरू हो।
- लेख पठनीय हो।
- लेख सीधी पंक्ति में हो।
- अक्षरों, शब्दों, पंक्तियों के बीच पर्याप्त दूरी हो।
- लेखन करते समय चाक—श्यामपट्ट की आवाज न हो।
- कक्षा शिक्षण के बाद लिखित अंश को साफ कर दिया जाय।

इस प्रकार हमने चर्चा—परिचर्चा, उदाहरणों से जाना—

- सूक्ष्म शिक्षण सिखाने की छोटी प्रक्रिया है जिसमें कक्षा के छोटे से आकार, व समय में थोड़ी सी विषयवस्तु को अच्छे तरीके से सिखाया जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण एक प्रकार से अभ्यास की प्रक्रिया है। चूँकि इसमें प्रशिक्षु थोड़े से छात्रों को **10 मिनट** तक एक छोटा सा पाठ पढ़ाता है। पाठ खत्म होने के बाद प्रशिक्षु अपने पर्यवेक्षक से विचार—विमर्श करता है। थोड़े से अभ्यास के बाद छात्राध्यापक अपने पाठ के सम्बन्ध में अपने पर्यवेक्षक के सुझाये गये आधारों पर पाठन करता है, मूल्यांकन करता है और अपने कक्षा शिक्षण को अच्छा बनाता है।

आवश्यकता एवं महत्व

सूक्ष्म शिक्षण की प्रक्रिया द्वारा छात्राध्यापकों को वास्तविक शिक्षण के लिए तैयार किया जाता है। परम्परागत शिक्षण को सरल बनाकर प्रशिक्षुओं को समझाया जाता है। इसकी आवश्यकता इस बात में निहित है कि यह सीमित समय व संसाधनों में शिक्षण कार्य का अनुभव देता है और एक—एक कौशल को क्रमशः सीखते हुए शिक्षण कला में दक्ष बनाता है। इस शिक्षण द्वारा सबसे बड़ा लाभ यह है कि प्रशिक्षु पढ़ाने के बाद स्वयं शीघ्र ही पर्यवेक्षकों की सलाह पर, अपने शिक्षण कार्य का मूल्यांकन करते हैं एवं सुधार करते हैं। सूक्ष्म शिक्षण की मूल बात यह है कि शिक्षण जैसे व्यापक संप्रत्यय को छोटे—छोटे भागों में समझाया जाय, धीरे—धीरे सम्पूर्णता की ओर बढ़ा जाय, जिससे शिक्षण कार्य प्रभावी हो और उसमें गुणवत्ता हो।

सोपान— चित्र के माध्यम से इसे अच्छी तरह समझा जा सकता है—

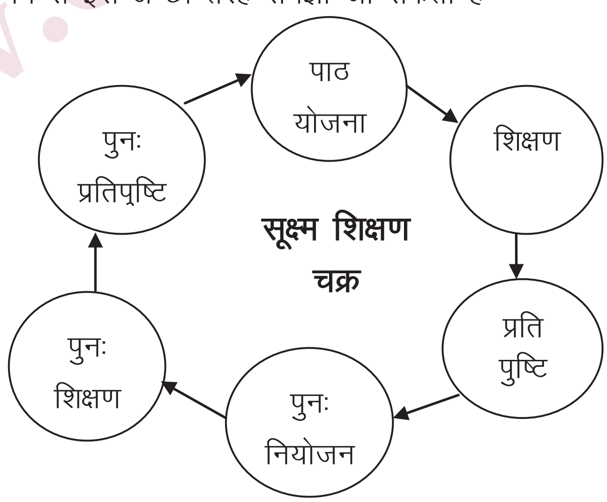

Downloaded From www.dietmathura.org

इसे **उदाहरण** से समझते हैं। मान लीजिए प्रशिक्षु को ***प्रश्नोत्तर कौशल*** को सीखना है उस पर उसने पाठ्यवस्तु का चयन किया। उस पर पाठयोजना तैयार की उसको पढ़ाया, उसमें अच्छाइयों एवं कमियों को अपने निर्देशक से जाना फिर पाठ योजना (निर्देशानुसार) तैयार की, शिक्षण किया पुनः निर्देशक से अपने द्वारा किये गये शिक्षण की कमियों/अच्छाइयों को जाना और प्रतिपुष्टि (शाबाशी, अच्छा) प्राप्त की। इस प्रकार शिक्षण के इस कौशल से परिचित हुए।

नियोजन

सबसे पहले कक्षा का निर्धारण होता है। विषयवस्तु तथा कौशल का चयन किया जाता है। कक्षा में छात्रों की संख्या निश्चित की जाती है फिर पाठ योजना तैयार की जाती है।

शिक्षण

पाठ योजना के अनुसार निर्धारित कक्षा में शिक्षण कार्य किया जाता है। पर्यवेक्षक तथा साथी छात्राध्यापक, पढ़ाने वाले छात्राध्यापक की आलोचना करते हैं। छात्राध्यापक स्वयं अपनी गल्तियाँ देखता है। पर्यवेक्षक की सलाह अनुसार सुधार करता है। यही क्रिया तब तक चलती है जब तक वांछित सुधार न हो जाय।

पश्चपोषण

शिक्षण के बाद पर्यवेक्षक तथा साथी छात्राध्यापकों से विचार–विमर्श होता है, गल्तियों का विश्लेषण किया जाता है।

पुनर्नियोजन

छात्राध्यापक अपने व्यवहार को अच्छा बनाने हेतु पर्यवेक्षक के सुझावों के आधार पर पाठ को पुनः नियोजन करता है।

पुनः शिक्षण

पुनः शिक्षण के लिए नये छात्रों को न लाकर पाठ्य सामग्री बदलकर देना चाहिए। उस नये विषय पर पाठ्योजना बनाकर शिक्षण कार्य का अभ्यास किया जाता है।

पुनः पश्चपोषण

पुनः शिक्षण के बाद पर्यवेक्षक किये गये शिक्षण पर अपनी टिप्पणी करता है जो प्रशिक्षु के लिए प्रतिपोषण का काम करता है। शिक्षण उत्तरोतर सुधरता जाता है। इस प्रकार सूक्ष्म शिक्षण का चक्र अपने आपमें शिक्षण की प्रक्रिया को समझाने में मद्द करता हैं

दरअसल सूक्ष्म शिक्षण (लघु से दीर्घ) छोटे से बड़े की तरफ या यूँ कहें कि खण्ड से पूर्ण की ओर बढ़ने की प्रक्रिया है। यह एक–एक कौशल पर गुणवत्ता का ध्यान रखकर, शिक्षण कार्य में स्वामित्व प्रदान करता है, निरन्तर अभ्यास की ओर प्रेरित करता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

मुख्य सिद्धान्त

- **अभ्यास का सिद्धान्त–** सूक्ष्म शिक्षण में छोटी–छोटी इकाई में अभ्यास कराया जाता है ताकि प्रशिक्षु कक्षागत समस्याओं से अवगत हो सके।
- **निरन्तरता का सिद्धान्त–** यह प्रक्रिया तब तक चलती है जब तक शिक्षण कौशल में परिपक्वता नहीं आ जाती है।
- **प्रबलन व मूल्यांकन का सिद्धान्त–** इस प्रक्रिया में छात्राध्यापक पाठ नियोजन, शिक्षण पर्यवेक्षक के निर्देशन में करते हैं और कमियों में सुधार करते हैं। शिक्षण का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, प्रतिपोषण प्राप्त करते हैं। इस शिक्षण विधि में प्रशिक्षुओं के लिए आत्म/स्वमूल्यांकन का अवसर ज्यादा रहता है अतएव अभिप्रेरणा मौजूद रहने से शिक्षण कार्य रुचिपूर्ण लगने लगता है।

विस्तार पूर्वक विवेचन से हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सूक्ष्म शिक्षण प्रशिक्षण की क्रमबद्ध एवं तार्किक पद्धति है। इसके अनुप्रयोग से शिक्षण कला में दक्षता पायी जा सकती है।

पुनरावृति बिन्दु

- शिक्षण कौशल को सीमित समय एवं आकार में सीखना– सूक्ष्म शिक्षण है।
- पूर्व सेवा एवं सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए यह विधि उपयोगी है।
- नियोजन– शिक्षण– प्रतिपुष्टि– पुनः नियोजन– पुनः शिक्षण– पुनः प्रतिपुष्टि–सूक्ष्म शिक्षण के मुख्य सोपान है।
- सूक्ष्म शिक्षण के मुख्य सिद्धान्त है– अभ्यास, निरन्तरता, प्रबलन एवं मूल्यांकन का सिद्धान्त।

मूल्यांकन

बहुविकल्पीय प्रश्न

दिये गये उत्तरों में से सही विकल्प को चुनिए–

- सूक्ष्म शिक्षण पद्धति के जन्मदाता हैं–

  (क) रायबर्न (ख) एलन (ग) स्किनर (घ) बोर्ग
- सूक्ष्म शिक्षण तकनीक/युक्ति है–

  (क) शिक्षण (ख) प्रशिक्षण (ग) अनुदेशन (घ) व्यवहार

अतिलघुतरीय प्रश्न

- सूक्ष्म शिक्षण के चक्र में कितने पद/सोपान होते हैं ?
- "माइक्रोटीचिंग"पुस्तक के लेखक का नाम क्या है ?

Downloaded From www.dietmathura.org

लघुउत्तरीय

- सूक्ष्म शिक्षण के सिद्धान्तों का संक्षिप्त में वर्णन करिये ?
- सूक्ष्म शिक्षण की प्रशिक्षण में क्या उपयोगिता है ?

दीर्घ उत्तरीय

- सूक्ष्म शिक्षण क्या है? यह प्रक्रिया किन सिद्धान्तों पर आधारित है? की व्याख्या कीजिए ?

अब आपके करने की बारी

आप अपने पड़ोस के बच्चों के छोटे से समूह को पढ़ाने में सूक्ष्म शिक्षण विधि का प्रयोग करें एवं अपने अनुभव लिखें कि आपने क्या सीखा ?

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण कौशल

- अर्थ एवं परिभाषा
- कौशलों के प्रकार
- पाठ प्रस्तावना कौशल
- उद्देश्य कथन कौशल
- प्रश्न कौशल
- व्याख्यान कौशल
- सोदाहरण स्पष्टीकरण या दृष्टान्त कौशल
- छात्र सहभागिता कौशल
- उद्दीपन परिवर्तन कौशल
- पुनर्बलन कौशल
- श्यामपट्ट लेखन कौशल
- पुनरावृत्ति कौशल
- शिक्षण में एक से अधिक कौशलों एवं गतिविधियों का समावेश

किसी भी कार्य को अच्छी तरह से करने के लिए कुछ विशेष प्रयत्न की जरूरत होती है और शिक्षण तो एक जटिल प्रक्रिया है। इसको समझने के लिए निरन्तर अभ्यास का होना आवश्यक है और जब अभ्यास क्रम पूरा हो जाता है तब उस अवस्था को कहा जाता है कि उस कार्य के प्रति हमने कुशलता प्राप्त कर ली। शिक्षण में जब हम कुशलता की बात करते हैं तो उसे शिक्षण कौशल का नाम दिया जाता है।

शिक्षण कौशल **अर्थात्** शिक्षण कार्य में कुशलता। इसका आशय शिक्षक द्वारा शिक्षण देते समय अपनाये जाने वाले हाव–भाव, भंगिमा या विविध कार्य–कलापों के व्यवहारिक तौर–तरीकों के समूह से लगाया जाता है। शिक्षण कौशल से शिक्षण बिन्दुओं के क्रम का ज्ञान होता है। शिक्षण के तीन पहलू का ज्ञान (भावात्मक, ज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक) कराने में शिक्षण कौशलों की आवश्यकता स्वयं में ही स्पष्ट है।

परिभाषा–एन0एल0गेज– शिक्षण कौशल वह विशिष्ट अनुदेशन प्रक्रिया है, जिसे शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण में प्रयोग कर सकता है। यह शिक्षणक्रम की विविध क्रियाओं से सम्बन्धित होता है, जिन्हें शिक्षक अपनी कक्षा अन्तर्क्रिया में निरन्तर प्रयोग में लाता है।''

प्रो0बी0के0पासी0– ''यह सम्बद्ध शिक्षण व्यवहारों का वह स्वरूप होता है, जो कक्षा की विशिष्ट अन्तः प्रक्रिया परिस्थितियों को उत्पन्न करता है, जो शैक्षिक उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक होते हैं और छात्रों को सीखने में सुगमता प्रदान करते हैं।''

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

वास्तव में शिक्षण कौशल, शिक्षण को अधिगम की ओर अग्रसर करने वाली युक्ति है। नीरस शिक्षण को सक्रियता तथा प्रभावशीलता प्रदान करने का आधार शिक्षण दक्षताओं को ही माना जाता है। इसलिए शिक्षण कौशलों में पारंगतता प्राप्त करना प्रशिक्षण का मुख्य ध्येय है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से हमने जाना–

- शिक्षण कौशल शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होते हैं।
- शिक्षण कौशल कक्षा अन्तःक्रिया की परिस्थिति उत्पन्न करते हैं।
- शिक्षण कार्य को आधार प्रदान करते हैं।
- सीखने में सहायक होते हैं।
- शिक्षण को प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं।

वस्तुतः सफल व प्रभावी शिक्षण हेतु विभिन्न कौशलों का प्रयोग प्रायः शिक्षकों द्वारा किया जाता है जिनका क्रमशः वर्णन इस प्रकार है–

पाठ प्रस्तावना कौशल

किसी भी शिक्षण की शुरूआत का प्रथम चरण प्रस्तावना होती है। प्रस्तावना से आशय भूमिका या विषयवस्तु की सामान्य जानकारी। प्रस्तावना कौशल के प्रयोग में सर्वप्रथम शिक्षक पढ़ाये जाने वाले पाठ के बारे में छात्रों की जानकारी लेने के लिए प्रश्न करता है तद्नुसार उनके पूर्व ज्ञान को नयी जानकारी से जोड़ते हुए शिक्षण करता है। इस प्रकार प्रस्तावना कौशल में ज्ञात से अज्ञात सूत्र का अनुसरण किया जाता है। उदाहरण– **भारतदेश** पाठ पढ़ाना है– प्रस्तावना कौशल का प्रयोग इस प्रकार होगा–

इन्हें भी जानें–

- एलन तथा रायन ने14 शिक्षण कौशलों को प्रमुख माना है।

- विश्व के कुछ देशों के नाम बताएं ?
- यह किस देश का मानचित्र है ? (भारतवर्ष का मानचित्र दिखाकर)
- हम किस देश में रहते हैं ?

(अन्तिम प्रश्न का उत्तर भारत आने पर छात्रों के समक्ष प्रकरण को स्पष्ट करेंगे।)

प्रस्तावना के घटक

❖ पूर्वज्ञान

❖ उद्देश्य और सहायक सामग्री

❖ प्रश्नों का मुख्य पाठ से सम्बन्ध

❖ समुचित अवधि

❖ छात्रों की रुचि व प्रेरणा

Downloaded From www.dietmathura.org

जो शिक्षक जितना अधिक आकर्षक पाठ प्रस्तावना कौशल का अनुप्रयोग करने में सक्षम होता है उतना ही अधिक कक्षा में एकाग्रता व अनुशासन बना रहता है।

इन्हें भी जानें–

पाठ प्रस्तावना के विविध तरीके–

- ♦ पूर्व ज्ञान पर प्रश्न पूछकर
- ♦ कहानी या कविता सुनाकर
- ♦ उदाहरण या घटित घटना बताकर
- ♦ प्रदर्शन या प्रयोग द्वारा चार्ट, चित्र मॉडल के प्रयोग द्वारा

प्रस्तावना कौशल निःसन्देह किसी भी विषयवस्तु को अपनी पूर्णता तक ले जाने का द्वार है।

ध्यातव्य बिन्दु

- ➢ प्रस्तावना पूर्व ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए।
- ➢ प्रस्तावना प्रासंगिक होनी चाहिए।
- ➢ समस्त कक्षा की सहभागिता जरूरी है।
- ➢ प्रस्तावना कौशल का जीवन से सम्बन्ध होना चाहिए।

स्वयं करें व जानें

- आपको गणतन्त्र दिवस पाठ पढ़ाना है इसमें प्रस्तावना कौशल का प्रयोग कैसे करेंगे ?

उद्देश्य कथन कौशल

शिक्षण एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है, अतएव प्रस्तावना कौशल के बाद शिक्षण का अगला चरण उद्देश्य कथन होता है। प्रस्तावना प्रश्न के बाद छात्रों में नवीन ज्ञान के प्रति जिज्ञासा जाग्रत होती है उसको शिक्षक द्वारा अवश्य सन्तुष्ट करनी चाहिए। उद्देश्य कथन इसी दिशा में एक सोपान है।

जैसे प्रस्तावना प्रश्न से स्पष्ट हुआ कि शिक्षक भारत देश पढ़ाना चाहता है। इसका **उद्देश्य कथन इस प्रकार होगा** आज हम लोग **"भारत देश"** नामक पाठ का अध्ययन करेंगे।

इन्हें भी जानें–

उद्देश्य कथन कौशल की उपयोगिता

- ➢ पाठ शिक्षण का लक्ष्य निर्देशित होता है।
- ➢ शिक्षार्थी की पाठ में रुचि जाग्रत होती है।
- ➢ शिक्षण–अधिगम के प्रति क्रियाशीलता बढ़ती है।
- ➢ शिक्षण में स्पष्टता आती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

प्रश्न कौशल

शिक्षण कार्य प्रश्नों की श्रृंखला में अग्रसर होता है। पाठ का उत्तरोतर विकास शिक्षण में प्रश्नों के द्वारा ही होता हैं अतएव प्रश्न पूछने का कौशल शिक्षक में होना जरूरी है।

थिंग्र महोदय ने कहा भी है– शिक्षण का अर्थ कुशलता से प्रश्न करना है, यह शिक्षण का उत्तम साधन है।

इन्हें भी जानें

(प्रश्न पूछने के उद्‌देश्य)

- प्रश्न पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ते हैं।
- रुचि, जिज्ञासा को जाग्रत करते हैं।
- अधिगम समस्याओं का ज्ञान होता है।
- क्रियाशीलता में वृद्धि होती हैं।
- पाठ शिक्षण को क्रमबद्ध बनाते हैं।

*प्रश्न कौशल जिज्ञासा के साथ ज्ञान को स्वयं अन्वेषित करने की ओर प्रेरित करने वाला होना चाहिए। जिज्ञासा ज्यों–ज्यों गहरी होती जाती है ज्ञान भी बढ़ता जाता है। – **बेकन***

प्रश्न कौशल के घटक

- ➢ प्रश्न करने की प्रक्रिया
- ➢ प्रश्नों की बनावट
- ➢ प्रश्नों की पुनरावृत्ति
- ➢ प्रश्न के परिणाम

प्रश्न कौशल से शिक्षण का विकास तभी सम्भव है जब निम्नलिखित बातें ध्यान में रखी जायें–

- प्रश्न सरल व स्पष्ट हो।
- प्रश्न प्रासंगिक हो।
- प्रश्न स्तरानुकूल हो।
- प्रश्नों में विविधता हो।
- भाषा बोध गम्य हो।
- प्रश्न क्रमबद्ध श्रृंखला में हों।

प्रश्न कैसे हों

सरल | स्पष्ट | प्रासंगिक | स्तरानुकूल | विविधता | बोधगम्य

इन्हें भी जानें

प्रश्नों के प्रकार–

- प्रस्तावना प्रश्न
- विकासात्मक प्रश्न
- समस्यात्मक प्रश्न
- बोध प्रश्न
- पुनरावृत्ति प्रश्न

Downloaded From www.dietmathura.org

चर्चा करें

भारतदेश पाठ के उद्देश्य कथन के बाद किन–किन प्रश्नों के प्रयोग से पाठ का शिक्षण करेंगे।

व्याख्या कौशल

पाठ शिक्षण में पूछे गये प्रश्नों का समाधान या स्पष्टीकरण में सबसे सहायक कौशल व्याख्यान कौशल है। इस कौशल के प्रयोग में शिक्षक विविध प्रकरणों, तथ्यों को समझाने के लिए सरल से सरल भाव, विचार, उदाहरण के द्वारा क्रमिक व तार्किक रूप से विषयवस्तु का प्रकटन करता है। इस कौशल की सफलता इस बात में निहित है कि शिक्षक पाठ का सम्पूर्ण व गहन ज्ञान रखता हो।

घटक

- कथनों में तारतम्यता।
- भाषा में धाराप्रवाह।
- प्रारम्भिक कथनों का प्रयोग।
- स्पष्ट निष्कर्ष वाले कथनों का उपयोग।
- छात्र सहभागिता।
- बीच–बीच में प्रश्नोतर विधि का प्रयोग।

गतिविधियाँ

भाषा शिक्षण में व्याख्या कौशल की विधियाँ–

- स्पष्टीकरण द्वारा।
- परिभाषा द्वारा।
- वस्तु प्रदर्शन द्वारा।
- अभिनय द्वारा ।
- और अन्य विधियों के बारे में प्रशिक्षु स्वयं सोचें और लिखें।

दृष्टान्त कौशल

व्याख्या कौशल की एक प्रमुख विधि है उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण, इस दक्षता को ही दृष्टान्त कौशल कहा जाता है। इस कौशल के प्रयोग में आगमन विधि का संयोजन किया जाता है।

लेण्डन महोदय का कथन है– ''उदाहरणों में न केवल स्पष्ट करने की क्षमता होती है, बल्कि यह ज्ञान के स्थायित्व प्रदान करने में भी मददगार है।''

Downloaded From www.dietmathura.org

इन्हें भी जानें

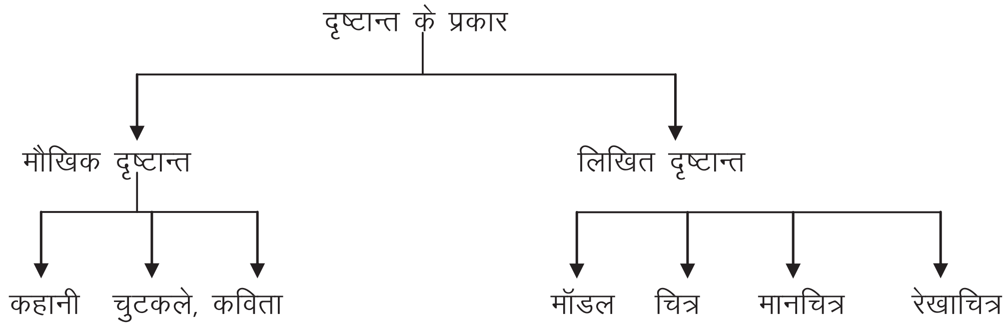

दृष्टान्त कौशल के द्वारा शिक्षण बोधगम्य व सरल बनाने के लिए जरूरी है–

- दृष्टान्त सरल व स्पष्ट हो।
- पाठ्यवस्तु से सम्बद्ध हो।
- रुचिपूर्ण हो।
- छात्रों के स्तरानुकूल हो।
- पाठ विकास में सहायक हो।

स्वयं जानें व करें

- *गुण सन्धि को पढ़ाने के लिए उदाहरण या दृष्टान्त का स्वरूप कैसा होगा?*

छात्र सहभागिता कौशल

उदाहरण कौशल छात्र सक्रियता एवं सहभागिता को प्रेरित करता है जिससे शिक्षण द्विमुखी प्रक्रिया के रूप में अग्रसर होता है। बालकेन्द्रित शिक्षण में छात्र सहभागिता जरूरी है। इस कौशल का मुख्य लक्ष्य छात्रों के सहयोग, प्रतिक्रिया से पाठ का क्रमशः विकास करना है। जितना छात्र भाग लेंगे शिक्षण उतना ही रुचिकर व अनुशासित होगा।

गतिविधियाँ

पाठ पढ़ाने के बाद उसे स्थायी करना हो तो छात्र सहभागिता कौशल का प्रयोग उसका मंचन, करके किया जा सकता है। कछुआ और खरगोश के पाठ का स्थायी ज्ञान कराने के लिए छात्र के समूह में से कुछ से कछुआ और कुछ से खरगोश का अभिनय कराएं।

इन्हें भी जानें

छात्र सहभागिता कौशल का प्रयोग कैसे–

- प्रश्न पूछकर
- चित्र बनवाकर
- रिक्त स्थान भरवाकर

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

- वाक्य अधूरे छोड़कर
- खेल, गीत, कविता द्वारा
- फ्लैश कार्ड के प्रयोग द्वारा

उद्दीपन परिवर्तन कौशल

छात्र सहभागिता बढ़ाने के लिए शिक्षक कई तौर–तरीकों का प्रयोग करता है जैसे– हाव–भाव, शरीर संचालन, स्वर में उतार–चढ़ाव मौन, भावाभिव्यक्ति आदि।

कहानी पढ़ाते समय आप कौन–कौन से उद्दीपन का प्रयोग करेंगे, कुछ क्रियाकलाप स्वयं जोड़ें।

उद्दीपन कौशल का महत्त्व– एल0सी0सिंह के मत में उद्दीपन परिवर्तन कौशल विद्यार्थियों की प्रगति और रुचि को अधिकतम बढ़ाने, उनका ध्यान बनाये रखने और निश्चित करने के लिए वातावरण में उद्दीपन परिवर्तन द्वारा छात्रों के ध्यान केन्द्रीकरण और आकर्षित करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

उद्दीपन परिवर्तन के घटक

- यथोचित शरीर संचालन
- हाव–भाव भंगिमा का प्रयोग
- भावों का केन्द्रीकरण
- स्वरों में उतार–चढ़ाव
- शिक्षक–शिक्षार्थी वार्तालाप में परिवर्तन
- मौन

पुनर्बलन कौशल

उद्दीपन कौशल की गुणवत्ता पुनर्बलन में निहित है। पुनर्बलन से तात्पर्य ऐसे उद्दीपनों से है, जिनके प्रस्तुतीकरण या हटाने से क्रिया–अनुक्रिया के होने की सम्भावना अधिक हो जाती है। **स्किनर के** मत में शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की प्रशंसा करना, उत्तर को स्वीकार करना या सिर हिलाने मात्र से ही बालक पुनर्बलित होता है। वास्तव में पुनर्बलन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रतिक्रिया के फौरन बाद किसी उद्दीपन को प्रस्तुत करने पर प्राणी की प्रतिक्रिया शक्ति बढ़ जाती है।''

पुनर्बलन प्रकार

धनात्मक (पुरस्कार प्रशंसा शाबाशी आदि) | ऋणात्मक (डाँटना, फटकारना आदि)

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

पुनर्बलन का सकारात्मक प्रयोग छात्रों के वांछित व्यवहारों को प्रबल बनाने के लिए किया जाता है और ऋणात्मक पुनर्बलन द्वारा अवांछित व्यवहारों की पुनरावृति को रोकने का प्रयास किया जाता है।

पुनर्बलन के मुख्य घटक

- ➢ प्रोत्साहन देने वाले कथनों का प्रयोग
- ➢ छात्र प्रतिक्रिया का आदर
- ➢ हाव–भाव व अन्य शाब्दिक संकेतों का प्रयोग
- ➢ नकारात्मक शाब्दिक संकेतों का प्रयोग
- ➢ नकारात्मक अशाब्दिक संकेतों का प्रयोग
- ➢ छात्रों के सही उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखना

गतिविधियाँ

इतिहास शिक्षण में रानी लक्ष्मीबाई पाठ का शिक्षण करना है आपने कुछ प्रश्न पूछे–

शिक्षक – लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम क्या था ?

प्रशिक्षु – मनु

शिक्षक प्रतिक्रिया– बिल्कुल ठीक, बहुत अच्छा, शाबाश।

इसी प्रकार अन्य प्रश्नों पर दिये गये गलत–सही उत्तरों के लिए पुनर्बलन का प्रयोग कैसे करेंगे– स्वयं सोचें– ....

....।

इन्हें भी जानें

- पुनर्बलन का प्रत्यय स्किनर के क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त का केन्द्र बिन्दु है।
- पुनर्बलन एक प्रकार का पारितोषिक है। यह एक उद्दीपक है, जो विशेष अनुक्रियाओं की सम्भावनाओं को परिवर्तित करने की क्षमता रखता है– हल

श्यामपट्ट लेखन कौशल

पुनर्बलन कौशल को छात्रों तक संप्रेषित करने का एक माध्यम श्यामपट्ट भी है। अतीत काल से इसका प्रयोग शिक्षण में किया जाता रहा है इसलिए इसे अध्यापक का **सच्चा मित्र** कहा जाता है। प्रत्येक शिक्षक के लिए यह अनिवार्य है कि उसे श्यामपट्ट प्रयोग में दक्षता हो। श्यामपट्ट प्रयोग से शिक्षण श्रवणेन्द्रिय और नेत्रेन्द्रिय दोनों में सक्रियता रहती है, जिससे विषयवस्तु की बोधगम्यता बढ़ती जाती है। इसे शिक्षण का विकासात्मक कौशल भी कह सकते हैं।

गतिविधियाँ

शिक्षण कार्य में श्यामपट्ट लेखन सहायक हो, इसके लिए आप कौन–कौन सी बातें ध्यान में रखेंगे–

Downloaded From www.dietmathura.org

- श्यामपट्ट के किस तरफ खड़े होंगे? इसका ज्ञान होना चाहिए।
- श्यामपट्ट पर अक्षर, शब्द स्पष्ट व सुडौल होने चाहिए।
- महत्वपूर्ण बिन्दुओं का ही लेखन होना चाहिए।
- कुछ क्रियाकलाप प्रशिक्षु भी जोड़ें– .... ।

श्यामपट्ट का महत्व निम्नवत है–

- प्रारम्भिक सूचना देने में सहायक।
- विषय की व्याख्या व विश्लेषण में सहायक।
- चित्र–मानचित्र रेखाचित्र बनाकर समझ बढ़ाने में सहायक।
- समूह शिक्षण में उपयोगी।
- छात्रों में लेखन योग्यता का विकास।
- शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

पुनरावृति कौशल

शिक्षण कार्य कितना सफल रहा इसका मापन अभ्यास प्रश्नों द्वारा किया जाता है, इसे ही पुनरावृति कौशल कहा जाता है। इस कौशल के प्रयोग में पढ़ाये गये पाठों, प्रसंगों, तथ्यों को दोहरवाया जाता है जिससे अधिगम स्थायी होने के साथ–साथ त्रुटि रहित भी होता है। पुनरावृति की मात्रा जितनी ज्यादा होगी शिक्षण प्रक्रिया में उतनी ही गत्यात्मकता बढ़ेगी और छात्रगत समस्याओं का समाधान होता चलेगा।

गतिविधियाँ

कठिन पाठ का शिक्षण स्थायी करने के लिये आप क्या–क्या करेंगे।

- प्रश्न पूछेगें।
- कक्षा कार्य एवं गृह कार्य द्वारा।
- शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग द्वारा।
- प्रशिक्षु कुछ और तरीके भी जोड़ें .... ।

पुनरावृति कौशल को स्थायीकरण कौशल भी कहते हैं।

शिक्षण में एक से अधिक कौशलों एवं गतिविधियों का समावेश

प्रशिक्षण एकांगी कार्य न होकर बहुआयामी स्वरूप वाली प्रक्रिया है जिसका लक्ष्य प्रशिक्षुओं में उन सभी कौशलों की दक्षता विकसित करके इस योग्य बनाना कि वह कक्षा शिक्षण को सर्वोतम रूप में प्रस्तुत

Downloaded From www.dietmathura.org

कर सकें। अतएव आवश्यक है कि शिक्षण कौशलों का क्रमशः ज्ञान देकर उसकी समग्रता/सम्पूर्णता को समझाया जाय। कोई भी विषय ऐसा नहीं है जिसे एक कौशल प्रस्तावना या उदाहरण या प्रश्न कौशल से ही पढ़ाया जाय, ऐसा शिक्षण सम्भव हो भी तो वह अधिगम के रूप में स्थायी न होकर बोझिल सा लगेगा।

मूल्यांकन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

दिये हुए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए–

प्रस्तावना कौशल की विशेषताएँ हैं–

- यह पाठ के विकास में सहायक है।
- यह पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित होती है।
- यह पाठ की भूमिका होती है।
- उपर्युक्त सभी

शिक्षक को प्रश्नों का निर्माण करना चाहिए–

- स्वयं द्वारा ।
- दूसरों से।
- छात्र सहभागिता से।
- इनमें से कोई नहीं।

अतिलघु उतरीय

- व्याख्यान कौशल किस स्तर के शिक्षण के लिए ज्यादा उपयोगी है ?
- पुनर्बलन कौशल के कितने प्रकार माने जाते हैं ?

लघु उत्तरीय

- उद्दीपन परिवर्तन कौशल क्या है ? अपने शब्दों में समझाइये ?

दीर्घ उत्तरीय

- शिक्षण कौशलों के एकीकरण की क्यों आवश्यकता है ? उदाहरण सहित समझाइये ?

अब करने की बारी

- भाषा शिक्षण में श्यामपट्ट कौशल, छात्र सहभागिता, उदाहरण तथा पुनर्बलन कौशल के प्रयोग द्वारा एक पाठ योजना तैयार करिये। कुछ नये तरीकों को भी खोजें ?

Downloaded From www.dietmathura.org

अपेक्षित अधिगम स्तर

(Expected Learning Level)

अपेक्षित अधिगम स्तरों को उन अधिगम दक्षताओं के अर्थ में निरूपित किया जा सकता हैं, जिनमें किसी विशेष कक्षा अथवा शिक्षा स्तर के अन्त में प्रत्येक छात्र द्वारा पूर्ण दक्षता की प्राप्ति अपेक्षित है।

प्रमुख शिक्षण बिन्दु

- अपेक्षित अधिगम स्तर की संकल्पना तथा अर्थ
- अपेक्षित अधिगम स्तर के उद्देश्य
- अपेक्षित अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति में अधिगम अनुभवों का संयोजन
- अधिगम अनुभवों के प्रकार ज्ञानात्मक, भावात्मक क्रियात्मक
- अपेक्षित अधिगम प्रतिफल का अधिगम के पुनर्बलन में महत्व

शिक्षण का वास्तविक उद्देश्य छात्र छात्राओं के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर है कि छात्र ने कितना सीखा। अधिगम विहीन शिक्षण व्यर्थ है। सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया के मुख्य तीन पक्ष होते हैं–

- शैक्षिक उद्देश्य
- अधिगम अनुभव
- मूल्यांकन

उपर्युक्त तीनों घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। शिक्षा की सफलता हेतु शैक्षिक उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु छात्र–छात्राओं को विद्यालय में विविध प्रकार के अधिगम अनुभव प्रदान किये जाते हैं। मूल्यांकन के द्वारा यह जानने का प्रयास किया जाता है कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो सकी है।

अपेक्षित अधिगम स्वर की संकल्पना (Concept of Expected Learning level)

6–14 वय वर्ग के बच्चों को निःशुल्क व अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू करके उसे मौलिक अधिकार की श्रेणी में लाया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में किये गये अनेकों प्रयासों से यद्यपि नामांकन व ठहराव में तो पर्याप्त वृद्धि हुई परन्तु विद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता की दृष्टि से छात्रों का अपेक्षित उपलब्धि स्तर अत्यन्त चिन्ताजनक है। अतः इसके लिए यह आवश्यक समझा गया कि प्रारम्भिक शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर सीखने के कुछ ऐसे स्तर/दक्षताएं निर्धारित किये जाएं जिन्हें प्रत्येक बच्चा उस स्तर तक अवश्य जाने, सीखे व समझे।

इसे भी जानें–

सभी छात्रों को कुशलता/पारंगतता के स्तर तक ले जाना ही अपेक्षित अधिगम स्तर का लक्ष्य है। यह वह स्तर है जिसे हर बच्चे को प्राप्त कर लेना आवश्यक है। इससे शिक्षा के स्तरों में विभिन्नता के स्थान पर एकरूपता स्थापित हो, साथ ही साथ एक ओर गुणवत्ता बढ़े और दूसरी ओर स्तर की समानता बनी रहे।

इसी परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में इस बात पर बल दिया गया कि कोई बच्चा चाहे गाँव में पढ़े या शहर में, विद्यालय में हो अथवा अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र में, सरकारी विद्यालय में शिक्षा पाये या गैर सरकारी में, सभी के लिए जितना जानना और समझना जरूरी है इसका भी निर्धारण कर लिया जाये।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

अर्थात् स्कूली शिक्षा के प्रत्येक स्तर के लिए सीखने के न्यूनतम स्तर निर्धारित किये जायें जिससे सभी छात्र निर्धारित दक्षताओं को प्राप्त कर सकें। इसे न्यूनतम अधिगम स्तर (Minimum Level of Learning MLL) कहा गया है। संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1992 में इसे अनिवार्य अधिगम स्तर (Essential level of Learning ELL) कहा गया है।

न्यूनतम अधिगम स्तर के निर्धारण हेतु 1990 में गठित दवे समिति द्वारा प्राथमिक स्तर पर (कक्षा 1 से 5 तक) भाषा, गणित व पर्यावरण अध्ययन हेतु अधिगम के न्यूनतम अपेक्षित अधिगम स्तरों का निर्धारण किया गया जिन्हें उस कक्षा के अन्त तक प्रत्येक छात्र प्राप्त कर लें।

चर्चा के बिन्दु

- विद्यालयी शिक्षा के स्तर (कक्षा–1 से 5 तक) पर अपेक्षित अधिगम स्तर का निर्धारण क्यों किया गया है?
- इन स्तरों तक छात्रों को पहुंचाने में अध्यापक की क्या भूमिका है ?

अपेक्षित अधिगम स्तर का अर्थ (Meaning of Expected Learning Level)

अपेक्षित अधिगम स्तर की रचना तीन शब्दों से मिलकर हुई है–

अपेक्षित (Expected) निर्धारित न्यूनतम दक्षताएं, जिनकी प्राप्ति की आशा/अपेक्षा की जाये। इसका सम्बन्ध दक्षताओं के उस अंश से है जो निर्धारित कक्षा के शिक्षार्थियों को निश्चित समय में अर्जित कर लेना है। दक्षता का अर्थ किसी कार्य विशेष को कुशलतापूर्वक पूर्ण कर लेने की क्षमता से है।

अधिगम (Learning) का अर्थ है– सीखना अर्थात् ज्ञान, समझ, मूल्य, कौशल, व व्यवहार में होने वाला परिवर्तन।

स्तर (Level) उपलब्धि या सम्प्राप्ति का स्तर।

उपर्युक्त शाब्दिक विश्लेषण के आधार पर अपेक्षित अधिगम स्तर का अर्थ है कि प्रत्येक कक्षा व विषय के लिए निर्धारित निश्चित दक्षताओं को प्रत्येक छात्र निश्चित समय में अवश्य प्राप्त कर लें। सीखने की अधिकतम सीमा निश्चित नहीं की जा सकती परन्तु अपेक्षित स्तर तक छात्रों को पहुंचाने हेतु बच्चों को उनकी क्षमता/रुचि/गति के अनुसार सीखने के उपयुक्त अवसर व वातावरण अवश्य सुलभ कराया जाना चाहिए।

ध्यान रखें–
वांछित दक्षताओं को निपुणता के स्तर तक प्राप्त करना ही गुणवत्ता है। अपेक्षित अधिगम स्तर गुणवत्ता को समता से जोड़ने का प्रयास है। शिक्षा में गुणवत्ता और समानता आने से छात्रों के उपलब्धि स्तरों की असमानता स्वतः ही समाप्त हो जाती है।

Downloaded From www.dietmathura.org

अपेक्षित अधिगम स्तर के उद्देश्य (Aims of Expected Learning Level)

प्रारम्भिक शिक्षा व्यक्तित्व विकास का माध्यम व राष्ट्रीय विकास की धुरी है। अतः इस स्तर पर गुणवत्ता परक शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु अपेक्षित अधिगम स्तर की संकल्पना की गई जिसके माध्यम से लिंग, जाति व धर्म के भेदभाव के बिना सभी वर्गों की पहुंच शिक्षा तक सम्भव हो सके। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित हैं–

- सभी छात्रों को बिना किसी भेदभाव के गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करना तथा उन्हें निर्धारित कुशलताओं में पारंगत बनाना।
- छात्रों में समान शैक्षिक गुणवत्ता की प्राप्ति सुनिश्चित करना।
- विविध छात्रों के उपलब्धि स्तर की विषमताओं को समाप्त करना।
- अध्यापक के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करके उसके कार्य को दिशा प्रदान करना अर्थात् उसका कार्य छात्रों को निर्धारित योग्यताओं के स्तर तक पहुंचाना है न कि सिर्फ पाठ्यक्रम को पूर्ण करना।
- अध्यापकों को शिक्षण– अधिगम की उपयुक्त विधि के चयन में सहायता करना।
- विद्यार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन करने की उपयुक्त पद्धति चुनने में अध्यापक की सहायता करना।
- छात्रों की कठिनाइयों के निराकरण में शिक्षक का मार्गदर्शन करना।

स्वयं विचार करें–

- कक्षा के सभी बच्चे एक ही विषय एक ही शिक्षक से पढ़ते हैं परन्तु दक्षता प्राप्ति की दृष्टि से उनके उपलब्धि स्तर में अन्तर क्यों होता है? इसे कैसे कम या समाप्त किया जा सकता है ? (प्रशिक्षु स्वयं विचार करके कुछ बिन्दु जोड़ें)।.. .... ।

अपेक्षित अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति में अधिगम अनुभवों का संयोजन (Connection of Learning Experiences in Achieving of Expected Learning Level)

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक छात्रों को सीखने के विविध अवसर उपलब्ध कराकर उनके अनुभवों को समृद्ध करता है क्योंकि अनुभव के समृद्ध होने पर ही सीखने की सफलता निर्भर है। सीखने की अवधि में तथा उसके पश्चात् छात्रों द्वारा उस विषय से सम्बन्धित प्राप्त अनुभव ही अधिगम अनुभव कहलाते हैं। सीखने का एक समान पर्यावरण/परिस्थिति/परिवेश उपलब्ध कराने पर भी एक ही कक्षा के दो छात्रों के अधिगम अनुभव भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। कक्षा–कक्ष में शिक्षक निम्न क्रियाकलापों के माध्यम से छात्रों को सीखने के उपयुक्त अवसर प्रदान कर सकता है–

> *इसे भी जानें*
>
> सीखने की प्रक्रिया में छात्रों द्वारा निर्धारित दक्षताओं की सम्प्राप्ति ही अपेक्षित अधिगम प्रतिफल (Expected Learning out come) कहलाता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

- पाठ पढ़वाना
- विषय सम्बन्धी लिखित कार्य करवाना
- विचार–विमर्श करना
- निरीक्षण करना
- वर्गीकरण करना
- तुलना करना
- निष्कर्ष निकालना
- वाद–विवाद / तर्क करना
- मौखिक प्रश्न पूछना
- गतिविधि कराना
- अभ्यास कार्य कराना
- खेल खिलाना (शैक्षिक व मनोरंजनात्मक)
- समूह कार्य करवाना

रुचिपूर्ण तरीके से आयोजित उपरोक्त क्रियाकलापों के माध्यम से छात्रों में अधिगम प्रतिफल (Learning out come) के रूप में ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग, कुशलताओं, रुचियों, मनोवृत्तियों तथा आदर्शों का विकास होता है। अपेक्षित अधिगम स्तर के अन्तर्गत कक्षावार / विषयवार निर्धारित दक्षताओं में बच्चों को कुशल बनाने के लिए शिक्षक को ऐसे उपयोगी तौर–तरीके अपनाना चाहिए जो उनकी रुचि, आवश्यकता, पूर्वज्ञान व परिवेश से जुड़े हों तथा जिनसे उनमें अपेक्षित दक्षता की सम्प्राप्ति भली प्रकार हो सके।

प्रशिक्षु स्वयं करें

कक्षा–कक्ष में कराये जाने वाले कुछ और क्रियाकलाप प्रशिक्षु स्वयं खोजें, सूची बनाएं तथा स्वयं पढ़ाने में उनका प्रयोग करें।

अधिगम अनुभवों के प्रकार (Types of Learning Experiences)

अधिगम अनुभव मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं–

1. ज्ञानात्मक अधिगम अनुभव–

ज्ञानात्मक अनुभव के अन्तर्गत उन बातों / तथ्यों का सीखना शामिल है जिनका सम्बन्ध ज्ञान व बोध के साथ–साथ मानसिक क्रियाओं से अधिक होता है जैसे– जानना, समझना, चिन्तन, तर्क, कल्पना, विश्लेषण, पूर्वानुमान लगाना। ज्ञानात्मक अनुभवों का मूल्यांकन उन विभिन्न विषयों में पढ़ना, लिखना, अभ्यास कार्य / गृहकार्य की जाँच व संशोधन, इकाई परीक्षण, मासिक / अर्द्धवार्षिक / वार्षिक परीक्षाओं के आयोजन द्वारा किया जाता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

2. भावात्मक अधिगम अनुभव

छात्रों के संवेगात्मक विकास की दृष्टि से भावात्मक अधिगम अनुभवों का उपयोग किया जाता है। इन अनुभवों का सम्बन्ध छात्रों के उन सभी व्यवहारों, आदतों, रुचियों, रुझानों, मूल्यों व आदर्शों से है जो उनके चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व के विकास में विशेष भूमिका निभाते हैं। इनके द्वारा छात्रों में नियमितता, समयबद्धता, स्वच्छता, श्रमशीलता, सहभागिता, उत्तरदायित्व, सच्चाई तथा देश प्रेम की भावना का विकास होता है।

3. क्रियात्मक अधिगम अनुभव

क्रियात्मक अधिगम अनुभव छात्रों के शारीरिक व मांसपेशीय विकास में सहायक होते हैं। यह छात्रों की कल्पनात्मक/रचनात्मक/सृजनात्मक प्रवृत्ति से जुड़े होते हैं। इसमें किसी कार्य के अच्छे तरीके से करने का ढंग, किसी वस्तु के निर्माण का कौशल तथा शारीरिक कार्य (खेलकूद, पी0टी0, योगासन व अन्य क्रियायें) शामिल होते हैं।

उपरोक्त अधिगम अनुभव छात्रों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सदैव प्राप्त होते रहते हैं और इन्हीं के आधार पर सीखने की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। शिक्षकों को अधिगम अनुभवों के संयोजन में विषयवस्तु, छात्रों के मानसिक स्तर, उनकी रुचियों, क्षमताओं व सकारात्मक परिणामों की प्राप्ति पर विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि छात्रों में अपेक्षित व उपयोगी कुशलताओं का विकास किया जा सके।

स्वयं करने के लिए– प्रशिक्षु अपनी कक्षा में छात्रों को ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक अनुभव कैसे प्रदान करेंगे ? तीनों अनुभवों के तीन–तीन उदाहरण दें।

ज्ञानात्मक अनुभव	**भावात्मक अनुभव**	**क्रियात्मक अनुभव**
1.	1.	1. ....
2.	2.	2. ....
3.	3.	3. ....

अपेक्षित अधिगम प्रतिफल का अधिगम के पुनर्बलन में महत्व (Importance in Reinforcement of Learning of Expected Learning outcome)

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली, रुचिकर, सुगम, आनन्ददायी व अन्तः क्रियात्मक बनाने में पुनर्बलन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुनर्बलन का शाब्दिक अर्थ है– पुनः बल देना अर्थात, छात्रों के सफल प्रयासों को प्रेरित व उत्साहित करना तथा अनुचित व त्रुटिपूर्ण कार्यों/ व्यवहारों की सम्भावना को कम या हतोत्साहित करना।

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

इन्हें भी जानें– पुनर्बलन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं–

1. सकारात्मक पुनर्बलन– सकारात्मक पुनर्बलन (प्रशंसा, पुरस्कार, सकारात्मक भाव प्रदर्शन तथा छात्रों के सुझाव/उत्तर का समर्थन) छात्रों के कार्य/व्यवहार को दृढ़ बनाते हैं।

2. नकारात्मक पुनर्बलन– नकारात्मक पुनर्बलन (निन्दा, दण्ड, नाराज होना, फटकारना, नकारात्मक भाव प्रदर्शन) छात्रों के अनुचित/अनापेक्षित कार्य/व्यवहार की सम्भावना को कम करते हैं।

निर्धारित विषयवस्तु को समुचित शिक्षण क्रियाकलापों के माध्यम से शिक्षक छात्रों तक पहुंचाता है। उनमें दक्षताओं के विकास में विद्यालय, घर, परिवार व आसपास का परिवेश समान रूप से महत्वपूर्ण होता है। विद्यालय में बच्चों को अपेक्षित स्तर तक पहुंचाने में शिक्षक की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। शिक्षण के समय छात्रों को पुनर्बलन प्रदान करने का कार्य मुख्यतः शिक्षक का है। अतः शिक्षक को चाहिए कि छात्रों के प्रत्येक सही एवं प्रशंसनीय कार्यों की सराहना सभी के समक्ष करें। इसके लिए उसे अधिक से अधिक सकारात्मक पुनर्बलन (शाब्दिक व अशाब्दिक) का प्रयोग करना चाहिए। इससे छात्र कक्षा में सक्रिय रहते हैं और उनका उत्साहवर्धन होता है साथ ही उसे नकारात्मक पुनर्बलन के प्रयोग से बचना भी चाहिए।

कक्षा व विषय विशेष के लिए निर्धारित दक्षताओं में छात्रों की उपलब्धि का ज्ञान मूल्यांकन के द्वारा होता है। मूल्यांकन सतत, व्यापक तथा व्यावहारिक (शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से जुड़ा) होना चाहिए ताकि छात्रों के उपलब्धि स्तर, उनके पिछड़ेपन व उसके कारणों की जानकारी शिक्षक को हो सके और वह उनके सुधार के लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था कर सके। इसके साथ–साथ छात्रों में शैक्षिक सम्प्राप्ति के स्तरों में समानता व गुणवत्ता ला सके।

शिक्षकों के ऐसे उत्कृष्ट प्रयासों से विद्यालय की प्रत्येक कक्षा और विषय में प्रत्येक छात्र अपेक्षित अधिगम स्तर को प्राप्त कर सकता है।

मूल्यांकन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अपेक्षित अधिगम स्तर की संकल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति में की गई थी–

(i) 1992 (ii) 1977

(iii) 1984 (iv) 1986

2. अपेक्षित अधिगम स्तरों का निर्धारण किस समिति द्वारा किया गया–

(i) डॉ0 आर0एच0दवे समिति (ii) कोठारी समिति

(iii) सम्पूर्णानन्द समिति (iv) प्रो0 यशपाल समिति

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

3. प्राथमिक स्तर पर दवे समिति ने किन विषयों में अपेक्षित अधिगम स्तर का निर्धारण किया था।

(i) भाषा अध्ययन (ii) गणित अध्ययन

(iii) पर्यावरण अध्ययन (iv) उपर्युक्त सभी

4. ज्ञानात्मक अधिगम अनुभवों का सम्बन्ध है–

(i) जानना (ii) समझना (iii) विश्लेषण करना (iv) उपर्युक्त सभी

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. अपेक्षित अधिगम स्तर से आपका क्या अभिप्राय है ?

6. अपेक्षित अधिगम स्तर का निर्धारण क्यों किया गया ?

7. अधिगम प्रतिफल किसे कहते हैं ?

8. पुनर्बलन का क्या अर्थ है ? शिक्षण में पुनर्बलन क्यों उपयोगी है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9. अधिगम अनुभव किसे कहते हैं ? इनके प्रमुख प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

10. 'छात्रों को विविध प्रकार के अधिगम अनुभव प्रदान करके शिक्षक उन्हें अपेक्षित अधिगम स्तर की प्राप्ति करा सकता है।' स्पष्ट कीजिए।

स्वयं करने की बारी– (प्रशिक्षु स्वयं करें)

कक्षा 1 में भाषा व गणित में अपेक्षित दक्षताएं कौन–कौन सी हैं ?

भाषा	**गणित**
....	....
....	....
....	....

कक्षा 1 से 5 तक भाषा व गणित में निर्धारित अपेक्षित अधिगम दक्षताओं पर आधारित चार्ट बनाएं व प्रशिक्षण कक्ष में उस पर चर्चा करें। (समूहवार)

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण अधिगम सामग्री

- अर्थ
- आवश्यकता व महत्व
- प्रकार
- उत्तम शिक्षण अधिगम सामग्री की विशेषताएं

सरलता या सुविधा मानवीय प्रवृत्ति का चुम्बकीय बिन्दु है। मनुष्य हमेशा से ही शरीर और मन पर कम बोझ/भार को महसूस करना चाहता है। बात जब सीखने की हो, आप सभी ने यह अवश्य अनुभव किया होगा कि जिन बातों, प्रसंगों को सरल करके पढ़ाया गया चाहे वह किन्हीं साधनों के प्रयोग द्वारा ऐसा किया गया हो, उसे हम सभी ने जल्दी सीखा और सदैव के लिए उसे जीवन में उतार भी लिया। आपने कभी सोचा ये विभिन्न साधन या उपकरण क्या हैं ?

वास्तव में ऐसे उपकरण, साधन या सामग्री जो शिक्षण को सरल, सहज रूप से बोधगम्य बनाते हैं, उन्हें शिक्षाविद् शिक्षण–अधिगम सामग्री का नाम देते हैं। शिक्षण अधिगम सामग्री वह सामग्री है जो शिक्षण अधिगम को गति देती हैं।

एडगर ब्रूस वैसले के शब्दों में– ''श्रव्य–दृश्य साधन अनुभव प्रदान करते हैं। उनके प्रयोग से वस्तुओं तथा शब्दों का सम्बन्ध सरलता से जुड़ जाता है। बालकों के समय की बचत होती है, जहाँ बालकों का मनोरंजन होता है वहाँ बालकों की कल्पना शक्ति तथा निरीक्षण शक्ति का भी विकास होता है।''

स्पष्ट है शिक्षण सह सामग्री का प्रयोग हम जितना ज्यादा करेंगे उतना ही शिक्षण प्रभावी और अधिगम रुचिकर होगा।

गतिविधि–1

आप स्वयं करें

गिनती का ज्ञान सरलता से किन सामग्रियों के प्रयोग से करवा सकते हैं?

- मिट्टी की गोलियाँ बनवाकर।
- छात्रों को एक सीखी रेखा में खड़ा करके ।
- पेड़ से नीचे गिरी पत्तियों का प्रयोग करके (इसी तरह अन्य कुछ क्रियाकलाप जोड़ें।)

आवश्यकता व महत्व

यह बिल्कुल सत्य है जब सीखने में हाथ–पैर, आँख, कान, नाक, मन आदि इन्द्रियों का प्रयोग करते हैं तो हम जल्दी उस ज्ञान को ग्रहण कर लेते हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

गतिविधि–2

भाषा शिक्षण में अक्षर ज्ञान देना हो तो सभी छात्रों के नाम की सूची श्यामपट्ट पर लिख दें और उसका प्रयोग अक्षर, शब्द ज्ञान देने में करें। इस प्रकार आप किन–किन बातों से परिचित हुए?

शिक्षण अधिगम सामग्री से शिक्षण में केवल सरलता ही नहीं आती वरन नवीनता का भी समावेश होता है और नवीनता स्वयं में आकर्षक होती है। इसके प्रयोग से शिक्षण में एकाग्रता अपने आप आती है और कक्षागत अनुशासन की समस्या अपने आप हल हो जाती है।

मैकोन तथा रॉबर्टस के शब्दों में शिक्षक शिक्षण अधिगम सामग्री के द्वारा छात्रों की एक से अधिक इन्द्रियों को प्रभावित करके पाठ्यवस्तु को सरल, रुचिकर तथा प्रभावशाली बनाते हैं।

गतिविधि–2

दिशा ज्ञान देने के लिए आप कक्षा के छात्रों का प्रयोग कैसे करेंगे?

अवलोकन के बिन्दु (महत्व)

- शिक्षण प्रक्रिया में क्रियाशीलता बनी रहती है। आत्म विश्वास में वृद्धि होती है।
- सीखने में अपेक्षाकृत कम समय लगता है।
- प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।
- बच्चों में एक दूसरे का सहयोग करने की भावना बढ़ती है।
- कक्षा नियोजन की प्रक्रिया सरल हो जाती है।
- बच्चों को एक–दूसरे से विचार–विमर्श का अवसर मिलता है।
- कक्षा में नियमित उपस्थिति बढ़ जाती है।
- शिक्षक शिक्षण के अन्य पहलुओं पर ध्यान दे पाता है।
- नया प्रवेश पाये छात्र कक्षा में जल्दी घुल–मिल जाते हैं।
- सीखने की उपलब्धि ज्यादा होती है।

उपर्युक्त महत्व विवेचन से स्पष्ट है शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग अनिवार्य है। अतएव जिन शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग हो वे उत्तम किस्म की होनी चाहिए।

आप चर्चा करें कि शिक्षण अधिगम सामग्री उत्तम कहलायेगी जो–

- आसानी से उपलब्ध हो या निर्मित की जा सकती हो।
- शिक्षण अधिगम के बीच पुल का काम करती हो।
- विषयवस्तु को अच्छी तरह समझाती हो।
- कक्षा के सभी स्तर के छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करने वाली हो।
- कठिन, अमूर्त विषयों का सजीव रेखांकन करने में सहायक हो।
- शिक्षाविदों ने खेल, गीत, नाटक को सर्वोतम सहायक सामग्री के रूप में निरुपित किया है।
- प्रशिक्षु इसी तरह अन्य बिन्दुओं को शामिल करें ।

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रकार

शिक्षण में प्रभावकारिता बढ़ सके, छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में वृद्धि हो एवं प्राप्त ज्ञान स्थायित्व को प्राप्त करे तथा शिक्षण के स्तर को ऊँचा करने के लिए स्कूल में शिक्षण अधिगम सामग्री का होना अत्यन्त आवश्यक है। वस्तुतः शिक्षण अधिगम सामग्री दृश्य–श्रव्य साधन ही है। इनमें कुछ तो स्वं निर्मित, कुछ प्रकृति प्रदत्त तथा कुछ बाजार से खरीदे हुए हो सकते हैं। वैसे अधिकांश सामग्री का निर्माण किया जा सकता है।

चर्चा करें

- कक्षा में जब आप गीत/कविता को उचित हाव–भाव, लय, उतार–चढ़ाव के साथ वाचन करते हैं तो इन क्रियाओं को करने हेतु आप किसका सहारा लेते हैं?

स्वरूप के आधार पर शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रकार निम्न हैं–

- दृश्य सामग्री
- श्रव्य सामग्री
- दृश्य श्रव्य सामग्री

दृश्य सामग्री

दृश्य उपकरणों में केवल आँखों का उपयोग होता है। इनमें नमूने, मानचित्र, कार्टून तथा ग्रॉफ श्यामपट्ट, चार्ट, मॉडल, फ्लैशकार्ड, फ्लैनेल बोर्ड आदि महत्वपूर्ण है।

श्रव्य सामग्री

श्रव्य उपकरण वे उपकरण हैं, जिनमें छात्र अपनी श्रवणेन्द्रियों का उपयोग करते हैं। इन उपकरणों में रेडियो, ग्रामोफोन तथा टेपरिकॉर्डर, ऑडियो, सी0डी0/कैसेट प्लेयर आदि प्रमुख हैं।

श्रव्य–दृश्य सामग्री

श्रव्य–दृश्य उपकरण वे उपकरण कहलाते हैं जिनमें चक्षु और कर्ण दोनों इन्द्रियों का प्रयोग होता है। इस प्रकार के उपकरणों में चलचित्र और टेलीविजन मुख्य रूप में आते हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

स्वरूप के आधार पर शिक्षण अधिगम सामग्री का वर्गीकरण

दृश्य सामग्री (Visual)	श्रवण सामग्री (Audio)	श्रव्य दृश्य सामग्री (Audio-Visual)
प्रतिरूप (Model)	ग्रामोफोन आकाशवाणी	दूरदर्शन चलचित्र
चित्र तथा पोस्टर	टेपरिकार्डर	क्लोज सर्किट टेलीविजन
श्यामपट्ट	लिंग्वाफोन	वीडियो कैसेट्स
माया–दीप	भाषा प्रयोगशाला	प्रयोगशालाएँ
पत्र पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्र	स्टीरियो रिकार्डर	कार्यशालाएँ
चित्रदर्शक (Epidias cope)	टेलीफोन वार्ता	प्रदर्शन
वास्तविक पदार्थ	मानव स्वर आदि	रोल–प्ले
रेखाचित्र तथा खाके		ड्रामा, खेल
मानचित्र		
सन्दर्भ पुस्तकें, एटलस तथा ग्लोब		टेली कान्फ्रेंस
स्लाइड्स, फिल्मस्ट्रिप		केवल टी0वी कम्प्यूटर
पाठ्यपुस्तकें, पूरक पुस्तकें		सैटेलाइट टी0वी0 वर्किंग
बुलैटिन बोर्ड, चुम्बक बोर्ड		माइक्रो / मिनी कम्प्यूटर
भ्रमण तथा यात्राएं		इण्टरनेट
संग्रहालय		लैपटॉप आदि

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

ध्यातव्य बिन्दु

- दृश्य सामग्री के अन्तर्गत पेड़–पौधों का एकत्रीकरण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि कहीं कोई विषैला जीव काट न ले।
- मॉडल में कनेक्शन (बिजली का) भली–भाँति लगाना चाहिए।
- रबर की चप्पलें या जूते पहनकर ही विद्युत सम्बन्धी कार्य करना चाहिए।
- विद्युत की जगह सैल (Cells) का प्रयोग करना चाहिए।
- अधिक महंगी सामग्री का उपयोग यथा सम्भव कम किया जाए।
- सामग्री के उपयोग में अधिक समय नष्ट नहीं करना चाहिए।
- उपयोग के बाद अधिगम सहायक सामग्री को तुरन्त हटा लेना चाहिए।
- शिक्षण अधिगम सामग्री उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक हो।
- शिक्षण अधिगम सामग्री बच्चों व कक्षानुरूप हो।
- श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रदर्शन कक्षा में उचित स्थान पर, उचित विधि से किया जाना चाहिए।

चर्चा बिन्दु

- क्या आप जानते हैं कि शिक्षण अधिगम सामग्री की उपलब्धता हमें किस प्रकार से होती हैं ?

उपलब्धता के आधार पर शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रकार

उपलब्धता के आधार पर शिक्षण अधिगम सामग्री का वर्गीकरण

अध्यापकों एवं बालकों द्वारा निर्मित सामग्री	बाजार से क्रय सामग्री	विभाग द्वारा प्रदत्त सामग्री	प्रकृति से प्राप्त वस्तुएं/सामग्री

अध्यापकों एवं बालकों द्वारा निर्मित सामग्री

दृश्य सामग्री के अन्तर्गत कुछ शिक्षण अधिगम सामग्री इस प्रकार की है जो कि शिक्षकों एवं छात्रों के द्वारा तैयार की जा सकती है तथा जिनका प्रयोग शिक्षण के समय किया जा सकता है। छोटे बालकों को मिट्टी के खिलौनों से एवं मिट्टी में खेलने में बहुत आनन्द आता है। यदि अध्यापकों के द्वारा बालकों से कहा जाय कि आप अपने घरों से 10 मिट्टी की गोली बनाकर लायेंगे। बच्चे जब गोली बनाकर लाएं तो अध्यापक गोलियों को अपने पास एकत्रित करके उनका प्रयोग गणित विषय में गिनती पढ़ाने के लिए कर सकता है। इसी प्रकार, शिक्षक द्वारा भी अनेक प्रकार की शिक्षण सामग्री का निर्माण किया जा सकता है, जैसे–गन्ने के चौकोर टुकड़ों पर हिन्दी वर्णमाला के सम्पूर्ण अक्षरों को पृथक् रूप से लिखना। इस सामग्री का प्रयोग हिन्दी में किया जा सकता है। अध्यापक द्वारा अंग्रेजी, शिक्षण, गणित शिक्षण एवं विज्ञान शिक्षण

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

आदि विषयों में चार्ट, पोस्टर, रेखाचित्र एवं वृत्त आदि के चित्र निर्मित करके तथा उनका सही प्रयोग करके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सारगर्भित एवं रोचक बनाया जा सकता है।

स्वयं बनाने से छात्रों की सभी इन्द्रियों व माँसपेशियों का समुचित उपयोग होने से उनमें कौशल विकसित होगा तथा सीखी हुई विषय वस्तु का ज्ञान स्थायी हो जायेगा।

बाजार से क्रय सामग्री

शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण में समय की बचत के लिए बाजार से भी सामग्री क्रय करके उसका प्रयोग किया जा सकता है।

चर्चा बिन्दु

- आप बाजार से शिक्षण अधिगम सामग्री को क्रय करते समय किन–किन तथ्यों का ध्यान रखेंगे?......
....
....।

ध्यातव्य बिन्दु

- उसी शिक्षण अधिगम सामग्री का क्रय बाजार से किया जाय जिसके निर्माण में अधिक समय लगता है।
- बाजार से क्रय सामग्री की गुणवत्ता का परीक्षण करके ही उसका प्रयोग किया जाय।
- सामग्री उद्देश्य पूर्ण हो।
- सामग्री का आकार कक्षानुरूप होना चाहिए।
- धन तथा बजट का ध्यान रखना चाहिए।

विभाग द्वारा प्रदत्त सामग्री

शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता बढ़ाने हेतु तथा शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने हेतु उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा भी शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करायी जाती है। इसमें ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड सामग्री, गणित किट, विज्ञान किट, पाठ्यपुस्तकें, प्रशिक्षण साहित्य, अनुपूरक अध्ययन सामग्री तथा शिक्षक संदर्शिकाएं आदि प्रमुख होती हैं। इनके प्रयोग द्वारा शिक्षण कार्य सरल हो जाता है।

डायट स्तर पर प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को गणित किट, विज्ञान किट व अन्य सहायक सामग्रियों के प्रयोग के बारे में बताएंगे।

Downloaded From www.dietmathura.org

प्रकृति से प्राप्त वस्तुएं या सामग्री

प्रकृति से प्राप्त अनेक वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिसका प्रयोग सरलता से शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में किया जा सकता है। इन वस्तुओं को प्राप्त करने में किसी प्रकार का व्यय नहीं होता तथा वास्तविक रूप में वस्तुओं का ज्ञान होता है। वर्तमान समय में भारतीय विद्यालयों में प्रकृति से प्राप्त वस्तुओं को शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में प्रयोग करने पर अधिक बल दिया जाता है क्योंकि प्रत्येक कार्य के लिए धन की उपलब्धता सम्भव नहीं होती। अतः प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का प्रयोग ही सर्वोत्तम माना जाता है।

चर्चा बिन्दु

- आप भावी शिक्षक के रूप में अपनी कक्षा में बच्चों को पढ़ाते समय प्रकृति प्रदत्त किन–किन वस्तुओं का प्रयोग कर सकते हैं ?

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

उत्तम शिक्षण अधिगम सामग्री की विशेषताएं

(Characteristics of Best Teaching Learning Material

एक अच्छे एवं व्यवस्थित शिक्षण का उद्देश्य अच्छा अधिगम होता है। अधिगम सदैव उद्देश्यपूर्ण तथा लक्ष्योन्मुखी होना चाहिए। इन सभी तत्वों की प्राप्ति के लिए अच्छी व उत्तम अधिगम सामग्री की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अनिवार्य हो गया है।

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से चर्चा करें

- आप अपने कक्षा शिक्षण को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए बिना लागत के शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण किस प्रकार करेंगे ?
- आपके अनुसार उत्तम शिक्षण अधिगम सामग्री में किस प्रकार की विशेषताएं होनी चाहिए ?

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से किए गए चर्चा बिन्दुओं के द्वारा उनकी सहभागिता से उत्तम शिक्षण अधिगम सामग्री की विशेषताओं को स्पष्ट करेंगे। वर्तमान समय में शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु बहुउद्देश्य शिक्षण अधिगम सामग्रियों के विकास पर बल दिया जा रहा है। इसके प्रयोग के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता उस अवस्था में प्राप्त हो सकती है, जब यह सामग्री निम्नलिखित विशेषताओं से युक्त हो।

बिना लागत के प्राप्त सामग्री (Obtained Material with out cost)

बिना लागत के प्राप्त सामग्रियों का प्रयोग व्यापक रूप से किया जा सकता है। इन सामग्रियों के लिए हमको धन की आवश्यकता नहीं होती। इस प्रकार की सामग्री के अन्तर्गत प्रकृति प्रदत्त वस्तुएँ एवं प्रयोग रहित सामग्री आती है। उदाहरणार्थ वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को आकर्षक, ढंग से लिखने के लिए पुरानी किताबों, कापियों, रजिस्टरों के फटे–टूटे गत्तों को निकाल कर, उनको चौकोर अथवा इच्छानुसार आकारों में काटकर उस पर अक्षरों को रोचक ढंग से लिखने के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इस प्रकार की सामग्री बिना लागत के ही सरलता से प्राप्त एवं निर्मित की जा सकती है।

अल्प लागत की सामग्री (Material of Low cost)

अल्प लागत की शिक्षण अधिगम सामग्री की विशेषता यह है कि इसको निर्मित करने में बहुत ही कम लागत लगती है। इस प्रकार की अधिगम सामग्री सर्वोत्तम मानी जाती है क्योंकि सरकार आर्थिक रूप से पूर्णतः सक्षम नहीं है कि प्रत्येक विद्यालय को धन उपलब्ध करा सके। इस प्रकार की शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग व्यापक स्तर पर किया जा सकता है।

Downloaded From www.dietmathura.org

बहुउद्‌देश्यीय सामग्री (Multipurpose Material)

इस प्रकार की अधिगम सामग्री के द्वारा शिक्षण के अनेकों उद्‌देश्यों की प्राप्ति की जाती है, जैसे मानचित्र या किसी चार्ट को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं तो हमको उसके आकार, रंग एवं कलात्मकता पर पूर्ण विचार करना चाहिए क्योंकि इस शिक्षण अधिगम सामग्री का उद्‌देश्य छात्रों को अनिवार्य रूप से सूचना प्रदान करना तथा आकार, स्थान आदि का ज्ञान कराना होगा। शिक्षण सामग्री छात्रों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से क्रियाशील रखने तथा छात्रों में विभिन्न दक्षताओं का विकास करने वाली हो।

एक से अधिक कक्षाओं में प्रयोग (Use in More Classes)

शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उसका प्रयोग एक से अधिक कक्षाओं में किया जा सके क्योंकि प्रत्येक कक्षा के लिए पृथक रूप से शिक्षण अधिगम सामग्री निर्मित करने पर धन एवं समय का अपव्यय होगा। उदाहरणार्थ– विज्ञान किट व गणित किट का प्रयोग कक्षा 1 से लेकर 5 तक की कक्षाओं में किया जा सकता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि विभिन्न कक्षाओं की पाठ्‌यवस्तु में सहसम्बन्ध पाया जाता है।

एक से अधिक विषयों में प्रयोग (Use in More Subject)

शिक्षण सामग्री की विशेषता यह भी है कि यदि उसका निर्माण करते समय सभी कक्षाओं का ध्यान रखा जाए तो उसका प्रयोग एक से अधिक विषयों के लिए किया जा सकता है। जैसे– वनस्पति विज्ञान की शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग हमारा परिवेश एवं पर्यावरणीय अध्ययन में सरलता से किया जा सकता है। हिन्दी से सम्बन्धित शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग संस्कृत शिक्षण में भी किया जा सकता है।

एक से अधिक पाठों में प्रयोग (Use in More Lessons)

श्रेष्ठ या उत्तम अधिगम सामग्री उसको माना जाता है जो कि एक से अधिक पाठों में प्रयुक्त की जा सके। जैसे भूगोल शिक्षण में मानचित्र का प्रयोग इस प्रकार करना चाहिए, जिससे कि वह प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र गेहूँ, उत्पादक क्षेत्र, चावल उत्पादक क्षेत्र एवं नदियों को भली–भांति प्रदर्शित कर सके। इसके लिए हमें विभिन्न रंग एवं संकेतों का प्रयोग एक ही मानचित्र में करके भिन्न–भिन्न वस्तुओं को प्रदर्शित करना चाहिए। इससे धन एवं समय की बचत होती है।

विषयवार पाठ के अनुरूप (According to Subject wise lesson)

शिक्षण अधिगम सामग्री पाठ के अनुरूप तथा विषय से सम्बन्धित होनी चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक को सम्पूर्ण पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् यह निर्धारित करना चाहिए कि इस पाठ में प्रमुख रूप से किस प्रकार की शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग आवश्यक है, जिसमें बच्चों का ज्ञानवर्धन हो सके।

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

शैक्षिक उपयोगिता (Educational Utility)

शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण उसकी शैक्षिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर करना चाहिए अर्थात् इन सामग्रियों का उद्देश्य विषयवस्तु को स्पष्ट रूप से छात्रों के लिए बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करना है। हमको यह मानकर शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण एवं प्रयोग नहीं करना है कि वह अनिवार्य है वरन् उसकी आवश्यकता एवं उपयोगिता को ध्यान में रखकर उसका प्रयोग एवं निर्माण करना है।

बालकों की रुचि, आयु एवं मानसिक स्तर के अनुरूप (According to Interest, age and Mental level of Children)

वर्तमान में शिक्षा का स्वरूप बालकेन्द्रित है अर्थात् शिक्षण अधिगम सामग्री की उत्तमता के लिए आवश्यक है कि यह छात्रों की रुचि, आयु एवं मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए। जो छात्रों के लिए रोचक एवं आकर्षक हो और विषयवस्तु को समझने में वे उस सामग्री की आवश्यकता का अनुभव करें। उदाहरणार्थ– बालकों को गिनती एवं पहाड़े सिखाने के लिए कंकड़ों एवं चार्टों का प्रयोग करना। यदि छात्र 8 से 14 वर्ष के मध्य हैं तो उनके लिए शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में प्रतिरूप, चार्ट, प्रोजेक्टर, टेपरिकॉर्डर एवं दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया जा सकता है।

कक्षा व्यवस्था के अनुसार सामग्री का आकार प्रकार (Format of material According to class system)

उत्तम शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण हेतु यह आवश्यक है कि उसके तैयार करने से पूर्व जिस कक्षा में उसे प्रयुक्त किया जाना है उसके आकार एवं छात्र संख्या पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। यदि छात्र संख्या कम तथा कक्षा–कक्ष का आकार छोटा है तो शिक्षण अधिगम सामग्री का आकार छोटा भी हो सकता है। परन्तु अधिक छात्र संख्या एवं बड़े कक्षा–कक्ष के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री का आकार भी बड़ा होना चाहिए।

सरलता से उपयोग में लायी जाने योग्य (Easy is Use)

उत्तम शिक्षण अधिगम सामग्री की विशेषता है कि वह उपयोग में सरल एवं बोधगम्य हो। इसे निर्माण करने में अधिक समय व धन का अपव्यय नहीं करना चाहिए तथा न ही किसी विशेष व्यवस्था का आयोजन करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उत्तम शिक्षण अधिगम सामग्री उसे कहते हैं, जो कि प्रयोग एवं निर्माण में सरल होती है, जैसे चार्ट, पोस्टर, मॉडल एवं प्रकृति प्रदत्त वस्तुएँ आदि।

हानि रहित शिक्षण सामग्री (Harmless to children)

शिक्षण अधिगम सामग्री की एक विशेषता यह भी है कि उसके प्रयोग से छात्रों को किसी प्रकार की कोई हानि नहीं पहुँचनी चाहिए। प्रायः छात्र वीडियो रिकॉर्डिंग एवं चलचित्र में सम्बन्धित कार्यक्रमों को शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में अधिक पसन्द करते हैं। इनका अधिकाधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए। आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए क्योंकि ये छात्रों की आँखों पर हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

इसी प्रकार टेपरिकॉर्डर एवं रेडियो के माध्यम से प्रस्तुत कार्यक्रमों में ध्वनि की तीव्रता सामान्य होनी चाहिए जिससे छात्रों की श्रवणेन्द्रियों को हानि न पहुँचे।

प्रो एस0के0 दुबे के अनुसार– ''शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग में सरलता, भिन्नता, शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति एवं अधिगम स्तर में तीव्रता तथा स्थायित्व आदि ऐसे गुण हैं जो कि उसके सर्वोत्तम स्वरूप को विकसित करते हैं।''

शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण, प्रयोग तथा रख रखाव में सावधानियाँ (Precaution in Construction, Maintenance of Teaching Learning Material)

शिक्षण अधिगम सामग्री पर ही उस की सफलता एवं असफलता निर्भर करती है। अतः निर्माण से पूर्व उन समस्त तथ्यों पर विचार करना आवश्यक है जो कि इसको सर्वोत्तम, उद्देश्यपूर्ण एवं श्रेष्ठ सामग्री के रूप में विकसित करते हैं। इसलिए शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण से पूर्व निम्नलिखित सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए–

- उद्देश्य की पूर्ति
- कक्षा–कक्ष के अनुसार आकार
- छात्रों के स्तरानुकूल
- प्रमुख बिन्दुओं का प्रदर्शन
- रोचक एवं आकर्षक
- प्रभावशाली
- अल्प लागत
- सृजनात्मक पूर्ण
- रंगों का उचित प्रयोग
- विषयवस्तु की वास्तविकता
- विषय की स्पष्टता
- प्राकृतिक वस्तुओं का अधिकाधिक प्रयोग
- अनुपयोगी पदार्थों का प्रयोग
- सुन्दर, सुडौल व स्पष्ट
- बहुउद्दशीय स्वरूप का निर्धारण

Downloaded From www.dietmathura.org

चर्चा करें

- शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण करते समय उसके रख रखाव से सम्बन्धित किन–किन बातों का आप ध्यान रखेंगे ?

चर्चा उपरान्त प्रशिक्षक जो बिन्दु निकल कर आए हैं उनके द्वारा शिक्षण–अधिगम सामग्री के निर्माण में सावधानियाँ व रख रखाव के लिए जो तथ्य महत्वपूर्ण हैं प्रशिक्षुओं की सहभागिता से उन्हें स्पष्ट करेंगे।

- अच्छी वस्तुओं का प्रयोग
- रखने का उचित स्थान
- कीड़ों से बचाव
- समय–समय पर सफाई
- शिक्षण सामग्री रखने का पृथक कक्ष
- मरम्मत
- आच्छादन
- प्रयोग में सावधानी

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शिक्षण अधिगम सामग्री के रख रखाव में पूर्णतः सावधानी बरतनी चाहिए। शिक्षक को इन्हें सुरक्षित रखने का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

श्रीमती आर0 के0शर्मा– के अनुसार– ''शिक्षण अधिगम सामग्री के दीर्घकालीन प्रयोग के लिए उसके संरक्षण सम्बन्धी तथ्यों का ज्ञान प्रत्येक शिक्षक के लिए परमावश्यक है क्योंकि उचित संरक्षण एवं रख रखाव के अभाव में यह सामग्री पूर्ण सत्र के लिए भी उचित अवस्था में उपलब्ध नहीं रह सकती। ''

Downloaded From **www.dietmathura.org**

मूल्यांकन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1.'शिक्षण अधिगम सामग्री का मुख्य अर्थ है–

- कक्षा में विषयवस्तु का प्रदर्शन करना।
- शिक्षण अधिगम को गति प्रदान करना।
- शिक्षक का सहयोग करना ।
- उपरोक्त सभी

2. शिक्षण में सहायक 'श्रव्य उपकरण' हैं–

- श्यामपट्ट
- मॉडल
- रेडियो
- फ्लैनेल बोर्ड

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

2. प्रकृति से प्राप्त शिक्षण सहायक चार उपकरणों के नाम लिखिए।
3. शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाने के लिए शिक्षक को किसके प्रयोग में दक्ष होना चाहिए ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'हानि रहित शिक्षण सामग्री' से क्या आशय है ?
2. शिक्षण में 'शिक्षण अधिगम सामग्री' का क्या महत्व है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. शिक्षण अधिगम सामग्री से आप क्या समझते हैं ? इसके निर्माण में क्या सावधानियां रखना चाहिए ? स्पष्ट कीजिए।
2. अध्यापकों तथा बालकों द्वारा निर्मित स्थानीय उपलब्ध कम लागत की सामग्री से आप क्या समझते हैं ? इसका प्रभावी उपयोग आप कक्षाध्यापन में कैसे करेंगे ?

Downloaded From www.dietmathura.org

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः–

प्रशिक्षु शिक्षकों को शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- कक्षा के बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में विभक्त कर गाँव/मुहल्ले के स्कूल जाने वाले तथा न जाने वाले 5 वर्ष के ऊपर के बच्चों की सूचना का एकत्रीकरण एवं अनुपात ज्ञात कर सूची का निर्माण करें।
- प्रशिक्षु द्वारा माह में समस्त छात्रों को अलग–अलग समूहों में विभक्त कर किसी एक विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करना ।
- प्रशिुक्ष एवं बच्चों द्वारा निर्मित सामग्री के आधार पर एक विज्ञान किट तैयार करना।
- शिक्षण अधिगम सामग्री यथा–श्रृव्य, दृश्य एवं श्रृव्य–दृश्य (तीनों प्रकार की सामग्री) सामग्री पर आधारित चार्ट/मॉडल का निर्माण करना।
- विभिन्न शिक्षण प्रविधियों पर एक–एक मॉडल/ प्रस्तुतीकरण तैयार करना।
- विभिन्न शिक्षण प्रविधियों का तुलनात्मक अध्ययन (किसी एक विषयवस्तु को देकर करना)।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

सन्दर्भ सूची

सफल शिक्षण की सामान्य विधियां	–	डॉ0 हरिवंश तरूण
शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकी	–	एल0बी0बाजपेयी
शिक्षण कला	–	डॉ0 शालिग्राम त्रिपाठी
शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्धन	–	डॉ0 राजीव मालवीय
भारतीय शिक्षा का विकास	–	डॉ0 मालती सारस्वत
संचार माध्यमों का प्रभाव	–	ओम प्रकाश सिंह
भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ	–	डॉ0 प्रतिभा उपाध्याय
भारत में विद्यालयी शिक्षा	–	पी0एल0मल्होत्रा
भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं	–	पी0डी0 पाठक
आधारशिला (खण्ड–2)	–	प्रारम्भिक शिक्षा विभाग राज्य शिक्षा संस्थान उ0प्र0 इलाहाबाद।
शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त	–	आर0के0 शर्मा
अभिनव (अंक–51)	–	राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद।
सम्बल (हस्तपुस्तिका)	–	राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद।
शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त	–	के0के0 भाटिया
प्रशिक्षण संदर्शिका (उप/सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी)	–	राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org